यूनियन सृजन

वर्ष - 8, अंक -3, मुंबई, जुलाई-सितंबर, 2023

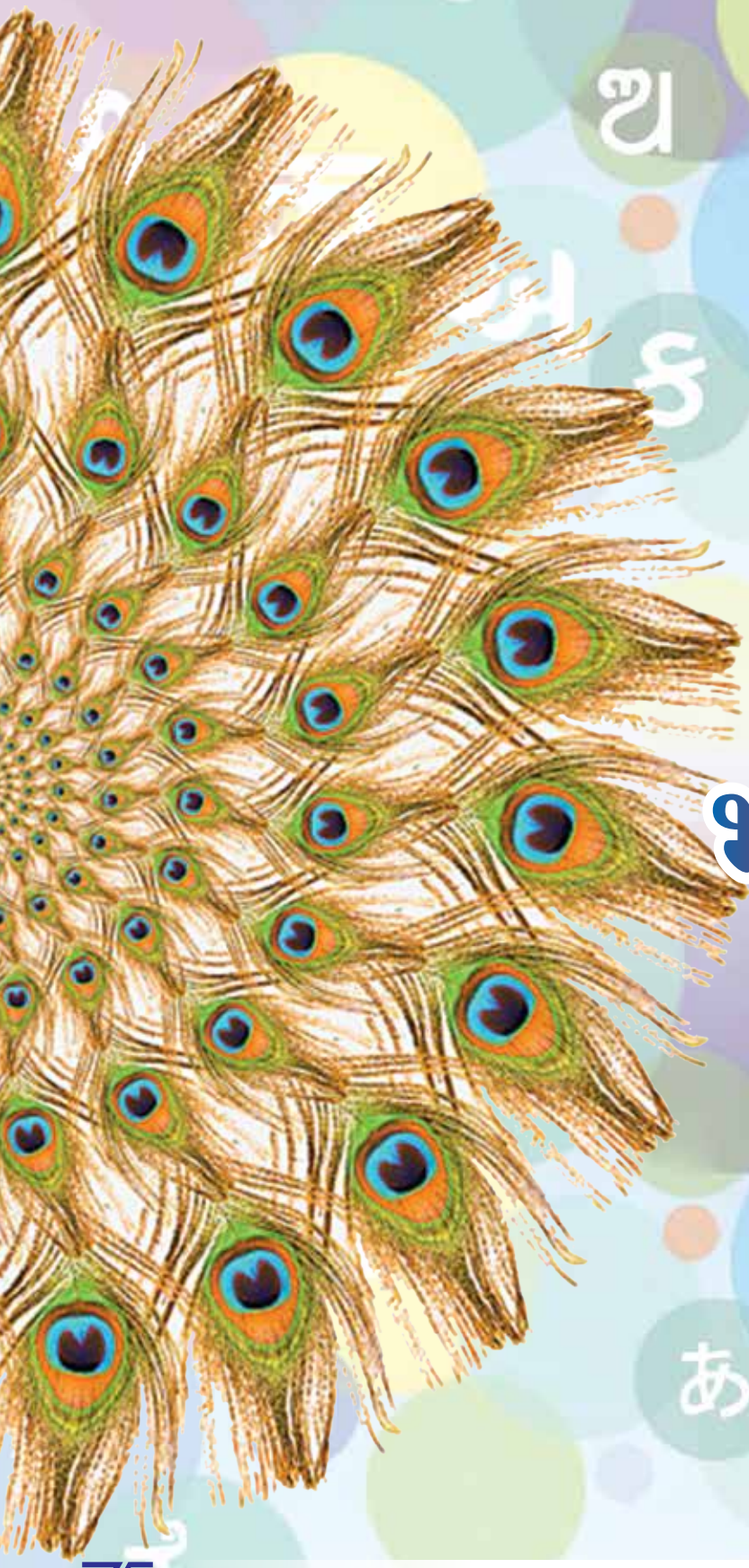

भाषा विशेषांक

आज़ादी का अमृत महोत्सव

G20 भारत 2023 INDIA

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
भारत सरकार का उपक्रम

Union Bank of India
A Government of India Undertaking

यूनियन सृजन

प्रकाशन तिथि : 14.11.2023

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की तिमाही हिंदी गृह पत्रिका

वर्ष - 8, अंक - 3, मुंबई, जुलाई-सितंबर, 2023

संरक्षक

ए. मणिमेखलै
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

प्रधान संपादक

अरुण कुमार
महाप्रबंधक (मा.सं.)

संपादकीय सलाहकार

जी.एन.दास
महाप्रबंधक (मा.सं. एवं रा.भा.)

अम्बरीष कुमार सिंह
उप महाप्रबंधक (मा.सं.)

कार्यकारी संपादक

रामजीत सिंह
सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.)

संपादक

गायत्री रवि किरण
मुख्य प्रबंधक (रा.भा.)

संपादन सहयोग

नितिन वासनिक
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

जागृति उपाध्याय
सहायक प्रबंधक (रा.भा.)

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
भारत सरकार का उपक्रम

Union Bank of India
A Government of India Undertaking

अनुक्रमणिका

- माननीय गृह एवं सहकारिता मंत्री जी का संदेश 1-2
- परिदृश्य 3
- संपादकीय 4
- भाषा सृजन : बैंकिंग शब्दावली 5-6
- कारोबार विकास में भाषा की भूमिका 7-8
- विदेशों में भारतीय भाषा 8-9
- केंद्रीय कार्यालय, मुंबई का हिंदी दिवस मुख्य समारोह, 2023 10-11
- आत्मनिर्भर भारत को अपनी भाषा की आवश्यकता 12-13
- वर्तमान परिदृश्य में राजभाषा हिंदी 13-14
- भारतीय शास्त्रीय भाषाएँ 15
- प्रौद्योगिकी और हिंदी 16
- भाषा एवं समाज का संबंध / भाषा और व्यक्तित्व विकास 17-19
- भारतीय भाषाई ई- टूल्स 20-21
- विशेष भाषा दिवस 22
- वित्तीय क्षेत्र के कार्यालयों में भारतीय भाषाओं का महत्व 23
- सेंटर स्प्रेड : आलमपुर 24-25
- काव्य सृजन 26-27
- शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा की भूमिका 28-29
- भारतीय भाषाओं की धरोहर का संरक्षण / नराकास बैठकों का आयोजन 30-31
- भाषा और सांस्कृतिक पहचान 32
- 'से' का नियम और भारत / बैंकिंग सेवाएं और बिज़नेस एथिक्स 33-35
- कहानी- मास्टर कल्याणनाथ / राजभाषा निरीक्षण 36-37
- चंद्रयान-3 भारतीय चंद्र अभियान 38
- यात्रा सृजन - मेरी जम्मू यात्रा 39
- साहित्य सृजन - आचार्य रामलोचन शरण 40
- कोट्टारात्तिल शंकुन्नी की ऐथिह्यमाला 41
- राजभाषा पुरस्कार / समाचार 42-47
- आपकी नज़र में 48

राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई द्वारा आंतरिक परिचालन हेतु प्रकाशित

ई-मेल: gayathri.ravikiran@unionbankofindia.bank | union.srijan@unionbankofindia.bank
Tel.: 022-41829288 | Mob.: 9849615496

Printed and Published by Gayathri Ravi Kiran on behalf of Union Bank of India, Printed at Uchitha Graphic Printers Pvt. Ltd., 65, Ideal Ind. Estate, Mathuradas Mill Compound, S. B. Marg, Lower Parel, Mumbai - 400 013, and Published from Union Bank of India, 239, Union Bank Bhawan, Vidhan Bhawan Marg, Nariman Point, Mumbai - 400 021.

यूनियन सृजन में प्रकाशित विचार लेखक के अपने हैं. प्रबंधन का इनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है.

अमित शाह
गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

सत्यमेव जयते

हिंदी दिवस संदेश 2023

प्रिय देशवासियो!

आप सब को हिंदी दिवस की हार्दिक शुभकामनाएँ।

भारत भाषिक विविधता का देश रहा है। दुनिया के सबसे बड़े लोकतंत्र की भाषिक विविधता को एकता के सूत्र में पिरोने का नाम **'हिंदी'** है। हिंदी भाषा अपनी प्रवृत्ति से ही इतनी जनतांत्रिक रही है कि इसने भारतीय भाषाओं और बोलियों के साथ–साथ कई वैश्विक भाषाओं को यथोचित सम्मान देते हुए उनकी शब्दावलियों, पदों, वाक्य विन्यासों और वैयाकरणिक नियमों को आत्मसात किया है।

हिंदी भाषा ने स्वतंत्रता आन्दोलन के मुश्किल दिनों में देश को एकता के सूत्र में बाँधने का अभूतपूर्व कार्य किया। अनेक भाषाओं और बोलियों में बँटे देश में ऐक्य भावना से पूरब से पश्चिम और उत्तर से दक्षिण तक स्वतंत्रता की लड़ाई को आगे बढ़ाने में संवाद भाषा हिंदी की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही। इसीलिए, लोकमान्य तिलक हों, महात्मा गांधी हों, लाला लाजपत राय हों, नेताजी सुभाषचंद्र बोस हों, राजगोपालाचारी हों; हिंदी के शुरुआती पैरवीकारों में बहुसंख्यक उन प्रदेशों के लोग थे, जिनकी मातृभाषाएँ हिंदी नहीं थीं।

किसी भी देश की मौलिक सोच और सृजनात्मक अभिव्यक्ति सही मायनों में सिर्फ उस देश की अपनी भाषा में ही की जा सकती है। प्रसिद्ध साहित्यकार भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा है कि, **"निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति कौ मूल।"** यानि कि, अपनी भाषा की उन्नति ही सभी प्रकार की उन्नति का मूल है। राष्ट्र की पहचान इस बात से भी होती है कि उसने अपनी भाषा को किस सीमा तक मजबूत, व्यापक एवं समृद्ध बनाया है। यही कारण है कि स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद संविधान निर्माताओं ने अनुच्छेद 343 द्वारा संघ की राजभाषा के रूप में हिंदी और लिपि के रूप में देवनागरी को अपनाया।

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के नेतृत्व में भारतीय भाषाओं को राष्ट्रीय से वैश्विक मंचों तक यथोचित सम्मान मिला है। हमारी सभी भारतीय भाषाएँ और बोलियाँ हमारी सांस्कृतिक धरोहर हैं।

अपनी भाषा में सुनी हुई अवांछनीय बातें भी बहुत बुरी नहीं लगती। कवि **विद्यापति** की शब्दावली में कहूँ तो **'देसिल बयना सब जन मिट्ठा'** यानि देशी भाषा सभी जनों को मीठी लगती है। गृह मंत्रालय का राजभाषा विभाग निरंतर प्रयत्नशील है कि शहद सामान मीठी भारतीय भाषाओं को आधुनिक तकनीक के माध्यम से अत्याधुनिक और वैज्ञानिक प्रयोग के अनुकूल उपयोगी बनाया जा सके।

सरकार और जनता के बीच भारतीय भाषाओं में संवाद स्थापित कर जनकल्याणकारी योजनाओं को प्रभावी तौर पर लागू किया जा सकता है। दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र जन–जन तक उनकी ही भाषा में उनके हित की बात पहुँचाकर आदर्श लोकतंत्र के निर्माण का सबसे अच्छा उदाहरण हो सकता है। राजभाषा विभाग ने इसी उद्देश्य से राजभाषा हिंदी के प्रयोग को सूचना प्रौद्योगिकी के माध्यम से सहज बनाने की दिशा में काम करते हुए स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली **'कंठस्थ'** का निर्माण और विकास किया है। फिजी में संपन्न 'विश्व हिंदी सम्मेलन' में **'न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन'** के साथ इसके नए वर्जन (कंठस्थ 2.0) के मोबाइल ऐप का भी लोकार्पण भी किया गया है।

राजभाषा विभाग की एक नई पहल **'हिंदी शब्द सिंधु'** शब्दकोश का निर्माण है। इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में अधिसूचित भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है। साथ ही, विभाग ने **'लीला हिंदी प्रवाह'** मोबाइल ऐप भी तैयार किया है, जिसे अपनाकर विभिन्न भाषा–भाषी 14 भारतीय भाषाओं के माध्यम से अपनी–अपनी मातृभाषाओं से स्तरीय हिंदी निःशुल्क सीख सकते हैं।

भाषा परिवर्तन का सिद्धांत यह कहता है कि भाषा जटिलता से सरलता की ओर जाती है। मेरे विचार से हिंदी के सरल और सुस्पष्ट शब्दों को कार्यालयी कामकाज में प्रयोग में लाना चाहिए। टिप्पणी, पत्राचार, ई–मेल, विज्ञप्ति आदि के लिए आम बोलचाल के शब्दों व वाक्यों के प्रयोग से हिंदी के प्रयोग का चलन बढ़ेगा।

हमारे लिए हिंदी का प्रश्न सिर्फ एक भाषा का प्रश्न नहीं, बल्कि राष्ट्रीय स्वाभिमान व सांस्कृतिक गौरव का विषय है। मुझे विश्वास है कि राजभाषा विभाग के उपरोक्त प्रयासों से सभी मातृभाषाओं को आत्मसात करते हुए लोकसम्मत भाषा हिंदी विज्ञानसम्मत व तकनीकसम्मत होकर संपन्न राजभाषा के रूप में स्थापित होगी।

पुनश्च, आप सब को हिंदी दिवस की अनंत शुभकामनाएं।

नई दिल्ली,
14 सितंबर, 2023

(अमित शाह)

परिदृश्य

प्रिय यूनियनाइट्स,

बैंक की हिंदी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' के माध्यम से नियमित अंतराल पर मैं अपने विचार आपके साथ साझा कर रही हूँ. इसी क्रम को जारी रखते हुए 'यूनियन सृजन' के 'भाषा विशेषांक' के माध्यम से अपनी बात आपके समक्ष रखते हुए मुझे अत्यंत प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है.

प्रत्येक वर्ष की भाँति इस वर्ष भी हम सभी ने मिलकर राजभाषा हिंदी का राष्ट्रीय पर्व हर्षोल्लास के साथ मनाया है. बैंक के सभी कार्यालयों द्वारा 'हिंदी पखवाड़ा' मनाया गया और हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने के उद्देश्य से कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. राजभाषा कार्यान्वयन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य हेतु राजभाषा शील्ड की घोषणा की गई है. मैं सभी विजेताओं को हार्दिक बधाई देती हूँ और आशा करती हूँ कि बैंक में प्रत्येक स्तर पर राजभाषा के कार्य में वृद्धि होगी. मैं आप सभी से राजभाषा कार्यान्वयन और दैनिक काम-काज में हिंदी के प्रयोग हेतु प्रतिबद्ध होने का आग्रह करती हूँ.

यूनियन बैंक स्थापना के समय से ही राजभाषा कार्य में अग्रणी रहा है. बैंक नई टेक्नॉलोजी तथा नई पहलों में राजभाषा को शामिल करता रहा है. वर्तमान में भी हम प्रत्येक पहल में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं को शामिल करते हुए अपने उत्पादों को ग्राहकों तक आसानी से उपलब्ध करा रहे हैं. बैंक की विभिन्न डिजिटिल यात्रा और एसटीपी में भी हिंदी का विकल्प उपलब्ध कराने की दिशा में कार्य किया जा रहा है.

भाषा समाज का अभिन्न अंग है और प्रत्येक व्यक्ति और उसके सामाजिक परिवेश पर निश्चित ही भाषा का प्रभाव रहता है. बैंक जैसे सेवा प्रधान संस्था के लिए भाषा विशेष महत्व का विषय है. बैंको के परिप्रेक्ष्य में, कारोबार के विकास और वृद्धि हेतु ग्राहकों से संपर्क करना और उनको अपनी सेवाओं की जानकारी देना एक अत्यंत आवश्यक कार्य है, जो ग्राहकों की भाषा को अपनाकर ही संभव हो पाता है.

भाषा ऐसा सशक्त माध्यम है जिससे हम अपने कर्मचारियों के साथ-साथ अपने ग्राहकों से भी संवाद स्थापित कर सकते हैं. सहज एवं सरल भाषा के माध्यम से अपने ग्राहकों के साथ हम अनायास ही जुड़ पाएंगे और उच्च कोटि की ग्राहक सेवा प्रदान करने में सफल हो पाएंगे. क्षेत्रीय भाषा के सहारे हम ऐसे ग्राहकवर्ग तक पहुँच हासिल कर पाएंगे, जिन पर पारंपरिक विपणन साधन का प्रभाव कम होता है. हमने हाल में कई स्थानों पर नुक्कड़ नाटकों के माध्यम से अपनी सेवाओं और उत्पादों की जानकारी आम जनता तक पहुँचाने की पहल की है. आगामी समय में अन्य क्षेत्रों में भी इस पहल को आगे बढ़ाने का प्रयास किया जाएगा. हमें आशा है कि यह ग्राहकों से संपर्क स्थापित करने का प्रभावशाली माध्यम साबित होगा.

भाषा की दृष्टि से भारत निर्विवादित रूप से संपन्न देश है. भारत की सभी भाषाएं अपने आप में अनूठी हैं और अपने-अपने प्रदेश की संस्कृति की संवाहक भी हैं. भारतीय भाषाओं में उपलब्ध साहित्य न केवल देश की वैविध्यपूर्ण संस्कृति के प्रतीक हैं, बल्कि इनमें कई महान कृतियां और ग्रंथ अपने में ज्ञान-विज्ञान का भंडार समेटे हुए हैं. मुझे प्रसन्नता है कि 'यूनियन सृजन' के 'भाषा विशेषांक' के माध्यम से इन्हीं सब पहलुओं को उजागर करने का सफल प्रयास किया गया है. मैं इस अंक हेतु योगदान देने वाले सभी स्टाफ सदस्यों का अभिनंदन करती हूँ और आशा करती हूँ कि गृह पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका सक्रिय योगदान इसी प्रकार बना रहेगा.

शुभकामनाओं सहित,

आपकी,

(ए. मणिमेखलै)
प्रबंध निदेशक एवं सीईओ

संपादकीय

प्रिय पाठकगण,

'यूनियन सृजन' के 'भाषा विशेषांक' को आपके सम्मुख प्रस्तुत करते हुए प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है.

भाषा एक ऐसा साधन है जिसके माध्यम से जीवन का शायद ही कोई पहलू अछूता रह गया है. यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगी कि भाषा मानव संस्कृति और सभ्यता की आधार शिला है. भाषा के आधार पर ही मनुष्य अन्य जीवों से भिन्न अपनी पहचान बना पाया है. आपस में संपर्क, संचार और संप्रेषण के माध्यम से मानव समाज का निर्माण कर पाया है और विभिन्न विषयों का प्रतिपादन कर बुद्धिजीवी कहलाया है. यद्यपि यह तर्क दिया जा सकता है कि भाषा के अलावा भी कुछेक संप्रेषण के साधन उपलब्ध हैं, तथापि यह प्रखर सत्य है कि भाषा संप्रेषण से अधिक प्रभावशाली कोई अन्य माध्यम नहीं है.

किसी एक भाषा में प्रवीणता प्राप्त करना वांछनीय ही नहीं आवश्यक भी बन जाता है. भारत में हर व्यक्ति को सहज ही दो या तीन भाषाओं की जानकारी होती है और इस प्रकार भारत में बहुभाषी संस्कृति का प्रचलन रहा है. भारतीय भाषाओं में भिन्नता के साथ - साथ समानता का पुट भी देखा जा सकता है. यही कारण है कि भारतीय अनादि काल से सहजता से पूरे देश में भ्रमण करते रहे हैं. इस बात का प्रमाण हमारे पौराणिक ग्रंथों में भी मिलता है. भारत की यही बहुभाषी संस्कृति इस देश की पहचान भी है और विशेषता भी. तथापि आज देश की कई बोलियां विलुप्त होने की कगार पर हैं. अत: हमें अपनी भाषा संपदा को सुरक्षित रखने हेतु प्रयत्नपूर्वक संकल्प करना होगा.

जीवन के हर पहलू में भाषा का काफी महत्व है. अध्ययन के प्रत्येक विषय और विशेषज्ञता में संप्रेषण अवश्य ही एक महत्वपूर्ण घटक है और यह भाषा के बिना संभव नहीं है. साथ ही एक व्यक्ति और समुदाय की पहचान बनाने में भी भाषा की भूमिका को कम नहीं आंका जा सकता. ज्ञान-विज्ञान के बढ़ते आयामों के साथ भाषा के स्वरूप, भूमिका और प्रासंगिकता में भी काफी परिवर्तन हुआ है. आज के दौर में विश्व की कोई भी भाषा आसानी से सीखी जा सकती है और उस भाषा के माध्यम से एक नई संस्कृति का परिचय प्राप्त किया जा सकता है. इससे विश्व की विभिन्न संस्कृतियों के बारे में मानव की समझ में काफी वृद्धि हुई है. अब प्रौद्योगिकी के ऐसे साधन उपलब्ध हैं जिनके माध्यम से किसी भी भाषा में उपलब्ध ज्ञान भंडार तक की पहुंच सरल और सहज बन गई है.

'यूनियन सृजन' के इस अंक में भाषा के इन्हीं सब पक्षों को उजागर करते हुए हमारे लेखकों द्वारा भाषा की बहुआयामी विशेषताओं को निरूपित करने का सफल प्रयास किया गया है.

हमें आशा है कि आपको 'यूनियन सृजन' का 'भाषा विशेषांक' पसंद आएगा. इस अंक के संबंध में आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा रहेगी.

आपकी,

(गायत्री रवि किरण)

बैंकिंग शब्दावली

स्वतंत्रता के बाद भिन्न-भिन्न क्षेत्रों में राजभाषा हिंदी के साथ-साथ भारतीय क्षेत्रीय भाषाओं के प्रयोग में निरंतर वृद्धि हुई है. कई भाषाएं जो इससे पूर्व केवल साहित्यिक विधाओं में प्रयुक्त हुआ करती थीं, वे साहित्य से इतर कार्यक्षेत्रों में प्रयुक्त होने लगी हैं. प्रशासन, व्यापार, वाणिज्य, विज्ञान, तकनीक, शिक्षा के विविध स्तर, जनसंचार आदि क्षेत्र में भारतीय भाषाओं का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है. सरकारी क्षेत्र के बैंकों पर राजभाषा संबंधी संवैधानिक प्रावधान लागू होने के पूर्व बैंकों में लगभग संपूर्ण कार्य केवल अंग्रेजी में ही हो रहा था. बैंक एक वाणिज्यिक संस्था है. बैंकों के राष्ट्रीयकरण के बाद राजभाषा अधिनियम एवं उसके अंतर्गत बनाए गए राजभाषा नियमों के प्रावधान सरकारी क्षेत्र के बैंकों पर भी लागू हुए और बैंकों के कामकाज में हिंदी का प्रयोग शुरू हुआ.

अत: यह आवश्यक हो गया था कि हिंदी में बैंकिंग शब्दावली विकसित की जाए ताकि बैंकों का कामकाज हिंदी में करने में सहायता मिल सके और शब्दों के प्रयोग में एकरूपता भी सुनिश्चित की जा सके. इस संबंध में बैंकिंग क्षेत्र में हिंदी के प्रयोग को बढ़ाने की दृष्टि से देश का शीर्ष बैंक होने के नाते भारतीय रिजर्व बैंक ने हिंदी शब्द भंडार को समृद्ध बनाने और उसमें एकरूपता लाने की दिशा में पहल करते हुए एवं अपने उत्तरदायित्व का निर्वाह करते हुए वर्ष 1980 में बैंकिंग शब्दावली का प्रकाशन किया. इस प्रकाशन की मांग को देखते हुए 1992 तक इसके चार संस्करण प्रकाशित हो चुके थे. 2003 में पांचवां संस्करण, 2007 में छठवां संस्करण और 2012 में सातवां संस्करण प्रकाशित हुआ. वर्ष 2012 के बाद बैंकिंग में काफी नए शब्द जुड़े हैं, अत: भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा अगला संस्करण शीघ्र प्रकाशित किया जा सकता है. भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा मूल शब्दावली को यूनिकोड में तैयार किया गया है. इसके ई-संस्करण में एक ही डेटाबेस से अंग्रेजी शब्दों के हिंदी अर्थ और हिंदी शब्दों के अंग्रेजी अर्थ दोनों की जानकारी प्राप्त होती है. इस शब्दावली के प्रकाशन से पूरे बैंकिंग और वित्तीय जगत में हिंदी में कामकाज करने में सहायता मिली है.

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग द्वारा समय-समय पर राजभाषा हिंदी के सरल रूप को अपनाने के लिए निर्देश जारी किए गए हैं. अधिकांश अंग्रेजी के लोकप्रिय शब्द शामिल किए गए हैं. शब्दों के पीछे निहित भावों को वरीयता दी जाती है. इसे देखते हुए अंग्रेजी के लोकप्रिय शब्दों जैसे benchmark-बेंचमार्क, cargo-कार्गो आदि का लिप्यंतरण भी किया गया है. तथापि, जहां अंग्रेजी के शब्दों के प्रयोग से हिंदी भाषा का सौंदर्य बिगड़ने का खतरा महसूस किया गया वहां हिंदी के लोकप्रिय शब्द जैसे revenue के लिए 'मालगुजारी' की जगह 'राजस्व' शब्द रखे गए हैं और आपवादिक परिस्थितियों में जब नया शब्द बनाना भी पड़ा तो यथासंभव सही और सरल हिंदी पर्याय का निर्माण किया गया जो प्रयोग करने पर स्वत: लोकप्रिय हो जाएंगे.

साथ ही, इस बात पर ध्यान दिया गया है कि शब्दावली में पारिभाषिक शब्दों की हिंदी अलग तथा अन्य शब्दों के साथ यथासंभव एक हो ताकि उन्हें याद रखना और उनका प्रयोग करना आसान हो. अर्थभेद का विशेष रूप से ध्यान रखा गया है ताकि अलग-अलग अर्थ वाले शब्दों के लिए हिंदी पर्याय अलग हों जैसे qualification, eligibility और entitlement के लिए क्रमश: अर्हता, पात्रता और हकदारी शब्द का चयन किया गया है. अर्थभेद के साथ-साथ शब्दों के प्रयोग पर भी ध्यान दिया गया है. उदाहरण हेतु dead के लिए 'जड़' तथा dormant के लिए 'निष्क्रिय' शब्द रखा गया है.

इसके अतिरिक्त, कुछ प्रचलित शब्दों को ज्यों का त्यों अपनाया गया है जैसे बैंक, ड्राफ्ट, चेक, काउंटर, आदि. इससे अन्य प्रचलित अंग्रेजी शब्दों के अनावश्यक रूप से हिंदी शब्द बनाने के दुराग्रह से भी बचा जाता है. बैंकिंग शब्दावली में बैंकिंग से जुड़े अन्य ऐसे क्षेत्र के शब्दों को भी शामिल किया गया है जिनका बैंकिंग के कामकाज में अत्यधिक उपयोग होता है और वे शब्द बैंकिंग के ही प्रतीत होने लगे हैं. मिलते-जुलते अंग्रेजी शब्दों के लिए सटीक हिंदी शब्द रखे गए हैं और उनमें जो सूक्ष्म अंतर है, उसे बरकरार रखने का प्रयास किया गया है जिससे शब्दों का अर्थ सरलता से समझा जा सके. उदाहरण के लिए 'Farming' के लिए 'खेती' और 'Agriculture' के लिए 'कृषि' शब्द रखा गया है. Credit के लिए 'ऋण' और Debt के लिए 'कर्ज' शब्द रखा गया है. कतिपय शब्दों का हिंदी पर्याय एक ही शब्द में मिल पाना संभव नहीं है. ऐसे में व्याख्यात्मक अनुवाद करना होगा. उदाहरण के लिए 'Tax Deductee' के लिए – 'जिनसे कर की कटौती की गई' और 'Written Off Accounts' के लिए 'बट्टे खाते में डाले गए खाते' का उपयोग किया जा सकता है. हालांकि कार्यालयीन परिप्रेक्ष्य में मुहावरों आदि का कम ही प्रयोग होता है, तथापि यदि अलंकृत भाषा का प्रयोग किया गया हो तो लक्ष्य भाषा के अनुरूप अनुवाद जैसे 'Leave no stone unturned' के लिए 'कोई भी पत्थर बिना उल्टाए न छोड़ें' का उपयोग करने के बजाए

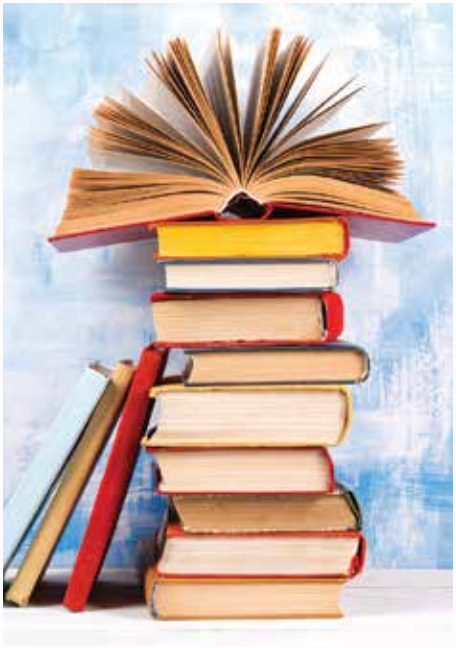

'हर संभव प्रयास करें' का उपयोग किया जा सकता है. कतिपय संक्षिप्त शब्दों के रूप में ही लिप्यंतरण किया जा सकता है जैसे SARFAESI के लिए सरफेसी, CERSAI के लिए सरसई, MUDRA के लिए मुद्रा आदि का ही उपयोग किया जा सकता है. शब्दावली में Value के लिए 'मूल्य' और Price के लिए 'कीमत' शब्द का प्रयोग किया गया है. 'संसाधन' शब्द का प्रयोग Resource के लिए होती है. अत: Processing के लिए 'प्रसंस्करण' शब्द रखा गया है. शब्दावली में मानकीकरण की प्रक्रिया का ध्यान रखा गया है. जैसे Asset के लिए 'आस्ति' और 'परिसंपत्ति' एवं Recovery Plan के लिए 'समुत्थान योजना' / 'प्रत्युत्थान योजना' रखा गया है. नए शब्द Bail out के लिए 'उबारना' और Bail in के लिए 'उबरना' शामिल किया गया है. इस तरह भारतीय रिजर्व बैंक द्वारा शब्दावली को उपयोगी बनाने के संबंध में निरंतर प्रयास किया जा रहा है.

भारतीय रिजर्व बैंक के अतिरिक्त राष्ट्रीय कृषि और ग्रामीण विकास बैंक (नाबार्ड) द्वारा ग्रामीण विकास बैंकिंग शब्दावली का भी प्रकाशन किया गया है. कृषि और ग्रामीण विकास के क्षेत्र में शीर्ष विकास बैंक होने के कारण नाबार्ड का ध्यान देश के ग्रामीण क्षेत्रों के सर्वांगीण विकास पर केन्द्रित है. किसी भी संस्था से यह अपेक्षाएं रहती हैं कि वह देश की आम जनता के लिए किए जाने वाले सभी कार्यों को उस क्षेत्र की क्षेत्रीय भाषा में करे. कृषि और ग्रामीण विकास में शीर्ष बैंक होने के नाते नाबार्ड ने यह भूमिका बहुत अच्छे ढंग से निभायी है. नाबार्ड अपनी सभी विकास योजनाओं की जानकारी आम जनता तक पहुंचाने के लिए हिंदी एवं स्थानीय भाषाओं के प्रयोग पर जोर देता रहा है. नाबार्ड ने हिंदी के प्रयोग की कठिनाइयों के समाधान के लिए 1999 में कृषि बैंकिंग शब्दावली तैयार की थी जिसको नाबार्ड के साथ-साथ ग्रामीण विकास के कार्यों से जुड़ी संस्थाओं जैसे सहकारी बैंकों, क्षेत्रीय ग्रामीण बैंकों, पंचायती राज संस्थाओं और स्वयं सेवी संस्थाओं ने अत्यंत उपयोगी पाया है.

बैंकिंग शब्दावली का उपयोग करके न केवल बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों के अधिकारी और कर्मचारी राजभाषा हिंदी सीख सकते हैं अपितु हिंदी सीखने के साथ-साथ बैंकिंग शब्दावली का उपयोग करके अधिकाधिक कार्य राजभाषा हिंदी के सरल रूप में कर सकते हैं. बैंकिंग शब्दावली का उपयोग अनुवाद में भी किया जाता है. एक भाषा में कही गई बात को किसी दूसरी भाषा में कहना अनुवाद है. किसी भाषा में व्यक्त विषय / विचारों को सहज और समतुल्य शब्दों में दूसरी भाषा में प्रकट करना ही अनुवाद है. किसी भी प्रकार के अनुवाद के लिए जिस भाषा में अनुवाद किया जा रहा है एवं जिस भाषा से अनुवाद किया जा रहा है, उन दोनों भाषाओं का ज्ञान होना आवश्यक है. दोनों भाषाओं का ज्ञान होने के साथ-साथ उस विषय की जानकारी भी होनी चाहिए जिसका अनुवाद किया जा रहा है. अनुवाद करते समय यदि एक शब्द वाक्य विन्यास के अनुसार सटीक नहीं लग रहा है तो समतुल्य शब्दों का प्रयोग करके सरल भाषा में अनुवाद किया जा सकता है जिससे हिंदीतर भाषी अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए सरल हिंदी समझने में सहजता महसूस हो. बैंकों में ग्राहकों के लिए किए जाने वाले कार्य जैसे खाता खोलने का आवेदन पत्र, पास बुक, डेबिट कार्ड फॉर्म एवं बैंकों के आधिकारिक कार्य लॉग बुक में प्रविष्टियां, कार्मिकों के आवेदन आदि में अंग्रेजी एवं हिंदी का प्रयोग किया जाता है. इसके अतिरिक्त राजभाषा नीति को बढ़ावा देने के उद्देश्य से बनाए गए राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(3) में उल्लिखित 14 दस्तावेजों का अनिवार्यत: द्विभाषीकरण किया जाना है. इन सभी कार्यों को पूरा करने में बैंकिंग शब्दावली एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. बैंकिंग शब्दावली का उपयोग किए बिना बैंकिंग परिप्रेक्ष्य के किसी शब्द के सटीक अर्थ को समझ पाना असंभव है.

बैंकिंग शब्दावली का उपयोग करके प्रतिदिन एक शब्द हिंदी के माध्यम से हिंदीतर भाषी अधिकारियों और कर्मचारियों को हिंदी सीखने में सहायता मिलती है जिससे राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में वृद्धि होती है. बैंकिंग शब्दावली केवल सरकारी क्षेत्र के बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों के अधिकारियों और कर्मचारियों के लिए ही नहीं बल्कि ग्राहकों के लिए भी लाभदायक है. जहां अधिकारी और कर्मचारी बैंकिंग शब्दावली का उपयोग करके बैंकों के कामकाज में हिंदी को बढ़ावा देकर संघ की राजभाषा नीति का अनुपालन करते हैं वहीं ग्राहक बैंकों में हिंदी के प्रयोग से, स्वयं को बैंकों से जुड़ा हुआ एवं गौरवान्वित महसूस करते हैं. इससे बैंक के कारोबार में वृद्धि होती है.

रामजीत सिंह
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

कारोबार विकास में भाषा की भूमिका

कारोबार विकास हेतु भारतीय भाषाओं में सेवाएं प्रदान करना व्यापक ग्राहक आधार को पूरा करने और वित्तीय समावेशन को बढ़ावा देने में सहायक है. भारत की भाषाई विविधता वित्तीय क्षेत्रों के कार्यालयों में प्रभावी संचार और पहुंच सुनिश्चित करने में एक महत्वपूर्ण चुनौती प्रदान करती है. हालांकि अंग्रेजी संचार के लिए एक आम भाषा के रूप में कार्य करती है, जनसंख्या का एक बड़ा हिस्सा, विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले, इसमें कुशल नहीं होते हैं. वित्तीय संस्थानों में भारतीय भाषाओं को शामिल करने से, संगठन इस संवाद के अंतर को दूर कर सकते हैं, जिससे उनकी सेवाओं को अधिक से अधिक व्यक्तियों तक पहुँचाया जा सकता है. यह समावेश ग्राहकों और वित्तीय संस्थानों के बीच बेहतर समझ, विश्वास और जुड़ाव को सक्षम बनाता है.

वित्तीय क्षेत्र में भारतीय भाषाओं में सेवाएं प्रदान करने से एक गहरा प्रभाव पड़ता है, जो एक व्यापक ग्राहक आधार को संतुलित करने में मदद करता है. भाषाई विविधता को स्वीकार करके, वित्तीय संस्थान वास्तव में विभिन्न ग्राहकों के विस्तृत समूह तक पहुंच सकते हैं और सेवाएं प्रदान कर सकते हैं, जो वित्तीय समावेशन और सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करता है.

पिछले कुछ वर्षों में वित्तीय क्षेत्र में भारतीय भाषाओं के उपयोग के संबंध में प्रगति और की गई पहल-

बैंकिंग और वित्तीय सेवाएं: भारत में कई बैंकों और वित्तीय संस्थानों ने विस्तृत ग्राहक आधार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं में सेवाएं प्रदान करने के लिए कई कदम उठाए. कई बैंकों ने क्षेत्रीय भाषाओं में बहुभाषी वेबसाइट, मोबाइल एप्लिकेशन और ग्राहक सहायता (कॉल सेंटर, चैटबॉट, व्हाट्सएप बैंकिंग, वॉयस बैंकिंग आदि) की शुरुआत की है. हिंदी, बंगला, तमिल, तेलुगु आदि भाषाओं में सेवाएं प्रदान करने का प्रयास सशक्तिकरण और वित्तीय समावेशन को बेहतर बनाता है.

सरकारी पहल: भारत सरकार भी वित्तीय सेवाओं में क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग को बढ़ावा दे रही है. उदाहरण के लिए, भारतीय रिजर्व बैंक ने बैंकों को अंग्रेजी और हिंदी के अलावा ग्राहकों की क्षेत्रीय भाषा में खाता खोलने, पासबुक अपडेट और ऋण आवेदन जैसी बुनियादी बैंकिंग सेवाएं उपलब्ध कराना अनिवार्य किया है.

राजभाषा नीति: भारत सरकार की राजभाषा नीति का उद्देश्य क्षेत्रीय भाषाओं के महत्व को पहचानते हुए राजभाषा के रूप में हिंदी के उपयोग को बढ़ावा देना है. इस नीति के तहत, वित्तीय क्षेत्र सहित सरकारी संस्थानों को अपने कार्यालयीन पत्राचार, प्रलेखन और जनता के साथ संवाद में हिंदी और क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है. यह वित्तीय सेवाओं में क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाने और बढ़ावा देने के लिए एक अनुकूल वातावरण बनाता है.

डिजिटल भुगतान और फिनटेक: भारत में डिजिटल भुगतान और फिनटेक स्टार्टअप की वृद्धि ने क्षेत्रीय भाषा इंटरफेस पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है. कई भुगतान ऐप्स और फिनटेक प्लेटफॉर्म ने स्थानीय भाषाओं में लेनदेन और वित्तीय गतिविधियों को सुविधाजनक बनाने के लिए क्षेत्रीय भाषा विकल्पों को शामिल किया है.

डिजिटल इंडिया पहल: भारत सरकार द्वारा शुरू की गई डिजिटल इंडिया पहल का उद्देश्य भारत को डिजिटल सशक्त देश में परिवर्तित करना है. इस पहल के अंतर्गत, क्षेत्रीय भाषाओं में डिजिटल वित्तीय सेवाओं को प्रदान करने के प्रयास किए गए हैं. भारत सरकार के द्वारा समर्थित विभिन्न प्लेटफॉर्म और मोबाइल ऐप्स, जैसे भीम (भारत इंटरफेस फॉर मनी), यूपीआई (यूनिफाइड पेमेंट्स इंटरफेस) और नेशनल पेमेंट्स कॉर्पोरेशन ऑफ इंडिया (एनपीसीआई) के पेमेंट सिस्टम, क्षेत्रीय भाषा को समर्थन प्रदान करते हैं, जिससे उपयोगकर्ताओं को अपनी पसंदीदा भाषा में लेनदेन करने और वित्तीय सेवाओं तक पहुंचने की सुविधा मिलती है.

वित्तीय समावेशन कार्यक्रम: सरकार के वित्तीय समावेशन कार्यक्रम, जैसे कि प्रधानमंत्री जन धन योजना और प्रधानमंत्री मुद्रा योजना, ने वंचित आबादी के बीच वित्तीय सेवाओं तक पहुंच को बढ़ावा देने के लिए क्षेत्रीय भाषाओं के उपयोग पर जोर दिया है. इन कार्यक्रमों का उद्देश्य व्यक्तियों को मुख्य बैंकिंग धारा से जोड़ना है और उन्हें अपने वित्तीय कल्याण में सुधार के लिए आवश्यक उपकरण और संसाधन प्रदान करना है. इस तरह के कार्यक्रमों में संचार और प्रलेखन में क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग करते हुए, सरकार यह सुनिश्चित करती है कि लाभार्थी इन पहलों को पूरी तरह से समझ सकें और इनमें भाग ले सकें.

भाषा स्थानीकरण: कई वित्तीय सॉफ़्टवेयर प्रदाताओं और प्लेटफॉर्मों ने भारतीय भाषाओं में उनके उत्पादों के स्थानीय संस्करणों की पेशकश शुरू की है इसमें लेखा सॉफ़्टवेयर, ट्रेडिंग प्लेटफॉर्म और निवेश ऐप्स शामिल हैं, जो उपयोगकर्ताओं को उनकी पसंदीदा भाषा में वित्तीय सेवाओं का उपयोग करने की सुविधा प्रदान करते हैं. इसके साथ-साथ भाषा अनुवाद प्रौद्योगिकियों, टेक्स्ट-टू-स्पीच एप्लिकेशनों और आवाज पहचान प्रणालियों के विकास का उपयोग किया जाता है, जो क्षेत्रीय भाषाओं में संचार और अंतरक्रियाओं को सुविधाजनक बनाने में सहायता करते हैं.

इससे व्यापारों को अप्रवेशित बाजारों में प्रवेश करने, उपयोगकर्ता स्वीकृति को बढ़ाने और उनके ग्राहकों के लिए एक अधिक व्यक्तिगत और स्थानीय वित्तीय अनुभव प्रदान करने में सहायता मिलती है.

कौशल विकास और प्रशिक्षण: वित्तीय संस्थान और उद्योग निकायों ने कर्मचारियों की भाषा कौशल महत्व को भी पहचाना है. वे ग्राहकों की बेहतर सेवा के लिए कर्मचारियों की क्षेत्रीय भाषाओं में प्रवीणता को बढ़ाने के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम और कार्यशालाएं आयोजित कर रहे हैं. नियामक निर्देश, राजभाषा नीति, डिजिटल पहल, वित्तीय समावेशन कार्यक्रम और भाषा स्थानीकरण प्रयासों के माध्यम से सरकार ने एक ऐसा वातावरण सृजित किया है जो वित्तीय संस्थानों को क्षेत्रीय भाषाओं को अपनाने और समर्थन करने के लिए प्रोत्साहित करता है, ताकि विभिन्न भाषाई समुदाय वित्तीय सेवाओं का लाभ उठा सकें.

निष्कर्ष: वित्तीय क्षेत्र के कार्यालयों में भारतीय भाषाओं का महत्व कम नहीं समझा जा सकता है. भारतीय भाषाओं को शामिल करते हुए, वित्तीय संस्थान सुगमता में सुधार कर, ग्राहक संतुष्टि को बेहतर कर, अपने बाजार के विस्तार को बढ़ा सकते हैं और एक समावेशी विकास में योगदान कर सकते हैं. भारत की भाषाई विविधता को मान्यता देना और ग्राहकों की भाषा प्राथमिकताओं को पूरा करना, समावेशी और ग्राहक-केंद्रित वित्तीय क्षेत्र बनाने के लिए एक महत्वपूर्ण कदम है, भारत जैसे बहुभाषी देश में भाषा सांस्कृतिक पहचान और क्षेत्रीय गर्व से जुड़ी होती है, इसलिए भारतीय भाषाओं में वित्तीय सेवाएं प्रदान करना लोगों को बेहतर ढंग से समझने, जटिल वित्तीय अवधारणाओं पर सटीक निर्णय लेने और देश के आर्थिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाने की शक्ति प्रदान करता है. इसके अलावा, भारतीय भाषाओं में वित्तीय सेवाओं को प्रदान करने से, भारतीय भाषाओं में विशेषज्ञ व्यक्तियों के लिए रोजगार के अवसर खुलते हैं, जो सामाजिक-आर्थिक प्रगति को बढ़ाते हैं और भाषा पर केन्द्रित बाधाओं को कम करते हैं.

अनीश श्रीमाली
यू.एल.ए., पवई

विदेशों में भारतीय भाषा

भारत की गणना भाषाओं के मामले में विश्व के समृद्धतम देशों में होती है. सन् 2001 की भारत की जनगणना के अनुसार भारत में 121 प्रमुख भाषाएँ और 1599 अन्य भाषाएँ हैं. इस जनगणना में 30 भाषाएँ दर्ज की गईं जो दस लाख से अधिक देशी वक्ताओं द्वारा बोली जाती थीं और 121 ऐसी थीं जो 10,000 से अधिक लोगों द्वारा बोली जाती थीं. जनगणना के अनुसार, 19,569 कच्ची भाषाई संबद्धताओं पर गहन भाषाई जांच, संपादन और युक्तिकरण के बाद जनगणना ने 1369 तर्कसंगत मातृभाषाओं और 1599 नामों को मान्यता दी है जिन्हें 'अवर्गीकृत' माना गया था. 10,000 या अधिक वक्ताओं द्वारा बोली जाने वाली 1599 तर्कसंगत मातृभाषाओं को आगे उपयुक्त सेट में समूहीकृत किया गया, जिसके परिणामस्वरूप कुल 121 भाषाएँ बन गईं. इन 121 भाषाओं में, 22 पहले से ही भारत के संविधान की आठवीं अनुसूची का हिस्सा है और अन्य 99 को 'अन्य भाषाओं का कुल' कहा जाता है, जो 2001 की जनगणना में मान्यता प्राप्त अन्य भाषाओं से एक कम है.

भाषाविदों ने भारतीय भाषा के अध्ययन से यह निष्कर्ष निकाला कि विश्व के 195 देशों में रह रहे 8 अरब लोगों में से 1.3 अरब लोग भारतीय भाषाओं को समझने की क्षमता रखते हैं. इसका मुख्य कारण प्रवासी भारतीय भी हैं. 2020 में, भारत के 18 मिलियन (एक करोड़ 80 लाख) लोग देश से बाहर रह रहे थे. प्रवासियों के मामले में भारत की गिनती पूरे विश्व में प्रथम स्थान पर होती है. भारत के सबसे ज्यादा लोग बतौर प्रवासी संयुक्त अरब अमीरात (3.5 मिलियन), अमेरिका (2.7 मिलियन) और सऊदी अरब (2.5 मिलियन) में रह रहे हैं. रिपोर्ट में कहा गया है कि इसके अलावा बड़ी संख्या में भारतीय मूल के लोग ऑस्ट्रेलिया, कनाडा, कुवैत, ओमान, कतर और यूनाइटेड किंगडम जैसे देशों में भी रहते हैं. इस कारण से इन देशों में भी भारतीय भाषाओं का बोलबाला है.

विश्व में भारतीय भाषाओं का प्रभाव अमिट है. भारतीय भाषाओं में भी हिन्दी की एक अलग पहचान है. हर भारतीय को गर्व है कि हमारे देश की भारतीय भाषा हिन्दी विश्व में तीसरी सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषा है. करीब 425 मिलियन लोग अपनी पहली भाषा के तौर पर हिंदी बोलते है और लगभग 120 मिलियन लोग ऐसे भी है, जो दूसरी भाषा के रूप में हिंदी को रखते हैं. मॉरीशस, सूरीनाम, गुयाना, त्रिनिदाद, नेपाल और टोबैगो में सर्वाधिक भारतीय भाषा बोली जाती है. भारतीय भाषा हिंदी दुनिया के किसी भी देश की राष्ट्रीय भाषा नहीं है, लेकिन हिंदी भारत और फिजी की आधिकारिक भाषा है

और यह यूएई सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त संयुक्त अरब अमीरात की अल्पसंख्यक भाषा भी है. यह भारत के लगभग सभी राज्यों में व्यापक रूप से बोली या समझी जाती है. सिंगापुर दुनिया के अग्रणी यात्रा स्थलों में से एक है और अच्छी खबर यह है कि हिंदी सिंगापुर में सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है. पाकिस्तान में उर्दू और अंग्रेजी आधिकारिक भाषाएं है लेकिन लोग यहां पर हिंदी, पंजाबी, सिंधी, पश्तो, बलूची जैसी भाषाएं भी बोलते हैं. भारत पर शासन के दौरान दक्षिण अफ्रीका में भी अंग्रेजों का शासन था, अंग्रेजों ने बड़ी संख्या में भारतीयों को ले जाकर यहां बसाया और इसी कारण दक्षिण अफ्रीका में भले ही अंग्रेजी और अफ्रीकी आधिकारिक भाषाएं है. लेकिन यहाँ अब भी अधिकतर क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं का चलन है.

विदेशों में हम यदि अपने पड़ोसी देश नेपाल पर भारतीय भाषाओं के प्रभाव की बात करें तो यहाँ भी भारतीय भाषाओं को समझने तथा बोलने वालों की संख्या जनसंख्या की तिहाई से भी अधिक है. भाषा संबंधी समस्या नहीं होने के कारण यहां बॉलीवुड फिल्मों और भारतीय चैनलों को प्राथमिकता दी जाती है. इसी कारण नेपाल में भारतीय पर्यटकों की संख्या भी अच्छी है जो काठमांडू, नगरकोट, भक्तपुर, सागरमाथा नेशनल पार्क, चितवन नेशनल पार्क आदि में दिखती है. इसी तरह ऐतिहासिक साक्ष्य से पता चलता है कि 500 साल पहले सिंगापुर को ग्रेटर इंडिया का हिस्सा माना जाता था, यहां बड़ी संख्या में भारतीय समुदाय के लोग रहते हैं. इस कारण इस देश में भारतीय भाषा तमिल को राजभाषा का दर्जा प्राप्त है और यहां भी हिंदी भाषा बोलने वाले लोगों की संख्या भी काफी अधिक है. सिंगापुर भारतीय पर्यटकों के लिए एक प्रमुख पर्यटन स्थल भी है. इसी तरह मॉरीशस हिंद महासागर में स्थित एक द्वीपीय देश है यहां भी बड़ी संख्या में भारतीय रहते हैं. लगभग तीन शताब्दियों तक, यह ब्रिटिश, डच और फ्रांसीसी लोगों के अधीन रहा है और अंग्रेजों के जमाने में भारत से दासों को यहां काम के लिए ले जाया जाता था, इसी कारण से यहाँ भी भारतीय भाषा बोलने वालों की संख्या लाखों में है. प्रशांत महासागरीय देश फिजी की तो लगभग 38 फीसदी आबादी भारतीय मूल की है और इस कारण यहाँ भी भारतीय भाषा हिन्दी बोलने वालों की संख्या बहुत अधिक है. इस तरह और भी देशों में भारतीय भाषाओं की एक अलग पहचान है. कुल मिलाकर हम कह सकते हैं कि दुनिया का कोई भी कोना भारतीय भाषाओं से अछूता नहीं है. आजकल तो प्रवासी दिवस, विश्व भाषा दिवस आदि ने विभिन्न भाषाओं को विदेशों तक पहुंचाने में मुख्य भूमिका निभाई है.

सर्वप्रथम विदेशों में भारतीय भाषाओं को पहचान देने की कोशिश स्वामी विवेकानंद द्वारा सन् 1893 में हुई. विश्व धर्म सम्मेलन में उन्होंने अपने भाषण के माध्यम से भारतीय भाषा को विश्व मंच दिया. उसके बाद अटल बिहारी बाजपेयी ने भारतीय भाषाओं को विश्वमंच देने की का प्रण लिया था, वे भी विश्वमंच पर भारतीय भाषाओं को ही प्राथमिकता देते थे. माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी ने भी भारतीय भाषाओं को विश्वमंच देने में कोई कसर नहीं छोड़ी है. विदेशों में भारतीय भाषाओं के प्रभाव का एक मुख्य कारक विदेश भ्रमण है. प्राचीन काल से ही भारतीयों का व्यापार एवं अन्य कारणों से विदेश भ्रमण का इतिहास रहा है. भारतीय प्राचीन सभ्यता सिंधु घाटी के लोग भारत से अफगानिस्तान और मिस्र तक भ्रमण करते थे. वे भारतीय संस्कृति के साथ भारतीय भाषाओं की अमिट छाप छोड़ आए थे. ऐतिहासिक साक्ष्यों से यह निष्कर्ष निकलता है कि राजाओं के शासनकाल में वैवाहिक संबंध स्थापित कर संस्कृति तथा भारतीय भाषाओं का प्रसार आसानी से होता रहा था.

अब संयुक्त राष्ट्र में भी भारतीय भाषा का उपयोग बढ़ रहा है. भारतीय भाषाओं को गौरव दिलाने में राजनयिकों की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता. विदेशों से आने वाले राजनयिक हमारी भारतीय भाषा की सरलता, मधुरता से इतने प्रभावित होते हैं कि उनमें भी भारतीय भाषाओं को सीखने की लालसा जागृत होने लगती है. अधिकतर राजनयिक, खिलाड़ी, फ़िल्मकार भी भारतीय भाषाओं की मधुरता से प्रभावित होकर भारतीय भाषाएं बोलने में सहज होते है. भारतीय भाषाओं की अपनी गरिमा है, अपना इतिहास है, संघर्ष की एक छिपी हुई कहानी है, जो इन्हें अन्य भाषाओं से विशेष बनाती है. भारतीय संस्कृति पुरातन है. अपनी संस्कृति के साथ ही अपनी भाषाएं भी जीवंत रूप में आज विश्व पटल पर अपनी पहचान कायम रखे हुए हैं. हम सभी जानते हैं कि किसी भी देश को पहचान दिलाने में भाषा की मुख्य भूमिका होती है. हमारे देश की भाषा की ऐसी पहचान है कि इसे बोलने वाले परिचय के मोहताज नहीं होते, उनकी पहचान उनकी बोली से ही भारतीय के रूप में होती है.

भारतीय भाषा पर कवयित्री महादेवी वर्मा के शब्दों मे...

"विश्व में भारतीय भाषाओं का
दिख रहा है प्रभाव,
विश्वस्तरीय भाषाओं में भी
भारतीय भाषाओं की है अपनी पहचान,
हिन्दी, तमिल, बंगाली, गुजराती, मराठी,
उड़िया हो या मलयालम
सबको मिलता है विदेशों में
बराबर का सम्मान,
हर भारतीय भाषा में है भारत का मान,
हर भारतीय भाषा से है
भारतीय की पहचान....."

खुशमीता रानी
क्षे.का., पटना

केंद्रीय कार्यालय, मुंबई का
हिंदी दिवस मुख्य समारोह, 2023

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया के केंद्रीय कार्यालय द्वारा राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार हेतु हिंदी पखवाड़ा का आयोजन किया गया और इस अवधि के दौरान 09 प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया. दिनांक 07.10.2023 को जय हिंद कॉलेज, चर्चगेट, मुंबई के सभागार में हिंदी दिवस मुख्य समारोह आयोजित किया गया. इस समारोह में शीर्ष कार्यपालकगण, स्टाफ सदस्य एवं उनके परिवार के सदस्य आदि उपस्थित थे.

श्री रामजीत सिंह, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.) ने स्वागत संबोधन में बैंक के कार्यपालक निदेशकों, सभी कार्यपालकों, स्टाफ सदस्यों और अतिथियों का स्वागत किया. माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह का हिंदी दिवस संदेश सभी को पढ़कर सुनाया गया.

अपने संबोधन में श्री लाल सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.) महोदय ने बैंक को राजभाषा कार्यान्वयन में प्राप्त विभिन्न पुरस्कारों पर चर्चा के साथ शुरुआत की. उन्होंने स्टाफ सदस्यों द्वारा हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए लागू योजनाओं से अवगत कराया. श्री विष्णु कुमार गुप्ता, मुख्य सतर्कता अधिकारी ने कहा कि राजभाषा के नियम, अधिनियम के अनुरूप प्रेरणा और प्रोत्साहन की नीति पर बैंक में राजभाषा कार्यान्वयन सराहनीय है. इस अवसर पर उन्होंने एक कविता पाठ भी किया. श्री निधु सक्सेना, कार्यपालक निदेशक ने अपने संबोधन में कहा कि हिंदी को एक अलग काम के रूप में न लेते हुए अपने दैनिक कामकाज में सहजता से शामिल करें ताकि हिंदी का लगातार प्रयोग सुनिश्चित कर सकें. श्री नितेश रंजन, कार्यपालक निदेशक ने सभा को संबोधित करते हुए हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित प्रतियोगिताओं के विजेता कार्यपालकगण एवं स्टाफ सदस्यों को बधाई दी. उन्होंने कहा कि हिंदी की विकास यात्रा में कई मील के पत्थर अभी बाकी हैं और इस दिशा में यूनियन बैंक ऑफ इंडिया का सदैव सक्रिय योगदान रहा है.

इस सुअवसर पर राजभाषा प्रभाग द्वारा प्रकाशित कार्टून बुक "यूनियन मुस्कान" का विमोचन किया गया. साथ ही केंद्रीय कार्यालय के 24 विभागों द्वारा बैंकिंग विषयों पर प्रकाशित संदर्भ साहित्य का विमोचन भी किया गया. साथ ही, बैंक द्वारा लागू मौलिक पुस्तक लेखन योजना के तहत सुश्री प्रतिमा द्वारा लिखित "डिजिटल बैंकिंग @ डिजिटल इंडिया" का भी विमोचन किया गया. केंद्रीय कार्यालय के विभागों को वित्तीय वर्ष 2022-23 के दौरान हिंदी में उत्कृष्ट कार्य हेतु विभाग-स्तरीय राजभाषा शील्ड प्रदान किए गए. इसी वित्तीय वर्ष हेतु विभागों के 3 कार्यपालकों को हिंदी टिप्पण लेखन के तहत एवं 32 कार्मिकों को वर्ष भर हिंदी में उत्कृष्ट कार्यनिष्पादन हेतु पुरस्कृत किया गया. हिंदी पखवाड़ा के दौरान आयोजित 9 हिंदी प्रतियोगिताओं के कुल 51 विजेता कार्यपालकों एवं स्टाफ सदस्यों को पुरस्कार से सम्मानित किया गया.

मुख्य कार्यक्रम और पुरस्कार वितरण के बाद हास्य कवि सम्मेलन सुप्रसिद्ध कवि श्री सुभाष काबरा, श्री रोहित शर्मा एवं सुश्री दीप्ति मिश्रा द्वारा प्रस्तुतियां दी गईं. तत्पश्चात् बैंक के स्टाफ सदस्यों द्वारा रंगारंग सांस्कृतिक प्रस्तुति दी गई. धन्यवाद ज्ञापन श्री गोकुलानंद दास, महाप्रबंधक (मा.सं.) द्वारा दिया गया. कार्यक्रम का संचालन श्री विवेकानंद, मुख्य प्रबंधक (रा.भा.) और सुश्री अनुराधा कांबले, वरिष्ठ प्रबंधक (रा.भा.) द्वारा किया गया.

यूनियन बैंक ऑफ इंडिया
Union Bank of India
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग, मानव संसाधन विभाग, केंद्रीय कार्यालय, मुंबई
अपनी भाषा, अपना देश। देता है, गौरव संदेश।
हिंदी दिवस समारोह 2023

आत्मनिर्भर भारत को अपनी भाषा की आवश्यकता

आत्मनिर्भर भारत का जो स्वप्न हमने देखना प्रारम्भ किया है, उसमें आत्मविश्वास अपनी भाषा से सतत जुड़ाव से ही मिल सकता है. आत्मनिर्भर भारत का भौतिक पक्ष लोक दक्षता, देशज ज्ञान, स्थानीय उत्पादों को महत्व देने पर टिका हुआ है. इस पक्ष को भी मातृभाषाओं एवं आत्म भाषाओं से जुड़ा नागरिक ही मजबूत कर सकता है. कालांतर में भाषा को लेकर भेदभाव उलझता गया और भारतीय भाषाएं अंग्रेजी की तुलना में न केवल अधिकारहीन होती गईं बल्कि आपस में भी उलझती गईं. परिणामस्वरूप राजभाषा अधिनियम 1963 की धारा 3(5) का उदय हुआ.

वर्तमान परिदृश्य में आत्मनिर्भर भारत अभियान द्वारा देश को सशक्त बनाने हेतु भारत को अपनी भाषाओं के मूल में लौटने की जरूरत है. भाषा मनुष्य जीवन की अनिवार्यता है. भारत एक भाग्यशाली देश है, जहां संस्कृत, तेलुगू, कन्नड़ा, तमिल, मराठी, हिंदी, गुजराती, मलयालम, पंजाबी आदि अनेक भाषाएं सदियों से भारतीय संस्कृति-परंपरा और जीवन संघर्षों को आत्मसात करते हुए अपनी भाषिक यात्रा में निरंतर आगे बढ़ रही है. भाषाओं की विविधता देश की अनोखी संपदा है, जिसकी शक्ति तरह-तरह के कोलाहल में उपेक्षित ही रहती है. इन सबके बीच व्यापक क्षेत्र में संवाद की भूमिका निभाने वाली हिंदी का जन्म एक लोक-भाषा के रूप में हुआ था. वह असंदिग्ध रूप से एक समृद्ध लोक भाषा थी, जिसमें न केवल आम जन बोलते थे, बल्कि सूर, कबीर, तुलसी, जायसी, मीरा, रैदास, रहीम, रसखान और जाने कितने ही महान कवियों ने ऐसा अमर साहित्य रचा, जो समय बीतने के साथ भी अर्थवत्ता में निरंतर ताजा बना रहा. 'भाखा' वाला उनका काव्य एक साथ आम जन से लेकर निपुण साहित्यकार तक सबके लिए अजस्र रस का स्रोत बना रहा और उसको सबने अपनाया, परंतु भाषा स्वभाव से ही समय-संदर्भ में परिचालित होती है. वह विभिन्न प्रभावों को आत्मसात करते हुए रूप बदलती रहती है.

समय बदला और अवधी, ब्रज, भोजपुरी, मैथिली आदि विभिन्न छवियों वाला समृद्ध लोक खिसक कर अनौपचारिक परिधि में चला गया और ठेठ खड़ी बोली औपचारिक केंद्र में आकर व्यवहार और साहित्य में काबिज हुई. भाषा का युग आया और भाखा बोली हो गई, पर इनके बीच कोई दुराव और वैमनस्य नहीं था. हिंदी देश के स्वतंत्रता संग्राम में शामिल हुई और जन-संवाद के सभी रूपों में भारत और भारतीयता को सुदृढ़ करती रही. हिंदी को संवैधानिक दर्जा मिला और उसके प्रयोग क्षेत्र का विस्तार होता रहा, तथापि सत्ता की भाषा अंग्रेजी के आगे इसे ठिठकना पड़ा.

अंग्रेजों के जाने के बाद भी औपनिवेशिक मानसिकता टिकी रही, क्योंकि नौकरशाही को उसका अभ्यास हो चुका था और निहित हित के चलते उसकी श्रेष्ठता की पैरवी भी होती रही. स्वराज का स्वाभिमान, दायित्व और गौरव 'आजादी' के अर्थ में स्वच्छंदता का रूप लेने लगा. परिणामस्वरूप हिंदी, जो एक व्यापक जन समुदाय की भाषा थी, सारे देश को जोड़ने वाली थी, अपने सामर्थ्य, सम्मान और प्रसार को नहीं पा सकी.

भाषा के प्रति कामचलाऊ दृष्टिकोण ने समाज को निरंतर देश की पहचान करने, उसके साथ जुड़ने और संस्कृति के प्रवाह में शामिल होने, भारत भाव को अपनाने की दृष्टि से कमजोर किया. भाषा को लेकर भेदभाव का विषय उलझता गया और राजनीति के स्वार्थ के बीच भारतीय भाषाएं अंग्रेजी की तुलना में न केवल अधिकारहीन होती गईं, बल्कि आपस में भी उलझ गईं. शिक्षा के माध्यम के प्रश्न को लंबित रखा गया. अंग्रेजी के वर्चस्व को अक्षुण्ण रखा गया. ज्ञान-विज्ञान, नीति आदि क्षेत्रों में भारतीय भाषाओं में विचार दृष्टि से क्षमता बढ़ाने की कोशिशें सतही बनी रहीं. इन चुनौतियों के बावजूद हिंदी की चेतना विस्तृत होती रही.

आज हिंदी की भूमिका ज्ञान, कला-कौशल और सामाजिक जीवन के संयोजन आदि में कितनी प्रभावी है, यह सुविदित है. चूंकि देश-काल स्थिर नहीं रहते, इसलिए भाषा का मानवीय उद्यम अनेक रूप लेता रहता है. जीवन-व्यापार में बदलाव आने के साथ-साथ भाषा की भूमिका में भी अनिवार्य रूप से बदलाव आता है. अत: समय बीतने के साथ संचार तकनीक में जो परिवर्तन हुआ उसके अंतर्गत भाषा के भी कई संस्करण होते गए. भाषिक उत्पादों की वाचिक से हस्तलिखित, फिर मुद्रित और अब डिजिटल प्रस्तुति ने न केवल उनके संकलन और संग्रह के उपायों को बदला है, बल्कि उसी के साथ भाषा-प्रयोग के रूप भी चमत्कारी रूप से बदले है.

संवाद भी दृश्य और श्रव्य विधाओं के अनेक रूपों में उपलब्ध होने लगा. संप्रेषण की प्रौद्योगिकी में हो रहे क्रांतिकारी बदलाव भाषा के साथ हमारे दैनंदिन बर्ताव को तेजी से बदल रहे हैं. इस बदलाव से साहित्य भी अछूता नहीं रहा. ब्लॉग, फेसबुक, वाट्सएप, ट्विटर जैसे किस्म-किस्म के माध्यम अभिव्यक्ति के साहित्यिक और गैर साहित्यिक 'फार्म' में सीधी पैठ कर रहे हैं. रचना और उसके पाठक के बीच का अंतराल घटता जा रहा है. कभी प्रकाशन की प्रक्रिया बड़ी थकाऊ, उलझाऊ और कई तरह से दुखी करने वाली हुआ करती थी और प्रकाशन के लिए प्रतीक्षा करनी पड़ती थी. अब रचनाकार और पाठक के बीच का रिश्ता तात्कालिक हुआ जा रहा है. यह परिदृश्य आकर्षक और विकर्षक, दोनों ही प्रकार का है. रचना में त्वरा के अपने खतरे है, पर आज के समय का यथार्थ कुछ ऐसा ही हुआ जा रहा है. भाषा-व्यवहार के अनेक आयामों में परिवर्तन आ रहा है. साथ ही भाषा के प्रति गैर

जिम्मेदार रवैया भाषा-लोप की चुनौती भी खड़ी करने वाला है.

आज आत्मनिर्भर भारत की दिशा में मुखर रूप से विचार किया जा रहा है. यह उद्यम देश को सशक्त बना सके, इसके लिए देश को उसकी भाषा के मूल में लौटने की जरूरत है. क्योंकि, देश की अस्मिता और संस्कृति की पहचान, परख, पोषण और प्रसार अपनी ही मिट्टी से निपजी भाषा में हो सकता है. हमारा अनुभव परिवेश से जुड़ा होता है और भूगोल भी संस्कृति को रचता है. ऐसी स्थिति में भाषा केवल शब्दों को लेकर अपनी भाषिक बस्ती ही नहीं बनाती है, वरन वह अर्थ का पूरा संसार भी रचती है. यह शब्द-अर्थ अपने साथ हजारों वर्षों की परंपरा लेकर आते हैं. हमारी परंपरा को ठीक-ठीक जानने- समझने, अभिव्यक्त करने के लिए हमारी अपनी भाषा ही उपयुक्त और सक्षम हो सकती है. यह उपयुक्तता और सक्षमता भारत के संदर्भ में हिंदी के पास है. हिन्दी की इस क्षमता को निखारने व भाषाई सौहार्द को बढ़ाने हेतु भारत सरकार द्वारा "भाषा शब्द सिंधु" के साथ एक सार्थक पहल प्रारम्भ की जा चुकी है.

विश्व में अनेक देशों का अनुभव यही संकेत देता है कि देश की अखंडता, एकता, समृद्धि और गतिशीलता सबके मूल में भाषा की शक्ति काम करती है. न्याय, शिक्षा, स्वास्थ्य और नागरिक जीवन के क्षेत्रों में स्वभाषा से ही आत्मनिर्भरता प्राप्त की जा सकती है और भाषाओं के बीच सौहार्द से ही अमृत काल का संकल्प देश को समृद्धि के पथ पर आगे ले जा सकता है. भारत की राष्ट्रीय अस्मिता और भूमंडलीकरण की भीड़-चेहरे में अपनी अक्षुण्ण पहचान को बनाए रखने के लिए हिंदी को अपने सद्प्रयासों से राष्ट्रभाषा का स्थान दिलाना ही होगा, जिसकी वह हर दृष्टि से अधिकारिणी भी है. आज यह सद्प्रयास भारत के प्रत्येक नागरिक को सदेच्छा से अपने-अपने स्तर से करना आवश्यक हो गया है. राष्ट्रकवि मैथिलीशरण गुप्त की पंक्तियों में हम कामना करते हैं-

मानस भवन में आर्यजन,
जिसकी उतारें आरती,

भगवान भारतवर्ष में,
गूँजे हमारी भारती.

कृष्ण कुमार यादव
यूनियन बैंक ज्ञान केन्द्र,
बेंगलूरु

वर्तमान परिदृश्य में राजभाषा हिंदी

प्रस्तावना : राजभाषा हिंदी, भारत की आत्मा और एकता का प्रतीक है. वर्तमान समय में, अब भारत वैश्विक मंच पर महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है, ऐसे में राजभाषा का महत्व भी अधिक बढ़ गया है. यह केवल भाषा ही नहीं है, बल्कि यह राष्ट्रीय भावना का प्रतीक भी है जो समृद्ध, वैविध्यपूर्ण भारतीय समाज को एक सामान्य धारा से जोड़ती है.

राजभाषा का सही प्रयोग हमारी सांस्कृतिक विविधता को समेटता है, सामाजिक एकता को बढ़ावा देता है, और अनेक भाषाओं के बीच संवाद को सुनिश्चित करता है. यह न केवल एक भाषा का सवाल है, बल्कि हमारे देश की अखंडता और सामाजिक सामंजस्यता का एक महत्वपूर्ण पहलू भी है. इसलिए, हमें इसे सुरक्षित रखने और बढ़ावा देने के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए. राजभाषा हिंदी को समृद्ध बनाने में हम सभी का सहयोग और समर्थन आवश्यक है.

राजभाषा हिंदी का महत्व : राजभाषा हिंदी का महत्व भारतीय समाज में अत्यधिक है. यह भारत की एकता और सांस्कृतिक विरासत का प्रतीक है. हिंदी को 14 सितंबर 1949 में भारतीय संविधान की राजभाषा के रूप में चुना गया था. इसका अर्थ है कि सरकारी कामकाज, सरकारी संस्थानों और सरकारी दस्तावेजों में हिंदी का प्रयोग होना चाहिए.

राजभाषा हिंदी के इस महत्व को समझने के लिए हमें भारत की भाषा- सांस्कृतिक विविधता को भी समझना होगा. भारत में कई भाषाएं बोली जाती हैं और हर भाषा का अपना महत्व है. लेकिन हिंदी भारत के विभिन्न हिस्सों में बोली जाती है और यह विभिन्न सांस्कृतिक जातियों और समुदायों को जोड़ती है.

राजभाषा हिंदी की भूमिका

सामाजिक एकता:- हिंदी सामाजिक एकता का प्रतीक है. यह भाषा विभिन्न क्षेत्रों और जातियों के लोगों को एक साथ लाती है और उन्हें एक दूसरे के साथ संवाद करने की संभावना प्रदान करती है.

सांस्कृतिक धरोहर:- हिंदी भारतीय सांस्कृतिक धरोहर का हिस्सा है. यह भाषा हमें हमारी धार्मिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत को समझने में मदद करती है.

आर्थिक विकास:- हिंदी में विशेषज्ञता प्राप्त करने से लोग आर्थिक रूप से भी मजबूत हो सकते है. हिंदी में उच्च शिक्षा के क्षेत्र में विकसित होने से लोग अधिक रोजगार के अवसर पा सकते हैं.

शिक्षा का माध्यम:- हिंदी भारत में शिक्षा का महत्वपूर्ण माध्यम है. अनेक विश्वविद्यालय और संस्थान भारत में हिंदी में शिक्षा प्रदान करते हैं.

राजनीति में भागीदारी:- हिंदी भारत की राजनीति में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है.

राजनीतिक जागरूकता के लिए हिंदी में संदेश पहुंचना आवश्यक है.

विज्ञान और प्रौद्योगिकी:- हिंदी में विज्ञान और प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में भी विकास हो रहा है. नई तकनीकी जानकारी को हिंदी में पहुंचाने से लोगों की जागरूकता में वृद्धि हो सकती है.

राजभाषा की संरक्षा और समृद्धि:- राजभाषा हिंदी की संरक्षा और समृद्धि के लिए सरकार और समाज को संयमित प्रयास करने की आवश्यकता है. साहित्यिक एवं विज्ञान के क्षेत्र में और भी अध्ययन और शोध की जरूरत है ताकि हम हिंदी को विश्व स्तर पर एक महत्वपूर्ण भाषा बना सकें. समाज में हिंदी के प्रति जागरूकता फैलाने, राजभाषा कार्यान्वयन और संस्कृति से जुड़े कार्यक्रमों को बढ़ावा देने के लिए उपायों की जरूरत है.

सरकार द्वारा उठाए गए कदम : 14 सितंबर, 1949 का दिन स्वतंत्र भारत के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण है. इसी दिन संविधान सभा ने हिंदी को संघ की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया था. इस निर्णय को महत्व देने के लिए और हिंदी के उपयोग को प्रचलित करने के लिए वर्ष 1953 के उपरांत प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है.

राजभाषा विभाग द्वारा सीडैक के सहयोग से तैयार किए गए लर्निंग इंडियन लैंग्वेज विथ आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (लीला) के मोबाइल ऐप का लोकार्पण भी किया गया. इस ऐप से देश भर में विभिन्न भाषाओं के माध्यम से जन सामान्य को हिंदी सीखने में सुविधा और सरलता होगी तथा हिंदी भाषा को समझना, सीखना तथा कार्य करना संभव हो सकेगा. हिंदी दिवस के अवसर पर सरकारी विभागों में हिंदी की प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाती हैं. साथ ही हिंदी प्रोत्साहन सप्ताह का आयोजन किया जाता है. हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देने के लिए सरकार ने अनेक पुरस्कार योजनाएं शुरू की हैं. सरकार द्वारा हिंदी के अच्छे कार्य के लिए "राजभाषा कीर्ति पुरस्कार योजना" के अंतर्गत शील्ड प्रदान की जाती है. हिंदी में लेखन के लिए "राजभाषा गौरव पुरस्कार" का प्रावधान है. आधुनिक ज्ञान विज्ञान में हिंदी में पुस्तक लेखन को प्रोत्साहन देने के लिए भी सरकार पुरस्कार प्रदान करती है. इन प्रोत्साहन योजनाओं से हिंदी के विस्तार को बढ़ावा मिल रहा है.

केंद्र सरकार के कार्यालय में हिंदी का अधिकाधिक उपयोग सुनिश्चित करने हेतु भारत सरकार के राजभाषा विभाग द्वारा उठाए गए कदमों के परिणामस्वरूप कंप्यूटर पर हिंदी में कार्य करना अधिक आसान एवं सुविधाजनक हो गया है. इसी क्रम में राजभाषा विभाग द्वारा वेब आधारित सूचना प्रबंधन प्रणाली विकसित की गई है जिसके माध्यम से सभी कार्यालयों में हिंदी के उत्तरोत्तर प्रयोग से संबंधित तिमाही प्रगति रिपोर्ट तथा अन्य रिपोर्ट राजभाषा विभाग को त्वरित गति से प्रेषित करना आसान हो गया है. सभी मंत्रालयों और विभागों ने अपनी वेबसाइट हिंदी में भी तैयार कर ली है. सरकार के विभिन्न मंत्रालय एवं विभागों द्वारा संचालित जन कल्याण की विभिन्न योजनाओं की जानकारी आम नागरिकों को हिंदी में मिलने से गरीब, पिछड़े और कमजोर वर्ग के लोग भी लाभान्वित होते हुए देश की मुख्य धारा से जुड़ रहे हैं.

देश की स्वतंत्रता से लेकर अब तक हिंदी में कई महत्वपूर्ण उपलब्धियां प्राप्त हुई हैं. भारत सरकार द्वारा विकास योजनाओं तथा नागरिक सेवाएं प्रदान करने में हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है. हिंदी तथा प्रांतीय भाषाओं के माध्यम से हम बेहतर जन सुविधा लोगों तक पहुंचा सकते हैं. इसके साथ ही विदेश मंत्रालय द्वारा 'विश्व हिंदी सम्मेलन' और अन्य अंतरराष्ट्रीय सम्मेलनों के माध्यम से हिंदी को अंतरराष्ट्रीय स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य किया जा रहा है. इसके अलावा प्रत्येक वर्ष सरकार द्वारा 'प्रवासी भारतीय दिवस' मनाया जाता है जिसमें विश्व भर में रहने वाले प्रवासी भारतीय भाग लेते हैं. विदेशों में रह रहे प्रवासी भारतीयों की उपलब्धियों के सम्मान में आयोजित इस कार्यक्रम से भारतीय मूल्यों का विश्व में और अधिक विस्तार हो रहा है. विश्वभर में करोड़ों की संख्या में भारतीय समुदाय के लोग एक संपर्क भाषा के रूप में हिंदी का इस्तेमाल कर रहे हैं. इससे अंतरराष्ट्रीय स्तर पर हिंदी को एक नई पहचान मिली है. यूनेस्को की सात भाषाओं में हिंदी को भी मान्यता मिली है.

हिंदी के महत्व को गुरुदेव रवींद्रनाथ टैगोर ने बड़े सुंदर रूप में प्रस्तुत किया था. उन्होंने कहा था, 'भारतीय भाषाएं नदियाँ है और हिंदी महानदी.' हिंदी के इसी महत्व को देखते हुए तकनीकी कंपनियां इस भाषा को बढ़ावा देने की कोशिश कर रही हैं. आज पूरी दुनिया में 175 से अधिक विश्वविद्यालयों में हिंदी भाषा पढ़ाई जा रही है. ज्ञान- विज्ञान की पुस्तकें बड़े पैमाने पर हिंदी में लिखी जा रही हैं. सोशल मीडिया और संचार माध्यमों में हिंदी का प्रयोग निरंतर बढ़ रहा है. भाषा का विकास उसके साहित्य पर निर्भर करता है. आज के तकनीकी युग में विज्ञान और इंजीनियरिंग के क्षेत्र में भी हिंदी में कार्य को बढ़ावा देना चाहिए ताकि देश की प्रगति में ग्रामीण जनसंख्या सहित सबकी भागीदारी सुनिश्चित हो सके. राजभाषा विभाग द्वारा राष्ट्रीय ज्ञान- विज्ञान मौलिक पुस्तक लेखन योजना के द्वारा हिंदी में ज्ञान- विज्ञान की पुस्तकों के लेखन को बढ़ावा दिया जा रहा है. इससे हमारे विद्यार्थियों को ज्ञान- विज्ञान संबंधी पुस्तकें हिंदी में उपलब्ध होगीं. हिंदी भाषा के माध्यम से युवाओं को रोजगार के अधिक अवसर भी उपलब्ध हो सकें, इस दिशा में निरंतर प्रयास भी जरूरी है.

निष्कर्ष : हम देखते हैं कि, वर्तमान परिदृश्य में राजभाषा हिंदी का महत्व कितना अधिक है. यह भाषा हमें सामाजिक, सांस्कृतिक, आर्थिक और राजनीतिक दृष्टिकोण से जोड़ती है और हमें अपनी विरासत को समझने में मदद करती है. इसलिए हमें हिंदी के प्रति समर्पण और सम्मान रखना चाहिए ताकि हम एक संगठित और विकसित भारत की ओर अग्रसर हो सकें.

जयश्री खापरे
क्षे.का., नागपुर

भारतीय शास्त्रीय भाषाएँ

शास्त्रीय भाषा अर्थात शास्त्रों की भाषा. ऐसे कई शास्त्र हैं, जो प्राचीन भाषाओं में लिखे गए है. अनेक धर्म शास्त्र, वेद, पुराण, उपनिषद संस्कृत भाषा में लिखे गए हैं. उसी प्रकार तमिल भाषा में 'संगम साहित्य' की रचना की गई है जो तमिल भाषा का सबसे प्राचीन साहित्य है.

तमिल में लिखे 'कंबन रामायण' को तमिल साहित्य में सबसे बड़ा महाकाव्य माना जाता है. पदिनेनकीलक्कणक्कु 18 कविताओं वाला एक आचारमूलक ग्रंथ है तथा यह तृतीय संगम साहित्य से संबंधित है. इन 18 कविताओं में महत्वपूर्ण कविता तमिल के महान कवि और दार्शनिक तिरुवल्लुवर द्वारा लिखित तिरुक्कुरल है. इसे तमिल साहित्य का पंचम वेद भी माना जाता है.

तेलुगु के आदिकवि नन्नय भट्टु ने संस्कृत महाभारत का अनुवाद "आंध्र भारतम" के नाम से तेलुगु पद्य में किया था. यह अनुवाद होते हुए भी स्वतंत्र कृति के रूप में दिखाई देती है. विजयनगर काल को तेलगू साहित्य का स्वर्ण युग कहा जाता था.

उसी प्रकार कन्नड़, मलयालम, ओड़िया भाषाओं का इतिहास भी हजारों वर्ष पुराना है और इन भाषाओं के अनेक साहित्यिक ग्रंथ आज भी प्रासंगिक हैं. ओड़िया भाषा के प्रथम महान कवि झंकड़ के सारला दास रहे, जिन्हें 'ओडिशा के व्यास' के रूप में जाना जाता है. इन्होंने देवी की स्तुति में 'चंडी पुराण' व 'विलंका रामायण' की रचना की थी. 'सारला महाभारत' आज भी घर-घर में पढ़ी जाती है. अर्जुन दास द्वारा रचित 'राम-विभा' को ओड़िया भाषा की प्रथम गीतकाव्य या महाकाव्य माना जाता है

भारत सरकार के मानदंड के अनुसार, शास्त्रीय भाषा ऐसी भाषा होती है जिसका कम से कम 1500 से 2000 वर्ष पुराना इतिहास हो, साहित्य ग्रंथों एवं वक्ताओं की प्राचीन परंपरा हो और साहित्यिक परंपरा मौलिक हो, अर्थात् किसी भाषा समुदाय से उधार नहीं लिया गया हो. इन भाषाओं से जुड़े साहित्यिक ग्रंथों में कुछ विशेषताएं ऐसी होनी चाहिए जो किसी अन्य संस्कृति का विरोध ना करती हो. प्राचीनतम मौलिक भाषा होने के बावजूद इनका प्रयोग साधारणत: परिवर्तित रूप में हो रहा है. शास्त्रीय भाषाएं उन क्षेत्रों की लुप्त हो चुकी सभ्यता और संस्कृति को प्रदर्शित करती हैं.

किसी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित करने के अनेक लाभ हैं इसमें सर्व प्रमुख यह है कि सरकार उन भाषाओं के विकास और पुनरुत्थान के लिए आयोगों का गठन करती है. उस भाषा के विकास में लगे हुए संस्थानों को मान्यता देती है और उन्हें वित्तीय सहायता देती है. उस भाषा पर गहन अध्ययन एवं शोध के लिए अनुसंधान संस्थानों का गठन करती है.

भारत सरकार ने दक्षिण भारतीय भाषा तमिल को सर्वप्रथम शास्त्रीय भाषा घोषित किया था. तत्पश्चात अद्यावधि 6 भारतीय भाषाओं को शास्त्रीय भाषा के रूप में सूचीबद्ध किया जा चुका है.

शास्त्रीय भारतीय भाषाओं में प्रतिष्ठित विद्वानों के लिए प्रत्येक वर्ष दो प्रमुख अंतरराष्ट्रीय पुरस्कार दिए जाते हैं. शास्त्रीय भाषाओं में अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र भी स्थापित किए गए हैं. विश्वविद्यालय अनुदान आयोग इन भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए अनुसंधान परियोजनाओं को अनुदान राशि आबंटित करता है.

अगले कुछ वर्षों में, अन्य भारतीय भाषाओं को भी शास्त्रीय भाषा का दर्जा दिए जाने की मांग की जा रही है, जिनमें पाली, बांग्ला, मराठी और मैथली शामिल हैं.

इससे रोजगार के नए अवसर पैदा होते हैं. इसके अलावा यूजीसी इन भाषाओं से जुड़े अनुसंधान केंद्रों की स्थापना भी करता है ताकि इनसे जुड़े साहित्यिक ग्रंथों एवं इनका इतिहास संजोया जा सके. संस्कृति मंत्रालय ने कुछ संस्थानों को सूचीबद्ध किया है जो शास्त्रीय भाषाओं के लिए समर्पित हैं यथा:- तमिल के लिए, सेंट्रल इंस्टीट्यूट ऑफ क्लासिकल तमिल, चेन्नई; संस्कृत के लिए राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान, नई दिल्ली, महर्षि सांदीपनी राष्ट्रीय वेद विद्या प्रतिष्ठान उज्जैन, राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति और लाल बहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, नई दिल्ली; तेलुगु और कन्नड़ के लिए शिक्षा मंत्रालय द्वारा स्थापित केंद्रीय भारतीय भाषा संस्थान में संबंधित भाषाओं में अध्ययन के लिए उत्कृष्टता केंद्र.

शास्त्रीय भाषाओं को जानने और अपनाने से विश्व स्तर पर उस भाषा को पहचान और सम्मान मिलता है. वैश्विक स्तर पर उस प्राचीन संस्कृति का प्रसार होता है. साथ ही इससे उन प्राचीन ऐतिहासिक तथ्यों को जानने और समझने का अवसर मिलता है.

इस प्रकार किसी प्राचीन भाषा को, किसी प्राचीन संस्कृति से, साहित्य से जुड़ी भाषा को शास्त्रीय भाषा घोषित कर देने से उस भाषा के विकास, उस भाषा से जुड़े साहित्यिक ग्रंथों पर शोध और ऐतिहासिक तथ्यों को लोगो के सामने लाने में सुविधा होगी. लोगों को प्राचीन लुप्त हो चुकी संस्कृति के बारे में अधिक गहराई से जानने और समझने का अवसर प्राप्त होगा. शास्त्रीय भाषाओं की जानकारी से लोग अपनी संस्कृति को और बेहतर तरीके से समझ सकेंगे तथा प्राचीन संस्कृति और साहित्य से बेहतर तरीके से जुड़ सकेंगे.

मनोज कुमार लेंका
क्षे.का., पुणे मेट्रो

प्रौद्योगिकी और हिंदी

आवश्यकता आविष्कार की जननी है. इसका एक बहुत बड़ा उदाहरण है प्रौद्योगिकी. प्रौद्योगिकी न केवल उच्च स्तरीय तकनीकी संस्थानों में, बल्कि रोजमर्रे के कार्यों में भी एक सार्थक और सहज माध्यम है. चाहे हम बात करें कृत्रिम बुद्धिमत्ता की या हम सभी के हाथों में रखे मोबाइल फोन की हम हर स्तर पर प्रौद्योगिकी पर निर्भर हैं. प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में ऐसे-ऐसे अविष्कार हुए जिन्होंने हमारा जीवन और सरल बना दिया. जैसे कि यदि हमें अपने किसी प्रिय मित्र, रिश्तेदार इत्यादि को कोई संदेश भेजना है तो पहले डाकघर द्वारा पत्र के रूप में संदेश प्रेषित किया जाता था. फिर आया मोबाइल फोन का दौर. आप अपने प्रियजनों से फोन पर बात करके उन्हें अपने संदेश दे सकते हैं. पर उस समय ऐसा करने के लिए आपको बहुत पैसे खर्च करने पड़ते थे.

कंप्यूटर के दौर में अर्थात् ई-मेल के माध्यम से इस समस्या का समाधान मिला. हम जिसे भी कोई महत्वपूर्ण संदेश भेजना चाहते हैं, केवल उसकी ई-मेल आईडी के जरिये कुछ ही सेकंड में उस तक पहुँचा सकते हैं. शुरुआत में ई-मेल के बारे में लोगों को अधिक जानकारी नहीं होती थी. इसलिए वे संदेश भिजवाने के लिए इंटरनेट कैफे जाया करते थे, अथवा डाकघर द्वारा पत्र भेजना ही पसंद करते थे. ऐसे में लोगों के बीच संवाद को और सहज बनाने के लिए मोबाइल फोन में इंटरनेट की सुविधा का अविष्कार किया गया. इसके बाद 2G, 3G, 4G, 5G इत्यादि के बारे में तो हम सब भली भाँति जानते हैं. आज हम एक ही जगह पर बैठ कर, एक ही समय में एक नहीं अपितु लाखों लोगों तक अपने संदेश पहुँचा सकते हैं पर वह कहते हैं न हर चीज़ की हद है. किसी भी चीज की अति, केवल बर्बादी ही लाती है. आज हम देखते हैं कि हर व्यक्ति अपना अधिकतम समय खुद को या परिवार को न दे कर अपने मोबाइल को देता है. जितना समय हम मोबाइल को देते हैं उस समय को यदि हम किसी अन्य उपयोगी विषय में दें तो वह समय हमारे चरित्र में, हमारे सामाजिक सम्मान में और हमारी बुद्धिमत्ता में वृद्धि लाएगा.

बहुत से लोगों में यह धारणा है कि प्रौद्योगिकी केवल अंग्रेज़ों के लिए है और अंग्रेज़ी में ही इसको किया जा सकता है. किंतु ऐसा नहीं है, प्रौद्योगिकी कभी भी भाषा के आधार पर सीमित नहीं रहती. हिंदी भाषा में भी इसका सहजता पूर्वक उपयोग किया जा सकता है. और इसके लिए हमें किसी भी बड़े प्रौद्योगिक प्रशिक्षण संस्थान में जाने की आवश्यकता नहीं है. आज हम बड़ी ही आसानी से अपने कंप्यूटर में, मोबाइल में हिंदी में कार्य कर सकते हैं.

कंप्यूटर में हिंदी लिखने के लिए अलग से प्रशिक्षण की आवश्यकता होती थी. किंतु आज ऐसे बहुत से माध्यम हैं जिनकी मदद से बड़ी ही सरलता से हिंदी में कार्य कर सकते हैं. इनमें सबसे पहला है - फोनेटिक टाइपिंग, जिसके माध्यम से कंप्यूटर में हिंदी में कार्य करना काफी आसान कर दिया है. आप सामान्य तौर पर कंप्यूटर में हिंदी टाइप करें और स्क्रीन पर हिंदी लिखा हुआ मिलेगा. इसके अतिरिक्त, गूगल हिंदी इनपुट सॉफ्टवेयर भी आपको इस कार्य हेतु उपयोगी साबित हो सकता है. इस माध्यम ने हमें राजभाषा नियमों का अनुपालन करने और हिंदी में पत्राचार को बढ़ाने में बहुत सहायता की.

अब आता है मोबाइल में गूगल ट्रांसलेट. इस ऐप के माध्यम से भी आप किसी भी भाषा में लिखे गए लेख/कविता/विज्ञापन/पत्र इत्यादि को हिंदी में अथवा किसी भी अन्य भाषा में अनुवाद कर सकते हैं.

प्रौद्योगिकी का अगला माध्यम जिससे हम एक साथ एक समूह में संदर्भ कर सकते हैं, वार्तालाप कर सकते हैं, वह है- वीडियो कान्फरेंसिंग. यह माध्यम कोविड-19 महामारी के समय संपूर्ण विश्व में बहुत ही उपयोगी रहा और आज तक हम इससे प्रभावित हैं. हर बार यह संभव नहीं है कि हम प्रत्यक्ष रूप से हर जगह उपस्थित रह सकें. किंतु वीडियो कान्फरेंसिंग की मदद से हम किसी भी वक़्त, कहीं से भी, किसी भी बैठक में भाग ले सकते हैं.

केवल देश में ही नहीं, अपितु विदेश में भी हिंदी में आप अपनी बात रख सकते हैं. आपको अपनी भाषा समझाने के लिए अब किसी द्विभाषीय अनुवादक की आवश्यकता नहीं है. प्रौद्योगिकी और कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से आपकी हिंदी में कही हुई बात विदेश में स्थित किसी अन्य भाषा भाषी व्यक्ति को उनकी भाषा में अनुवादित तौर पर मिलेगी जिससे वह आपकी कही हुई बात को आसानी से समझ सकता है.

प्रौद्योगिकी का नवीनतम आविष्कार है कृत्रिम बुद्धिमत्ता अर्थात- आर्टिफ़िशियल इंटेलिजेंस. आज कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग लोगों में बहुत ज्यादा चलन में है.

ऐसे ही बहुत से माध्यम हैं जो हिंदी में कार्य करने में बहुत सहायक हैं. हमारे बैंक के दृष्टिकोण से देखें तो "कोर राजभाषा सॉल्यूशन" एक ऐसा माध्यम है जो हमें बहुत से कार्य हिंदी में करने में सहायक है- जैसे आवक तथा जावक पत्रों की सूची दर्ज करना तथा उन्हें अपलोड करना, बैंक में विभिन्न स्तरों पर संपादित पत्रिकाएं, गृह पत्रिकाएं, शब्दकोश देखना, रोज़ एक हिंदी शब्द सीखें कालम से हर रोज़ हम एक नया हिंदी शब्द उसके अंग्रेज़ी अनुवाद के साथ सीख सकते हैं.

आइए हम हिंदी को अपने दैनिक काम-काज में अपनाने में अपनी रुचि दिखाएँ. यदि शाखा में पदस्थ सभी कर्मचारी/अधिकारी केवल अपना काम हिंदी में करना शुरू कर दें तो हमारी शाखा आदर्श शाखा के दर्जे में गिनी जाएगी जो कि हमारे लिए गर्व की बात होगी.

राहुल लखानी
क्षे.का., रायपुर

भाषा एवं समाज का संबंध

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है. यह हमने अपने जीवन में कई बार सुना है. यदि देखा जाए तो मनुष्य और जानवर के बीच का मुख्य अंतर बुद्धि का है, जो कि सामाजिक मूल्यों के माध्यम से ही विकसित हो सकती है. सामाजिक मूल्य एक या दो दिन में नहीं, सदियों के विकासक्रम में विकसित होते हैं. इन मूल्यों को अगली पीढ़ियों तक पहुँचाने का एकमात्र माध्यम भाषा ही है. अत: कहा जा सकता है, कि भाषा किसी भी समाज की आधारशिला होती है.

मानव सभ्यता के प्रारंभिक दिनों में शिक्षा अधिकतर मौखिक संचार के माध्यम से दी जाती थी. मौखिक शिक्षा की अनूठी बात यह है कि अगली पीढ़ी तक ज्ञान और विचारों का पहुँचना, वक्ता और श्रोता की क्षमता पर निर्भर करता है. अत: कोई संदेश या विचार जितने अधिक स्तरों से गुजरेगा उसमें परिवर्तन की संभावना उतनी अधिक होगी. यही कारण है कि आज हमें विश्वपटल पर इतने प्रकार की भाषाएं देखने को मिलती हैं.

भारत, जिसे आश्चर्यजनक विविधताओं वाले उपमहाद्वीप के रूप में वर्णित किया जाता है, कई भाषाओं का घर है, जो यहाँ के समाज की सांस्कृतिक समृद्धता का प्रतीक है. वर्तमान में जहाँ हिंदी और अंग्रेजी आधिकारिक भाषाओं के रूप में काम करती हैं, वहीं देश में 22 आधिकारिक तौर पर मान्यता प्राप्त भाषाएं और 1600 से अधिक बोलियां है.

भारत की भाषाई विविधता अद्वितीय है जोकि केवल भाषाओं तक ही सीमित नहीं है बल्कि लिपियों में भी देखी जा सकती है. देवनागरी लिपि का उपयोग हिंदी और संस्कृत के लिए किया जाता है और अन्य भाषाओं की अपनी लिपियाँ हैं, जैसे गुरमुखी, तमिल, तेलुगु और बंगाली इत्यादि. प्रत्येक भाषाई समुदाय की एक विशिष्ट सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहचान है, जो उसकी भाषा के साथ घनिष्ठ रूप से जुड़ी है. अगर ध्यान से अध्ययन करें तो हमें अधिकतर भारतीय भाषाओं की समानता भी देखने को मिलती है. जो इनकी वर्णमाला की समानता में दृष्टिगोचर है.

भारतीय समाज में भाषा किस प्रकार गहराई से अंतर्निहित है, इसके कुछ प्रमुख पहलू निम्नलिखित है:

सांस्कृतिक पहचान: अक्सर व्यक्ति अपनी मातृभाषा पर गर्व करते हैं और इसे सांस्कृतिक जुड़ाव के प्रतीक के रूप में उपयोग करते हैं. आम तौर पर ऐसा देखा गया है कि जब एक समान बोलचाल की भाषा के दो अनजान लोग भी अपने क्षेत्र से बाहर किसी अन्य स्थान पर मिलते हैं तो वे अन्य लोगों की तुलना में आपस में अधिक जुड़ाव महसूस करते हैं, क्योंकि उनके लिए बातचीत शुरू करना आसान होता है.

भाषाई विरासत: कई भारतीय भाषाओं की जड़ें प्राचीन हैं, जो सदियों से साहित्य, दर्शन और ज्ञान को संरक्षित करती रही हैं. उदाहरण के लिए, संस्कृत केवल एक भाषा नहीं बल्कि शास्त्रीय ग्रंथों और धार्मिक ग्रंथों का भंडार है और साथ ही इसका प्रभाव अन्य भाषाओं पर भी देखा जा सकता है. अधिकतर पुरातन साहित्य संस्कृत और संस्कृत आधारित भाषाओं में ही वर्णित है. कई अन्य भारतीय भाषाएँ काफी प्रचीन हैं और समय के प्रवाह के साथ विकसित हुई हैं. पर सभी भारतीय भाषाओं, साहित्य और सामाजिक मुल्यों में काफी समानता को देखा जा सकता है.

विविधता में एकता: जहाँ भारत अपनी भाषाई विविधता के लिए प्रसिद्ध है, वहीं यह विविधताओं में एकता के लिए भी उतना ही प्रसिद्ध है. भारतीय संविधान भी भाषाई विविधता के महत्व और भाषाओं की रक्षा और प्रचार की आवश्यकता को समझता है. यहाँ तक कि हमारे माननीय प्रधानमंत्री जी ने भी सालों से चली आ रही अंग्रेजी भाषा की मानसिक गुलामी को दूर करने के लिए स्थानीय भाषाओं के उपयोग की वकालत की है, ताकि अंग्रेजी से असहज लोग विकास की इस दौड़ में पीछे न रह जाएं.

शिक्षा का माध्यम: किसी भी समाज में अक्सर भाषा ही शिक्षा का माध्यम निर्धारित करती है. जो छात्र प्राथमिक शिक्षा अपनी मातृभाषा में ही प्राप्त करते हैं, वे जटिल अवधारणाओं के प्रति गहरी समझ विकसित कर करते हैं. बाद में मातृभाषा की यही समझ उन्हें अन्य किसी भी भाषा को समझने में भी सहायता प्रदान करती है.

राजनीतिक और सामाजिक आंदोलन: भारत के इतिहास में विभिन्न राजनीतिक और सामाजिक आंदोलनों में भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. 1956 में राज्यों के पुनर्गठन के दौरान भाषाई राज्यों की मांग इसका उल्लेखनीय उदाहरण है.

भारत में भाषाई विविधता की समृद्धि के बावजूद, कई अहम चुनौतियाँ बनी हुई है :

विलुप्ति का ख़तरा: बड़ी भाषाओं और शहरीकरण के प्रभुत्व के कारण कई कम ज्ञात भाषाएँ और बोलियाँ विलुप्त होने का खतरा है. आज के समय में माता-पिता इस बात पर गर्व करते है कि उनका बच्चा कितनी अच्छी अंग्रेजी बोलता है और अपनी मातृभाषा के प्रयोग करने से उसे हतोत्साहित करते हैं. यहाँ तक कि कई विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में भी विदेशी भाषाओं को ही प्राथमिकता दी जा रही है. इन सभी कारणों से स्थानीय भाषाओं का प्रयोग कम होता जा रहा है. अंग्रेजी भाषा को दिया जाने वाला आर्थिक प्रोत्साहन और भी कई तरह की असमानताएँ पैदा कर रहा है. इसी कारण से कम-ज्ञात भाषाओं के बोलने वालों के लिए अवसर भी सीमित हो रहे हैं.

स्क्रिप्ट आधुनिकीकरण: कुछ लिपियों को डिजिटल युग के अनुरूप ढलने में चुनौतियों

का सामना करना पड़ा है, जिससे प्रौद्योगिकी और संचार में उनके उपयोग में भी बाधा आ रही है. बढ़ते वैश्वीकरण के साथ, भाषाओं की विविधता कम होती जा रही है. यह अनुमानित है कि आगामी वर्षों में संचार में उन्नति के साथ, भाषाओं की विविधता और कम हो जाएगी और केवल कुछ ही भाषाएँ प्रचलन में रह पाएंगी. इससे आज के समाज में दृश्मान सांस्कृतिक विविधता भी कम हो जायेगी. परिणामस्वरूप हमारे देश की ऐतिहासिक संस्कृति, वैश्वीकरण के प्रभाव के कारण एक मिश्रित संस्कृति बनने की राह पर है. इसलिए भाषाई विविधता को संरक्षित करने के प्रयासों में सरकारी पहल, शैक्षिक सुधार और जमीनी स्तर के आंदोलन के साथ साथ, कई विभिन्न सांस्कृतिक संगठन लुप्तप्राय भाषाओं के दस्तावेजीकरण, संग्रह और पुनरुद्धार के लिए अथक प्रयास कर रहे है.

निष्कर्ष : भाषाएँ केवल संचार का साधन ही नहीं; वे सांस्कृतिक इतिहास की पहचान का भंडार भी हैं. ये देश की जीवंत विविधता को प्रतिबिंबित करती हैं और नागरिकों के लिए गर्व का स्रोत हैं. आज भाषाओं और समाज के बीच गहरे संबंध को पहचानने की आवश्यकता है, क्योंकि ये भाषाएँ एक ऐसे राष्ट्र की जटिल कशीदाकारी बुनती रहती हैं, जो विविधता में एकता का जश्न मनाता है. भाषाई विविधता का संरक्षण और प्रचार करना केवल एक भाषाई प्रयास नहीं है, बल्कि सांस्कृतिक बहुलवाद और समावेशिता के प्रति देश की प्रतिबद्धता का एक प्रमाण है. उभरते वैश्विक परिदृश्य में, भारतीय भाषाओं का खजाना लचीलेपन, सांस्कृतिक विरासत और राष्ट्र की स्थायी भावना का प्रतीक बना हुआ है. भविष्य की स्थिती का पूर्वानुमान करते हुए यह और भी जरूरी है कि हम मातृभाषाओं के प्रयोग को प्रोत्साहन दें ताकि हम अपनी सामाज की सांस्कृतिक विरासत को विलुप्त होने से बचा सकें.

प्रतीक जैन
यू.एल.ए., गुरुग्राम

भाषा और व्यक्तित्व विकास

भाषा के बारे में एक रुचिकर बात यह है कि यह हमारे परिवेश को समझने के तरीके को आकार देती है. दूसरे शब्दों में, भाषा वास्तविकता को समझने के हमारे तरीके को बदल सकती है. यह अजीब लग सकता है कि भाषा वास्तविकता की हमारी धारणा पर कैसे प्रभाव डालती है? भाषा हमारे समय, दूरी, स्थान, रंग और वस्तुओं को समझने के तरीके को बदल देती है और बिना किसी उपकरण के संपूर्ण वास्तविकता को समझने में सहायता करती है.

एक बच्चा भाषा के आधार पर अपने व्यक्तित्व को समझने और बदलने में सक्षम नहीं होता है. फिर भी, एक वयस्क के रूप में, जब भी हम कोई नई भाषा सीखना शुरू करते हैं, तो हम सिर्फ व्याकरण और शब्दावली को नहीं समझते हैं बल्कि अपनी भाषा के आधार पर कई चीजें बदल देते हैं. उदाहरण के लिए, चीनी जैसी एक अलग भाषा में, ग्यारह का उच्चारण दस-एक के रूप में किया जाता है. यह बच्चों के लिए एक आसान तरीका हो सकता है.

जब हम किसी नई भाषा को सीखने में गहराई से उतरते हैं, तो हम अक्सर लोगों के सांस्कृतिक पहलुओं से रूबरू होते हैं. इससे मेरा तात्पर्य उन सांस्कृतिक पहलुओं से है जहां की मूलत: वह भाषा है.

इसलिए, जब हम किसी अन्य भिन्न भाषा में किसी चीज़ के बारे में सोचना शुरू करने का प्रयास करते हैं, तो पहले उल्लिखित सभी तत्व काम में आते हैं और वे विचार प्रक्रिया के परिणाम को बदल देते हैं. दूसरे शब्दों में, भाषा में बदलाव से विकास और संबंधित आउटपुट और बातचीत की सामान्य दिशा बदल जाती है, जो लंबे समय तक प्रयोग करने पर अनिवार्य रूप से व्यवहार को बदल देती है.

भारत जैसे देश में दूसरी भाषा बोलना एक आम बात है. फिर भी, हम उल्लिखित गुणों में कोई बड़ा बदलाव नहीं देख पाएंगे, जो फिर से सांस्कृतिक पहलू का कारण हो सकता है. यदि सभी नहीं, तो अधिकांश भारत की संस्कृतियों में एक ही मूल की संस्कृति में बस थोड़ा सा बदलाव होता है. लेकिन फिर भी, नियमित रूप से एक दूसरे या तीसरे या कुछ असाधारण लेकिन प्रभावशाली मामले में चार या अधिक भाषाओं का उपयोग करने से हमारे अलग-अलग चीजों को देखने या समझने का तरीका बदल सकता है.

भाषा स्पष्ट रूप से बहुत महत्वपूर्ण है. यह न केवल विचारों और धारणाओं को संप्रेषित करने का एक साधन है बल्कि यह मित्रता, सांस्कृतिक संबंध और आर्थिक रिश्ते भी बनाती है. भाषा का महत्व हमारे रोजमर्रा के जीवन के हर पहलू और बातचीत के लिए आवश्यक है. हम अपने आसपास के लोगों को यह बताने के लिए भाषा का उपयोग करते हैं कि हम क्या महसूस करते हैं, हम क्या चाहते हैं? हम विभिन्न स्थितियों में अपने शब्दों, हाव-भाव और आवाज के लहजे से प्रभावी ढंग से संवाद करते हैं. क्या हम एक छोटे बच्चे से वही शब्द बोलेंगे जो हम एक व्यावसायिक बैठक में करते हैं? एक-दूसरे के साथ संवाद

करने, बंधन बनाने, टीम वर्क करने आदि में सक्षम होना वह गुण है जो इंसानों को अन्य पशु प्रजातियों से अलग करता है.

हम अक्सर देखते हैं कि जब हम अपनी मातृभाषा के अलावा कोई अन्य भाषा बोलते हैं तो हमारा व्यवहार बदल जाता है. हम सामान्य से अधिक ज़ोर से बोलते हैं या किसी विशेष भाषा में अपनी शारीरिक भाषा का अधिक या कम उपयोग करते हैं. अधिकांश बहुभाषी या बहुसांस्कृतिक लोग इस बात से सहमत होंगे. ऐसा इसलिए है क्योंकि व्यक्तित्व और भाषा के बीच एक निश्चित संबंध मौजूद है.

लोग जिस भाषा को बोलते हैं उसके आधार पर उनके व्यक्तित्व में बदलाव की संभावना होती है. यह भाषा और इसकी संस्कृति के प्रति लोगों की धारणाओं के कारण है. यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि हम किसी विदेशी भाषा की तुलना में अपनी मातृभाषा में बोलने में अधिक आत्मविश्वास महसूस करते हैं.

हम किसी भाषा को कैसे समझते हैं, यह निर्धारित करता है कि हम उस भाषा के साथ कैसा व्यवहार करते हैं. सीधे शब्दों में कहें तो, किसी विशेष भाषा के बारे में हमारी जो धारणाएँ होती हैं, वे हमको एक निश्चित तरीके से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करती हैं. उदाहरण के लिए, यदि हम भाषा को शिष्टता से जोड़ते हैं, तो हम इसे बोलते समय सामान्य से अधिक सुरुचिपूर्ण महसूस कर सकते हैं. यह हमको बिना एहसास हुए भी सुरुचिपूर्ण ढंग से व्यवहार करने के लिए प्रेरित करेगा. यदि हम स्पैनिश को एक सामाजिक भाषा मानते हैं, तो स्पैनिश बोलने वालों के साथ बातचीत करते समय या स्पैनिश भाषा का उपयोग करते समय हम अधिक मिलनसार हो सकते हैं.

हमारे अनुभव हमारे व्यक्तित्व को कैसे प्रभावित करते हैं?

यदि हम स्कूल में दूसरी भाषा के रूप में अंग्रेजी सीख रहे हैं, तो हम पाठ्यपुस्तकों से शब्दावली और व्याकरण सीखते हैं. हमको यह अपनी मूल भाषा की तुलना में अधिक औपचारिक भी लग सकती है. इसके अलावा, क्या होगा यदि हमारा शिक्षक बहुत प्रेरणादायक नहीं था या उसने हमको बहुत अधिक होमवर्क दिया था? हम अंग्रेजी को किसी उबाऊ, कठिन या अरुचिकर चीज़ से जोड़ सकते हैं. इस मामले में, हम पर अंग्रेजी बोलने में अधिक दबाव या असहजता महसूस होने की संभावना है, जो बाहर भी दिखाई देने की संभावना है.

दूसरी ओर, यदि हम अपने अंग्रेजी बोलने वाले दोस्तों से अंग्रेजी सीखते हैं, तो हमारा अनुभव बहुत अलग हो सकता है. हमको यह अधिक अनौपचारिक, दिलचस्प और प्रासंगिक लग सकती है, जो हमको अधिक आत्मविश्वास से बोलने और अधिक सकारात्मक व्यवहार करने में सक्षम बना सकता है. तो, व्यक्तित्व और भाषा के बीच एक मजबूत संबंध है.

हम स्वयं को कैसे देखते हैं, इसका हमारे व्यक्तित्व और भाषा प्रदर्शन को प्रभावित करना

जब हम दूसरी भाषा बोलते हैं तो हम स्वयं को कैसे देखते हैं, यह भी हमारे व्यक्तित्व को प्रभावित करता है. जब हम ऐसे लोगों से बात करते हैं जिनका स्तर हमारे जैसा ही है, तो हम बिना डरे अपनी राय व्यक्त कर सकते हैं. इसके विपरीत यदि हम जो कह रहे हैं उसे समझने के लिए उन्हें अतिरिक्त प्रयास करना पड़ रहा है, यह कल्पना करना कठिन नहीं है कि बोलना असहज हो जाएगा.

जो लोग द्विभाषी हैं और दो भाषाएँ बोलते हैं, वे भाषा बदलने पर अनजाने में अपना व्यक्तित्व बदल सकते हैं. भाषा में परिवर्तन से विकास, संबंधित आउटपुट और बातचीत की सामान्य दिशा बदल जाती है, जो अंततः लंबे समय में व्यवहार को बदल देती है. भाषा सांस्कृतिक विचारों को बदल देती है, जिससे विचार प्रक्रिया बदल जाती है, जिसके परिणामस्वरूप व्यवहार पैटर्न बदल जाता है. दीर्घावधि में अगली संभावना व्यक्तित्व में परिवर्तन की हो सकती है.

भारत एक ऐसा देश है जहां ज्यादातर लोग कम से कम 2 भाषाएं बोलते हैं. भारत जैसे देश में दूसरी भाषा बोलना आम बात है. फिर भी, हम व्यक्तित्व में कोई बड़ा बदलाव नहीं देख पाएंगे, जो सांस्कृतिक पहलुओं के कारण हो सकता है. भारत की अधिकांश, यदि सभी नहीं तो, संस्कृतियों में एक क्षेत्र से दूसरे क्षेत्र, एक राज्य से दूसरे राज्य में बस थोड़ी सी भिन्नता होती है. फिर भी, नियमित रूप से एक, दूसरी या तीसरी या कुछ असाधारण मामलों में चार या अधिक भाषाओं का उपयोग करने से हमारे चीजों को समझने या विभिन्न स्थितियों को समझने के तरीके में बदलाव आ सकता है.

बहुभाषी होने से हमें दुनिया को और भी अधिक समझने में मदद मिलती है. विभिन्न प्रकार के लोगों, क्षेत्रों, संस्कृतियों, जीवनशैली आदि से बहुत अधिक संपर्क होता है और इसलिए हम लोगों को बेहतर ढंग से समझने का प्रयास करते हैं. यह हमें विभिन्न पृष्ठभूमियों से आने वाले अन्य लोगों को अधिक स्वीकार करने योग्य बनाता है. यह धीरे-धीरे हमें बेहतर निर्णय लेने वाला बनाता है. हम दुनिया को अलग ढंग से समझने लगते हैं. विशेष रूप से जब हम अपने देश के लिए विदेशी भाषाओं के संपर्क में आते हैं, तो हम अंततः दुनिया को सीमा-रहित देखना शुरू कर देते हैं. इससे दया, स्वीकार्यता, जिज्ञासा की भावना भी विकसित होती है और व्यक्ति अधिक बहिर्मुखी बनता है. यह हमें सिर्फ एक देश का नहीं, बल्कि दुनिया का नागरिक होने का एहसास कराता है.

आकर्षक तथ्य: 5 साल की उम्र तक बच्चों को जितनी संभव हो, उतनी भाषाएँ सिखाई जा सकती हैं. वे वयस्कों की तुलना में बहुत आसानी से भाषाएँ सीख लेते हैं और इससे उनके संज्ञानात्मक विकास में मदद मिलती है. जिन बच्चों को अधिक भाषाओं का अनुभव होता है वे अच्छे बोलने वाले, निडर, जिज्ञासु, अच्छी तरह से यात्रा करने वाले और साहसी वयस्क बन जाते हैं.

तुषार माहेश्वरी
जेड. एल. सी., लखनऊ

भारतीय भाषाई ई- टूल्स

भारतीय संविधान में राजभाषा के संबंध में किए गए प्रावधानों में प्रमुख है अनुच्छेद 351, जिसके अंतर्गत राजभाषा हिंदी को विकसित करने और उसके प्रचार-प्रसार का दायित्व केंद्र सरकार को दिया गया है. केंद्र सरकार के कार्यालयों / सार्वजनिक क्षेत्र के बैंकों / उपक्रमों में राजभाषा नीति के कार्यान्वयन और राजभाषा हिंदी का प्रगामी प्रयोग सुनिश्चित करने के लिए भाषा प्रशिक्षण तथा अनुवाद व्यवस्था हेतु कई कार्य किए गए हैं और सुविधाएं उपलब्ध कराई गई हैं. केंद्र सरकार द्वारा इस प्रयोजन से कई ई-टूल्स भी विकसित किए गए हैं. इनमें प्रमुख ई-टूल्स की जानकारी नीचे दी गई.

लीला हिंदी प्रवाह

लीला हिंदी प्रवाह- राजभाषा (कृत्रिम बुद्धिमत्ता के माध्यम से भारतीय भाषाएँ सीखें) हिंदी सीखने के लिए मल्टी-मीडिया आधारित इंटेलिजेंट स्व-शिक्षण अनुप्रयोग है. संस्कृत में लीला का अर्थ होता है 'खेल'. लीला का उपयोग करके अपने पीसी अथवा मोबाइल पर भाषा सीखना वास्तव में खेल के समान ही आनंददायक है. इस अनुप्रयोग की मदद से अंग्रेजी, असमिया, बांग्ला, बोडो, गुजराती, कन्नड़, कश्मीरी, मलयालम, मणिपुरी, मराठी, नेपाली, उड़िया, पंजाबी, तमिल और तेलुगु के माध्यम से हिंदी सीख सकते हैं.

लीला मल्टीमीडिया शृंखला में लीला हिंदी प्रबोध प्रथम पैकेज है, जिसका शुभारंभ भारत के माननीय राष्ट्रपति श्री के आर नारायणन द्वारा 14 सितंबर, 1999 को राजभाषा हिंदी की स्वर्ण जयंती के अवसर पर किया गया था. तदुपरान्त लीला हिंदी प्रवीण और प्रज्ञा भी प्रारंभ हुए. लीला हिंदी प्रबोध को 'सर्वश्रेष्ठ श्रिंक-रैप्ड सॉफ़्टवेयर उत्पाद' के लिए सीएसआई-इन्फोसिस पुरस्कार भी प्राप्त हुआ है.

लीला पैकेज की मुख्य विशेषताएं हैं-

ट्रेसर मॉड्यूल:- हिन्दी / देवनागरी अक्षर स्ट्रोक प्रकारों से बने हैं. कई स्ट्रोक एक कैरेक्टर बनाते हैं, लेकिन सौंदर्य और व्यावहारिक कारणों से, कैरेक्टर लिखने के क्रम को प्राथमिकता दी जाती है. ट्रेसर मॉड्यूल उपयोगकर्ता को प्रत्येक हिंदी वर्ण को स्ट्रोक-दर-स्ट्रोक लिखने में सक्षम बनाता है. स्ट्रोक्स का क्रम लेखक को हिंदी अक्षरों को एक समान तरीके से पुन: प्रस्तुत करना संभव बनाता है.

स्पीच सुविधा:- शब्दों और वाक्यों के सही उच्चारण और स्वर को सीखने की सुविधा के लिए स्पीच सुविधा प्रदान की गई है. शब्दावली अनुभाग के भाग के रूप में छवियों के साथ संबंधित शब्द और उनके अर्थ भी प्रदान किए गए हैं. सही उच्चारण का अभ्यास करने के लिए, रिकॉर्ड और तुलना सुविधा है, जो उपयोगकर्ता को किसी शब्द या वाक्य को अपनी आवाज में रिकॉर्ड करने और पैकेज में उपलब्ध मानक उच्चारण के साथ तुलना करने की सुविधा देती है.

वीडियो इंटरफ़ेस:- आसान समझ के लिए, प्रत्येक पाठ में कथा के साथ-साथ एक वीडियो फिल्म भी चलती है. क्लिपिंग में बोले गए वाक्य को टेक्स्ट में हाइलाइट किया गया है. इस प्रकार सीखना आसान और दिलचस्प हो गया है. अवधारणाओं की बेहतर पुनरावृत्ति और समझ के लिए छवियाँ भी प्रदान की गई हैं.

शब्दकोश:- एक ऑन-लाइन हिंदी-अंग्रेजी / भारतीय भाषा शब्दकोश आसान संदर्भ के लिए अर्थ, व्याकरणिक श्रेणी और उच्चारण के साथ उपलब्ध है. इसे पाठ के किसी भी भाग से एक्सेस किया जा सकता है. पैकेज चित्रों और ध्वनि के साथ आम तौर पर उपयोग किए जाने वाले शब्द और आधिकारिक शब्दावली भी प्रदान करते हैं.

सांस्कृतिक नोट्स:- चित्रों और पाठ के माध्यम से समझाए गए भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को उजागर करने के लिए शामिल किया गया है.

भाषिणी

भारत सरकार ने नया एआई पावर्ड अनुवाद पोर्टल 'भाषिणी' का शुभारंभ किया है. वर्तमान में इस पर हिन्दी, मराठी तथा अंग्रे. जी सहित 13 भाषाओं से/में बोलकर या टाइप करके इनका पोर्टल पर उपलब्ध भाषाओं में लिखित एवं मौखिक अनुवाद प्राप्त किया जा सकता है. इससे कार्यालय में हिंदी एवं स्थानीय भाषा के कामकाज को बढ़ाने में काफी सहायता मिलेगी. इसके अंतर्गत आठवीं अनुसूची की शेष भाषाओं का समावेश भी किया जाएगा.

भाषिणी का घोषित उद्देश्य है - 'भाषा के लिए एक राष्ट्रीय डिजिटल मंच उपलब्ध कराना जिससे आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस तथा अन्य

उभरती तकनीकों का लाभ उठाकर नागरिकों के लिए सेवाएं और उत्पाद बनाए जा सके.' उच्च तकनीक के इष्टतम प्रयोग एवं भाषाओं का ज्ञान रखने वाले उत्साहियों के योगदान से भाषिणी भाषा की बाधाओं से परे जाकर विभिन्न भाषा भाषियों को साथ लाने का भगीरथ कार्य करेगी.

इस प्रयोजन के लिए आठवीं अनुसूची में उल्लिखित आधुनिक भारतीय भाषाएं जानने वाले नागरिक अपना महत्वपूर्ण योगदान (भाषादान) इस प्रकार दे सकते हैं - ऑडियो सुनकर उसे टाइप करना; लिप्यांकित टेक्स्ट को सत्यापित करना; वाक्य को रिकॉर्ड कर अपनी आवाज़ का योगदान देना; रिकॉर्ड किए गए ऑडियो को सत्यापित करना; टेक्स्ट का अनुवाद करना; अनुवादों को सत्यापित करना; इमेज को लेबल देना; लेबल की गई इमेज को सत्यापित करना.

कंठस्थ 2.0

भारत सरकार के कार्यालयों में अनुवाद कार्य को आसान बनाने हेतु राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार ने 'कंठस्थ' का विकास किया है. सरकारी कार्यालयों में प्राय: विपुल अनुवाद कार्य रहता है एवं उनमें उत्तरोत्तर अनुवाद कार्य में वृद्धि भी हो रही है. सरकारी कामकाज के लिए किसी अनाधिकारिक एवं अनौपचारिक साधन का उपयोग जोखिम भरा होने के कारण उसके उपयोग की स्वीकृति भी नहीं है.

कंठस्थ को राजभाषा विभाग द्वारा वर्ष 2018 में विकसित किया गया था तथा समय-समय पर आवश्यकताओं के अनुसार आधुनिक तकनीक के साथ इसे उन्नत किया जा रहा है. हाल ही में इसका द्वितीय संस्करण 'कंठस्थ 2.0' जारी किया गया है. अब यह न्यूरल मशीन अनुवाद की आधुनिक अंतरराष्ट्रीय तकनीक से भी लैस है. कंठस्थ के 14,000 से अधिक पंजीकृत उपयोगकर्ता हैं. इसके वैश्विक डेटाबेस में 58 लाख से अधिक वाक्यों का संग्रह है और यह लगातार बढ़ रहा है. इसके मोबाइल एप का भी विकास किया गया है. कोई भी सरकारी कर्मचारी कंठस्थ के मुख पृष्ठ पर अपना अकाउंट बना सकता है तथा उसका लाभ उठाने के साथ-साथ कंठस्थ के डेटाबेस में योगदान कर हिंदी के कामकाज को बढ़ाने में अपना सार्थक एवं महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है.

कंठस्थ एक स्मृति आधारित अनुवाद प्रणाली है. इस अनुवाद प्रणाली में किए गए अनुवाद को संगृहीत किया जाता है जिसे ट्रांसलेशन मेमोरी (टी. एम.) कहते हैं. टी. एम. एक डेटाबेस है जिसमें स्रोत एवं लक्ष्य भाषा, दोनों के ही वाक्यों का संग्रहण किया जाता है. पहले से किये गये अनुवाद का किसी नई फाइल के अनुवाद के लिए पुन: प्रयोग किया जा सकता है. अनुवाद की नई फाइल के किसी वाक्य अथवा वाक्यों के टी. एम. के डेटाबेस से पूर्णत: या आंशिक रूप से समान होने पर सिस्टम उस वाक्य या वाक्यों के अनुवाद को टी. एम. से स्वत: ग्रहण कर लेता है. यह प्रणाली अनुवाद का संदर्भ भी काफी हद तक समझती है जिससे अधिक सुसंगत एवं त्रुटि रहित अनुवाद किया जा सकता है. अनुवाद में दूसरी भाषा के शब्दों को भी स्थान दिया गया है. अन्य भाषा में किसी संकल्पना के लिए हिंदी में कोई शब्द न होने की स्थिति में उस भाषा के चलन में आ चुके शब्दों हेतु लिप्यंतरण का प्रयोग किया गया है. अनुवाद को और अधिक सुविधाजनक बनाने हेतु कंठस्थ में स्मार्ट चैटबाक्स, तुरन्त अनुवाद, सूचनाएँ, फाइल शेयरिंग, विभिन्न फाइल-एक्सटेंशन का समर्थन, न्यूरल मशीन ट्रांसलेशन विकल्प, स्थानीय के साथ-साथ वैश्विक टी. एम. का निर्माण, आटोमैटिक स्पीच रेकग्निशन, द्विभाषिक फाइल भेजना या प्राप्त करना, वाक्यांश खोज और अन्त में गुणवत्ता की जांच करने जैसी विशेषताओं का समावेश किया गया है. कंठस्थ की ये विशेषताएं अनुवादक के लिए अत्यंत सहायक सिद्ध होती हैं.

हिंदी शब्द सिंधु

हिंदी ई-टूल्स की कड़ी में 'हिंदी शब्द सिंधु' एक ऑनलाइन हिंदी का एक प्रामाणिक शब्दकोश है. इसका विकास राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार द्वारा किया गया है जिसके अंतर्गत इस शब्दकोश में संविधान की 8वीं अनुसूची में शामिल भारतीय भाषाओं के शब्दों को शामिल कर इसे निरंतर समृद्ध किया जा रहा है. इस शब्दकोश पर हिंदी सहित संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य भाषाओं के शब्दों के अर्थ प्राप्त किए जा सकते हैं.

गौरव शर्मा
ऋण अनुपालन एवं
अनुश्रवण विभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

विशेष भाषा दिवस

मातृभाषा मनुष्य के संस्कारों की संवाहक होती है. मातृभाषा केवल संवाद की भाषा ही नहीं बल्कि मनुष्य की पहचान भी होती है. भारत में यह माना जाता है कि चार कोस पर भाषा बदलती है. किसी भी देश की संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए, उस संस्कृति की भाषाओं का संरक्षण और संवर्धन करना आवश्यक है. भाषा हमें अभिव्यक्ति और जुड़ाव की क्षमता देती है जो समाज कल्याण के लिए बहुत आवश्यक है. भाषा के महत्व को पहचानते हुए राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भाषा दिवस मनाए जाते हैं. इनकी संक्षिप्त जानकारी निम्नानुसार है:

विश्व हिंदी दिवस (10 जनवरी) :

हिंदी भाषा को बढ़ावा देने, हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए जागरूकता पैदा करने तथा हिंदी को अन्तरराष्ट्रीय भाषा के रूप में प्रचारित करने के उद्देश्य से प्रतिवर्ष 10 जनवरी को विश्व हिंदी दिवस मनाया जाता है. 10 जनवरी, 1975 को नागपुर में आयोजित प्रथम विश्व हिंदी सम्मेलन की वर्षगाँठ मनाने के संदर्भ में पहली बार विश्व हिंदी दिवस वर्ष 2006 में मनाया गया था. विश्व हिंदी दिवस उस दिन को चिह्नित करता है, जब वर्ष 1949 में संयुक्त राष्ट्र महासभा में पहली बार हिंदी बोली गई थी. यह विश्व के विभिन्न हिस्सों में स्थित भारतीय दूतावासों द्वारा भी मनाया जाता है. साथ ही हिंदी भाषा को बढ़ावा देने के लिए भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के तत्वावधान में एक सम्मेलन भी आयोजित करती है. इसे 'विश्व हिंदी सम्मेलन' कहा गया. अब तक कुल 12 सम्मेलनों का आयोजन किया जा चुका है जिसमें से 12वां विश्व हिंदी दिवस-2023 सम्मेलन का मुख्य विषय 'हिंदी: पारंपरिक ज्ञान से कृत्रिम बुद्धिमत्ता/तक' है. यह सम्मेलन नांदी, फिजी में आयोजित किया गया था.

हिंदी दिवस (14 सितंबर) :

एक भाषा के रूप में हिंदी न सिर्फ भारत की पहचान है बल्कि यह हमारे जीवन मूल्यों, संस्कृति एवं संस्कारों की सच्ची संवाहक, संप्रेषक और परिचायक भी है. यह विश्व में तीसरी सबसे ज्यादा बोली जाने वाली भाषा है जो हमारे पारम्परिक ज्ञान, प्राचीन सभ्यता और आधुनिक प्रगति के बीच एक सेतु भी है. हिंदी भारत संघ की राजभाषा होने के साथ ही ग्यारह राज्यों और तीन संघ शासित क्षेत्रों की भी प्रमुख राजभाषा है. संविधान की आठवीं अनुसूची में शामिल अन्य इक्कीस भाषाओं के साथ हिंदी का एक विशेष स्थान है. प्रत्येक वर्ष 14 सितंबर को देश में हिंदी दिवस मनाया जाता है. 14 सितबंर 1949 को संविधान सभा में एक मत से हिंदी को राजभाषा घोषित किया गया था और संविधान के अनुच्छेद 120, 240 तथा 343 से 351 तक राजभाषा के संबंध में व्यवस्था की गई है. इस निर्णय के बाद हिंदी को हर क्षेत्र में प्रसारित करने के लिए राष्ट्रभाषा प्रचार समिति, वर्धा के अनुरोध पर 1953 से पूरे भारत में 14 सितंबर को हर साल हिंदी दिवस के रूप में मनाया जाता है.

अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस (21 फरवरी):

भाषायी और सांस्कृतिक विविधता का प्रचार-प्रसार, बहुभाषावाद के बारे में जागरूकता को बढ़ावा देने तथा दुनिया में विभिन्न मातृभाषाओं के प्रति लोगों को जागरूक करने के उद्देश्य से प्रत्येक वर्ष 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस मनाया जाता है. युनेस्को ने वर्ष 1999 में 21 फरवरी को अंतरराष्ट्रीय मातृभाषा दिवस के रूप में घोषित किया और वर्ष 2000 से सम्पूर्ण विश्व में यह दिवस मनाया जा रहा है. यह दिन बांग्लादेश द्वारा अपनी मातृभाषा की रक्षा के लिए किए गए लंबे संघर्ष को रेखांकित करता है.

भारतीय भाषा दिवस (11 दिसंबर):

भारत की बहुभाषिकता देश की भाषायी क्षमता को मजबूत करने का उपकरण है. बहुभाषावाद को और भी मजबूत करने, लोगों को अधिक भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित करने और भारतीयों को विविधता में एकता का अनुभव कराने के लिए प्रत्येक वर्ष 11 दिसम्बर को प्रसिद्ध तमिल कवि, समाज सुधारक, बहु-भाषाविद और स्वतन्त्रता सेनानी महाकवि चिन्नस्वामी सुब्रमण्यम भारती की जन्म जयंती को 'भारतीय भाषा दिवस' मनाए जाने का संकल्प लिया गया. श्री सुब्रमण्यम भारती स्वतन्त्रता संग्राम के प्रमुख नेताओं में से एक थे. इनके द्वारा लिखे गए गीत राष्ट्रीय एकता तथा देशभक्ति के भाव से भरे हैं और राष्ट्रीयता, देश की अखंडता, समानता के भाव और भाषाई गर्व को प्रतिपादित करते हैं.

अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस (30 सितंबर) :

एक व्यक्ति के लिए विश्व भर की भाषाओं को जानना और समझना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है. अत: ऐसी स्थिति में अनुवाद सभी देशों के लिए एक अनिवार्य आवश्यकता बन गई है. वैश्वीकरण के युग में संचार को और भी आसान बनाने के लिए अनुवाद बहुत उपयोगी माना जाता है. भाषा उद्यमियों की भूमिका को मान्यता देते हुए 24 मई, 2017 को संयुक्त राष्ट्र महासभा ने एक संकल्प पारित कर 30 सितंबर को 'अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस' घोषित किया. इसे बाइबल अनुवादक सेंट जेरोम के सम्मान में तथा अनुवादकों और भाषा पेशेवरों द्वारा किए गए अमूल्य योगदान के वैश्विक उत्सव के रूप में मनाया जाता है. अंतरराष्ट्रीय अनुवाद दिवस पहली बार 1991 में इंटरनेशनल फेडरेशन ऑफ ट्रांसलेटर्स (एफ़आईटी) द्वारा मनाया गया था. एफआईटी दुनिया भर में अनुवादकों और दुभाषियों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक सामूहिक संगठन है, जिसकी स्थापना 1953 में हुई थी. आईटीडी 2023 की थीम 'अनुवाद मानवता के कई पहलुओं का अनावरण करता है' रखा गया है.

जागृति उपाध्याय
राजभाषा कार्यान्वयन प्रभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

वित्तीय क्षेत्र के कार्यालयों में भारतीय भाषाओं का महत्व

भाषा वित्तीय उद्योग सहित विभिन्न क्षेत्रों के कामकाज में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. हाल के वर्षों में, भारत के वित्तीय क्षेत्र ने महत्वपूर्ण विकास का अनुभव किया है, वैश्विक निवेश को आकर्षित किया है और देश के आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है. हालांकि, इस प्रगति के बीच, वित्तीय क्षेत्र से संबंधित कार्यालयों में भारतीय भाषाओं का महत्व पहचानना आवश्यक है.

प्रभावी संचार किसी भी सफल संगठन के मूल में है और वित्तीय क्षेत्र इसका अपवाद नहीं हैं. भाषा विचारों के आदान-प्रदान, सूचना देने और संबंधों के निर्माण के लिए एक माध्यम के रूप में कार्य करती है. वित्तीय कार्यालयों में भारतीय भाषाओं का उपयोग करने से ग्राहकों, कर्मचारियों और हितधारकों के बीच संचार अंतर को पाटने में मदद मिलती है. बहुभाषी सहायता प्रदान करते हुए, वित्तीय संस्थान एक व्यापक ग्राहक आधार के साथ जुड़ सकते हैं. यह विश्वास को बढ़ावा देता है और व्यक्तियों को अपनी वित्तीय आवश्यकताओं और चिंताओं को अधिक प्रभावी ढंग से व्यक्त करने में सक्षम बनाता है. इसके अलावा, कार्यालयों में भारतीय भाषाएं टीमों के भीतर स्पष्ट और सटीक संचार की सुविधा प्रदान करती हैं, गलतफहमी को कम करती हैं और समग्र उत्पादकता में सुधार करती हैं.

विशिष्टता किसी भी संगठन का एक महत्वपूर्ण पहलू है और वित्तीय क्षेत्र में भारतीय भाषाओं को शामिल करना विभिन्न भाषाई वरीयताओं को समायोजित करके समावेश को बढ़ावा देता है. भारत की भाषाई विविधता को स्वीकार और मूल्यांकन करके, वित्तीय कार्यालय यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि भाषा वित्तीय सेवाओं तक पहुँचने में बाधा नहीं है. भारतीय भाषाओं को गले लगाकर, वित्तीय संस्थान अपनी सेवाओं को बड़ी आबादी तक पहुंचा सकते हैं, यह समावेशी दृष्टिकोण अपनेपन की भावना को बढ़ावा देता है, वित्तीय साक्षरता को बढ़ावा देता है और व्यक्तियों को अपने वित्त के बारे में सूचित निर्णय लेने का अधिकार देता है.

किसी भी वित्तीय संस्थान की सफलता के लिए एक सकारात्मक ग्राहक अनुभव प्रदान करना महत्वपूर्ण है. भारतीय भाषाएं प्रभावी संचार और व्यक्तिगत बातचीत को सक्षम करते हुए इस अनुभव को बढ़ाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं. जब ग्राहक अपनी मूल भाषा में वित्तीय पेशेवरों के साथ जुड़ पाते हैं, तो यह आत्मविश्वास और विश्वास की भावना पैदा करता है. यह ग्राहकों को अपने वित्तीय लक्ष्यों को स्पष्ट करने, जटिल वित्तीय उत्पादों को समझने और भाषा अवरोध के बिना स्पष्टीकरण की तलाश करने की अनुमति देता है. इसके अतिरिक्त, ग्राहक सेवा चैनलों में भारतीय भाषाओं का उपयोग करना, जैसे कॉल सेंटर या ऑनलाइन चैट समर्थन, ग्राहकों को अपनी चिंताओं को आराम से व्यक्त करने की अनुमति देता है, जिसके परिणामस्वरूप ग्राहकों की संतुष्टि और वफादारी में सुधार होता है. भाषा संसाधनों और प्रशिक्षण में निवेश करके, वित्तीय कार्यालय एक ग्राहक-केंद्रित दृष्टिकोण बना सकते हैं.

वित्तीय क्षेत्र अक्सर जटिल अवधारणाओं और उत्पादों से संबंधित होता है जो समझने के लिए चुनौतीपूर्ण हो सकते हैं, खासकर उन व्यक्तियों के लिए जो अंग्रेजी में अच्छी तरह से वाकिफ नहीं हैं. भारतीय भाषाओं को शामिल करते हुए, वित्तीय कार्यालय अपने लक्षित दर्शकों के बीच वित्तीय उत्पादों और सेवाओं की गहरी समझ की सुविधा प्रदान कर सकते हैं. भारतीय भाषाओं में वित्तीय दस्तावेजों, रिपोर्टों और शैक्षिक सामग्रियों का अनुवाद करने से व्यक्तियों को प्रासंगिक जानकारी प्राप्त करने और सूचित निर्णय लेने में मदद मिलती है. इसके अतिरिक्त, भारतीय भाषाओं में वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों और कार्यशालाओं का संचालन व्यक्तियों को अपने वित्तीय ज्ञान में सुधार करने और ध्वनि वित्तीय विकल्प बनाने का अधिकार देता है. वित्तीय उत्पादों की गहरी समझ एक अधिक पारदर्शी और जवाबदेह वित्तीय क्षेत्र को बढ़ावा देती है, जिससे व्यक्तियों और समग्र अर्थव्यवस्था दोनों को लाभ होता है.

भारत महत्वपूर्ण आर्थिक विकास का अनुभव कर रहा है और वैश्विक बाजार में एक प्रमुख भूमिका निभा रहा है, इसलिए देश के भीतर बोली जाने वाली भाषाओं की विविधता को पहचानना और वित्तीय समावेशन और पहुंच बढ़ाने के लिए उनका लाभ उठाना अनिवार्य हो जाता है. वित्तीय क्षेत्र में भारतीय भाषाओं को अपनाकर, व्यापक आबादी आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम हो सकेगी. इसके अलावा, भाषाई समावेशिता सांस्कृतिक संबंध की गहरी भावना को बढ़ावा देती है और व्यक्तियों को उनकी मूल भाषाओं में वित्तीय ज्ञान और अवसर प्रदान करके सशक्त बनाती है. वित्तीय क्षेत्र में भारतीय भाषाओं को बढ़ावा देने के प्रयासों को प्रोत्साहित किया जाना चाहिए, चाहे वह बहुभाषी बैंकिंग सेवाओं, भाषा-विशिष्ट वित्तीय साक्षरता कार्यक्रमों या अनुवाद और व्याख्या सेवाओं के माध्यम से हो. भाषाई अंतर को पाटकर, हम भारत में अधिक समावेशी, सशक्त और समृद्ध वित्तीय पारिस्थितिकी तंत्र को बढ़ावा दे सकते हैं, जिससे व्यक्तियों, व्यवसायों और पूरे देश को लाभ होगा.

राहुल रंजन
मानव संसाधन विभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

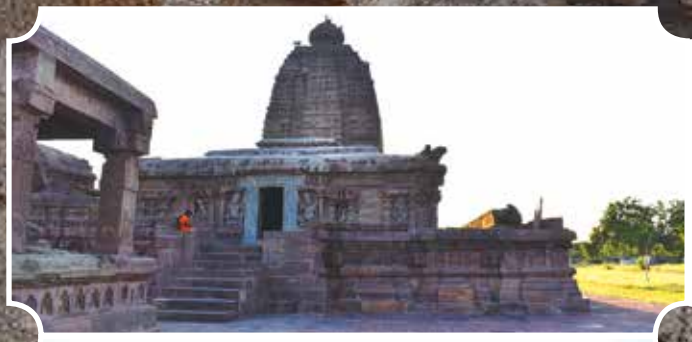

आलमपुर

आलमपुर तेलंगाना राज्य में जोगलबा गडवाल जिले का तुंगभद्रा नदी के तट पर स्थित नल्लमला पहाड़ियों से घिरा हुआ एक शांत शहर है. आलमपुर को श्रीशैलम का पश्चिमी प्रवेश द्वार माना जाता है. यहां अद्भुत मंदिर और कुछ प्राचीन मंदिर के अवशेष बादामी चालुक्य वास्तुकला का संकेत देते हैं. इस क्षेत्र पर कई दक्षिण भारतीय राजवंशों का शासन था. जोगुलाम्बा मंदिर के प्रमुख देवता जोगुलाम्बा और बालब्रह्मेश्वर हैं. देवी जोगुलाम्बा को देश के 18 शक्तिपीठों में से 5वीं शक्तिपीठ माना जाता है. आलमपुर की पवित्रता का उल्लेख स्कंद पुराण में मिलता है. आलमपुर में कई हिंदू मंदिर हैं, जिनमें प्रमुख हैं जोगुलाम्बा मंदिर, नवब्रह्म मंदिर, पापनासी मंदिर और संगमेश्वर मंदिर. आलमपुर नवब्रह्म मंदिर ऐतिहासिक रूप से महत्वपूर्ण हैं और उल्लेखनीय स्थापत्य कौशल को दर्शाते हैं. आलमपुर मंदिरों को प्राचीन स्मारकों और पुरातत्व स्थलों और अवशेष अधिनियम के तहत भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा तैयार आधिकारिक "स्मारकों की सूची" पर एक पुरातात्विक और स्थापत्य खजाने के रूप में सूचीबद्ध किया गया है. चूंकि आलमपुर में मंदिरों का मूल क्षेत्र श्रीसैलम हाइड्रो-इलेक्ट्रिक प्रोजेक्ट द्वारा जलमग्न हो गया था, मंदिरों को उच्च भूमि पर स्थानांतरित कर दिया गया था. मंदिरों के इस समूह की विशिष्टता 650 और 750 CE के बीच बादामी के चालुक्यों द्वारा शुरू की गई उत्तरी स्थापत्य शैली में उनकी योजना और डिजाइन में निहित है.

रवींद्र कुमार
क्षे.का., धनबाद

ख्वाहिशें

सिर्फ चाहने से कहाँ,
पूरी होती है ख्वाहिशें,
मुकम्मल कोशिशें भी जरूरी हैं.

माना कोशिशें तो बहुत की होंगी आपने
लेकिन.....
खुदा की मंजूरी भी जरूरी है.

निराश न हो, न छोड कोशिशें,
मत भूल तेरी रजा में ही... उसकी रजा है.

आज नहीं तो कल, वो पल फिर आएगा,
कोशिशें जारी रख ए बन्दे
तेरी ख्वाहिशें पूरी होने का वक्त भी आएगा.

नेकी पर चल और कोशिश किए जा,
'नफ़ा' के लिए तेरी रजा
वो खुद पूछने आएगा

वो तेरा है तेरे पास ही है,
जो तेरा है वो तुझे देकर ही जाएगा.
कोशिशें जारी रख ए बन्दे
तेरी ख्वाहिशें पूरी होने का वक्त भी आएगा.

शर्मिला कटारिया
क्षे.का., नई दिल्ली

युवा एवं वृद्ध

जिंदगी बड़ी होनी चाहिए लंबी नहीं....

जब मैं युवा था तो मैं अपने पिंपल्स को लेकर चिंतित रहता था,

अब मैं बूढ़ा हूँ तो अपनी झुरियों को लेकर चिंतित रहता हूँ.

जब मैं युवा था तो मैं किसी का हाथ पकड़ने का इंतज़ार करता था,

अब मैं बूढ़ा हूँ तो कोई मेरा हाथ थाम ले, इसका इंतज़ार करता हूँ.

जब मैं युवा था तो मैं चाहता था कि मेरे माता-पिता मुझे अकेले छोड़ दें

अब मैं बूढ़ा हूँ तो मुझे अकेले रह जाने की चिंता होती है.

जब मैं युवा था तो मुझे सलाह देने वाले पसंद नहीं थे

अब मैं बूढ़ा हूँ तो मुझसे बात करने वाला कोई नहीं.

जब मैं युवा था तो मैं सिर्फ सुंदर चीजों की प्रसंशा करता था

अब मैं बूढ़ा हूँ तो मुझे आस-पास की चीजों में सुंदरता दिखाई देती है.

जब मैं युवा था तो मुझे लगता था कि मैं शाश्वत हूँ

अब मैं बूढ़ा हूँ तो मुझे लगता है कि मेरे जाने की बारी कभी भी आ सकती है.

जब मैं युवा था तो मैं हर पल का जश्न मनाता था

अब मैं बूढ़ा हूँ तो बस अपनी यादें सँजोता हूँ.

जब मैं युवा था तो मुझे जागना मुश्किल लगता था

अब मैं बूढ़ा हूँ तो मुझे सोना मुश्किल हो जाता है.

जब मैं युवा था तो मैं सभी के दिल की धड़कन था

अब मैं बूढ़ा हूँ तो मुझे चिंता रहती है कि मेरे दिल की धड़कन कब रुक जाए

जो भी हो मगर जिंदगी बड़ी होनी चाहिए लंबी नहीं....

संबित बिकाश मिश्र
क्षे.का., संबलपुर

तुम

अंसकेशी तुम मृगनयनी तुम
लावण्यमयी एक सूरत हो
सुंदरता की अभिव्यक्ति में
शब्दों की तुम जरूरत हो.

नव मृग शिशु की चंचलता तुझमें
शिरीष की कोमलता तुझमें
संगीत स्वरूप सरलता तुझमें
तुम स्वछन्द एक सरिता हो.

श्रृंगार रस के उन्मादी कवि की तुम
सुंदर सी एक कविता हो.

अमल धवल चेहरे से निरंतर
प्रणय कलह करते तेरे केश
कुवलय से नयनों का
शृंगार कर लगते उन्मेष

किसलय अधरों पर तेरी उस
मोहक वाणी का संचार
जैसे वसंत के प्रथम प्रहर में
चकवे का दर्शना प्यार

शर्मिष्ठा तुम इंद्रनील तुम
ताज की संगमरमर हो
मरीचिका के बाद मृग की
प्यास बुझाती निर्झर हो.

एन वी अनिल कुमार
क्षे.का., हैदराबाद-पंजागुट्टा

बहुत गर्व है मुझे
कि आज़ाद भारत का नागरिक कहलाता हूँ,
अपने हर भाव को में
आज़ादी से व्यक्त कर पाता हूँ.

इस देश के विभिन्न कोनों में
अनेकता में एकता देख पाता हूँ,
इस देश के हर नागरिक में
देशभक्ति का जज़्बा देख पाता हूँ.

विभिन्न चुनौतियों का सामना करने में
इस देश को हर विधा में सक्षम पाता हूँ,
लोकतंत्र की इस अद्भुत शक्ति को
विश्व का भाग्य विधाता देख पाता हूँ.

हिंदी का प्रयोग को
अंतरराष्ट्रीय स्तर पर होता देख
गर्व महसूस कर पाता हूँ,
विश्व पटल पर हिंदी को सम्मानित होता देख
देश को नयी बुलंदियाँ छूता देख पाता हूँ.

हिंदी मात्र भाषा नहीं
हर भारतीय की भावनाओं की अभिव्यक्ति है,
इन भावनाओं का उत्सव मनाने को
हर भारतीय "हिंदी दिवस" मनाता है.

अभिनव जैन
जेड. एल. सी., भोपाल

अनकही पहेली

तुम्हारी सहमति,
असहमति के मायने कहाँ हैं ?
यह जिन्दगी है ! मोहताज नहीं,
रजामन्दी के हमारे !!

जिन्दगी की बहुरैखिक गति में,
सामान्य गणित कहाँ चलता ?
यह जीवन है साहब !
यहाँ अपना जोर कहाँ चलता ?

कभी छलकती अंतर से,
ठिठक जाती पलकों पर आके ! उतरना मंजूर ना पर,
ठहर न पाती अवसानों पर !
अब गढ़ें हम दोष किसका,
यह गुण, अवगुण से परे है !
स्वरूप चाहे गढ़े कितने,
यह तो हर इक रूप से परे है !!

न शाश्वत, न मिथ्या,
दोंनो के बीच की कड़ी, दो विधाओं को,
जोड़ने का असफल यत्न, केन्द्ररहित परिधि,
खुद ही विस्तार, स्वयं को ही झुठलाती
गुमसुम, पर अनवरत गुनगुनाती !!

क्षितीज का विस्तार इसमें,
पर बिन्दु का संकुचन भी,
अस्थिर सी इक स्तब्धता में,
है समेटे ज्वार को भी !
देख कर स्वरूप तुम ये,
समझ न लेना सिन्धु इसको !
बूँद की परिकल्पना में,
ये समाहित हो रही है !!

कदमताल आपाधापी में,
पलपल गुजरती धुंध सी है !
मन के तरंगों को,
चुनकर इकट्ठा करूँ तो !
अंजुली में आकार लेती,
इक रेत की मकान सी है, जिन्दगी अनजान सी है,
जिन्दगी मेहमान सी है !!

शैलेन्द्र कुमार
क्षे.का., धनबाद

चंद्रयान

इसरो ने भारत का पहचान लिखा है,
भारत की किस्मत मे चंद्रयान लिखा है.
पहुँच गए हम चाँद के उस सतह पर,
जहाँ हिंदुस्तान ने विश्व पटल पर पहला
नाम लिखा है.

कोई ताल्लुक तो गहरा है हमारा चाँद से,
जहाँ लहरा रहा है हमारा तिरंगा शान से.
ये जज्वाए हिंद ही है,
जिसने चाँद की धरती पर भारत का नाम
लिखा है

ऋषियों की धरती है ये,
जहाँ उन्होंने हर ज्ञान लिखा है.
अभी तो पाया है सिर्फ चाँद को,
पाने को पुरा आसमान लिखा है.

माना कि कठिन चुनौती है राह में,
पर हमने हर चुनौती को पाने का विश्वास
लिखा है.
भारत की मिट्टी में कुछ तो बात है,
ऐसे ही नहीं भारत ने अपनी कामयाबी का
इतिहास लिखा है.

सुमन कुमार
क्षे.का., गाजीपुर

शिक्षा के क्षेत्र में मातृभाषा की भूमिका

भाषा एक शक्तिशाली उपकरण है जिसमें लोगों को जोड़ने, विचार व्यक्त करने और संस्कृति बनाने की क्षमता होती है. यह वह माध्यम है जिसके माध्यम से हम खुद को अभिव्यक्त करते हैं और दूसरों के साथ बातचीत / वार्तालाप / संवाद करते हैं. भाषा सीखने और समझने में मातृभाषा की भूमिका बहुत महत्वपूर्ण है. हम में से कई लोगों के लिए, हमारी मातृभाषा वह पहली भाषा है जिसे हम बोलना सीखते हैं और जिसका उपयोग हम अपने परिवार और दोस्तों के साथ संवाद करने के लिए करते हैं.

जिस तरह से हम अपनी मातृभाषा का उपयोग करते हैं उसका नई भाषाओं को सीखने और विभिन्न संस्कृतियों को समझने की हमारी क्षमता पर गहरा प्रभाव पड़ता है. एक बच्चे की पहली भाषा, उसकी सीखने और संज्ञानात्मक विकास की नींव होती है और यह अन्य भाषाओं को सीखने में मदद करती है.

विभिन्न शोधों से पता चला है कि जिन बच्चों को उनकी मातृभाषा में पढ़ाया जाता है, वे स्कूल में उन बच्चों की तुलना में बेहतर प्रदर्शन करते हैं, जिन्हें उनकी मातृभाषा से अलग किसी अन्य भाषा में पढ़ाया जाता है. इसके अलावा, मातृभाषा सांस्कृतिक विरासत और परंपराओं के संरक्षण में मदद करती है. यह लोगों के लिए गर्व और अपनेपन का स्रोत है और उनकी पहचान का अभिन्न अंग है. इसलिए मातृभाषा के महत्व को पहचानना और इसके उपयोग और सीखने को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है.

बच्चे बिना किसी औपचारिक निर्देश के, अपने माता-पिता, भाई-बहन और परिवार के अन्य सदस्यों को सुनकर स्वाभाविक रूप से अपनी मातृभाषा सीखते हैं. यह वह नींव है जिस पर अन्य सभी भाषाएँ निर्मित होती हैं. मातृभाषा यह समझने के लिए एक रूपरेखा प्रदान करती है कि भाषा कैसे काम करती है, जिसमें व्याकरण, वाक्य रचना और शब्दावली भी शामिल होती है.

शोधों से पता चला है कि जिन छात्रों की मातृभाषा में मजबूत नींव होती है, वे दूसरी भाषा सीखने में अधिक सफल होते हैं. ऐसा इसलिए है क्योंकि उन्होंने पहले से ही संज्ञानात्मक कौशल और भाषा जागरूकता विकसित कर ली है जो भाषा सीखने के लिए आवश्यक हैं. वे नई भाषा में पैटर्न और संरचनाओं को पहचानने के लिए भी बेहतर ढंग से सुसज्जित हैं क्योंकि उनका संदर्भ बिंदु उनकी मातृभाषा में है.

इसके अलावा, कक्षा में मातृभाषा का उपयोग करने से छात्रों को नई जानकारी को बेहतर ढंग से समझने और बनाए रखने में मदद मिल सकती है. जब शिक्षक छात्रों की मातृभाषा में अवधारणाओं को समझाते हैं, तो यह नई जानकारी को स्पष्ट और सुदृढ़ करने में मदद कर सकता है. यह छात्रों के मौजूदा ज्ञान और उनके द्वारा प्राप्त किए जा रहे नए ज्ञान के बीच एक पुल बनाने में भी मदद करता है.

हालाँकि, यह ध्यान रखना महत्वपूर्ण है कि भाषा सीखने में मातृभाषा की भूमिका भिन्न होती है. कुछ मामलों में, किसी की मातृभाषा को कम महत्व दिया जाता है, जिससे छात्रों के लिए इसे बनाए रखने और उपयोग करने के महत्व को समझना मुश्किल हो सकता है. इन मामलों में, शिक्षक के लिए मातृभाषा के मूल्य को पहचानना और एक समावेशी शिक्षण वातावरण बनाने के लिए काम करना महत्वपूर्ण है जो छात्रों की भाषाई और सांस्कृतिक विविधता का समर्थन करता है.

किसी व्यक्ति की मातृभाषा अन्य भाषाओं को सीखने और समझने की उनकी क्षमता पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है. जब कोई व्यक्ति कोई नई भाषा सीखता है, तो सबसे पहले वह अपने दिमाग में शब्दों और वाक्यांशों का अपनी मातृभाषा से नई भाषा में अनुवाद करता है. यह अनुवाद प्रक्रिया चुनौतीपूर्ण और समय लेने वाली हो सकती है. यदि अनुवाद सटीक नहीं है तो इससे गलतफहमी और गलत व्याख्याएं भी हो सकती हैं.

निष्कर्षत: किसी व्यक्ति की मातृभाषा उसकी भाषा सीखने और समझने पर महत्वपूर्ण प्रभाव डाल सकती है. हालाँकि यह कुछ चुनौतियाँ खड़ी कर सकता है, लेकिन यह एक नई भाषा सीखने में एक उपयोगी उपकरण भी हो सकता है. भाषा सीखने पर मातृभाषा के प्रभाव को समझने से शिक्षार्थियों और शिक्षकों को अधिक प्रभावी भाषा सीखने की रणनीति विकसित करने में मदद मिल सकती है.

अपनी मातृभाषा में शिक्षा के फायदे:

अपनी मातृभाषा में सीखने के कई फायदे हैं जिन्हें नज़रअंदाज नहीं किया जा सकता. सबसे पहले, अवधारणाओं को समझना होता है जब उन्हें आपकी मूल भाषा में प्रस्तुत किया जाता है. ऐसा इसलिए है क्योंकि आपको पहले से ही भाषा की शब्दावली और संरचना की अच्छी समझ है, जिससे आप अपने दिमाग में शब्दों या वाक्यांशों का अनुवाद करने की कोशिश करने के बजाय पढ़ाए जा रहे विषय पर ध्यान केंद्रित कर सकते हैं.

इसके अलावा, शिक्षा के माध्यम के रूप में अपनी मातृभाषा का उपयोग करने से आलोचनात्मक सोच, रचनात्मकता और बेहतर स्मृति प्रतिधारण को बढ़ावा मिलता है. यह छात्रों को खुद को स्वतंत्र रूप से व्यक्त करने, प्रश्न पूछने और गलती करने के डर के बिना चर्चा में शामिल होने में सक्षम बनाता है. इसके परिणामस्वरूप कक्षा में बेहतर भागीदारी होती है और शैक्षणिक प्रदर्शन में सुधार होता है.

इसके अलावा, अपनी मातृभाषा में सीखने से आपकी सांस्कृतिक पहचान और विरासत को संरक्षित रखने में मदद मिलती है. यह आपको अपनी भाषा, इतिहास और परंपराओं को समझने और उनकी सराहना करने की अनुमति देता है, साथ ही आपको अन्य संस्कृतियों और भाषाओं की बेहतर समझ भी देता है. अंत में, अपनी मातृभाषा में सीखने के लाभ को कम करके आंका नहीं जा सकता है. यह अन्य चीजों के अलावा प्रभावी शिक्षण, आलोचनात्मक सोच और सांस्कृतिक संरक्षण को बढ़ावा देता है. शिक्षकों और नीति निर्माताओं के लिए इसे पहचानना और यह सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है कि छात्रों को उनकी मातृभाषा में गुणवत्तापूर्ण शिक्षा मिल सके.

संज्ञानात्मक विकास पर द्विभाषावाद का प्रभाव :

शोध के अनुसार द्विभाषावाद से ध्यान नियंत्रण, संज्ञानात्मक लचीलेपन और समस्या-समाधान क्षमताओं में वृद्धि हो सकती है. द्विभाषी व्यक्तियों में दो भाषाओं के बीच निर्बाध रूप से स्विच करने की क्षमता होती है और इसका संज्ञानात्मक कार्य पर सकारात्मक प्रभाव पाया गया है. ऐसा इसलिए है क्योंकि द्विभाषी व्यक्तियों को लगातार दो भाषाओं के बीच स्विच करने की आवश्यकता होती है और यह मानसिक व्यायाम संज्ञानात्मक क्षमताओं को मजबूत कर सकता है.

इसके अलावा, द्विभाषिकता को उम्र से संबंधित कुछ संज्ञानात्मक गिरावट, जैसे कि मनोभ्रंश की शुरुआत में देरी से जोड़ा गया है. प्रयोगों से पता चला है कि द्विभाषी व्यक्तियों में मनोभ्रंश के लक्षण एक भाषी व्यक्तियों की तुलना में कई वर्षों बाद प्रदर्शित होते हैं. इसके अलावा, संज्ञानात्मक विकास पर द्विभाषावाद का प्रभाव इस बात पर भी निर्भर हो सकता है कि कोई व्यक्ति दूसरी भाषा कब सीखता है. जो व्यक्ति दूसरी भाषा सीखते हैं, उन्हें बाद में जीवन में दूसरी भाषा सीखने वालों की तुलना में संज्ञानात्मक विकास में अधिक लाभ होता है.

मातृभाषा का शिक्षण में योगदान:

शिक्षण में मातृभाषा को शामिल करने से भाषा सीखने और समझने पर महत्वपूर्ण प्रभाव पड़ सकता है. दुनिया भर में कई शिक्षा प्रणालियों ने सीखने में मातृभाषा के महत्व को पहचाना है और इसे अपने पाठ्यक्रम में अपनाना शुरू कर दिया है.

शिक्षा प्रणालियों में मातृभाषा को शिक्षण में शामिल करने का एक तरीका द्विभाषी शिक्षा प्रदान करना है. इसका मतलब यह है कि छात्रों को उनकी मातृभाषा के साथ-साथ उस भाषा में भी पढ़ाया जाता है जिसे वे सीखने की कोशिश कर रहे हैं. उदाहरण के लिए, भारत में जो छात्र हिंदी को अपनी मातृभाषा के रूप में बोलते हैं, उन्हें हिंदी के साथ-साथ अंग्रेजी में भी पढ़ाया जा सकता है. यह दृष्टिकोण न केवल छात्रों को विषय वस्तु को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है, बल्कि उन्हें उस भाषा को समझने में भी मदद करता है जिसे वे सीखने की कोशिश कर रहे हैं. यह किसी की भाषा और संस्कृति पर गर्व की भावना विकसित करने में भी मदद करता है, जो व्यक्तिगत पहचान के लिए महत्वपूर्ण है. शिक्षण में मातृभाषा को शामिल करने का एक और तरीका इसे भाषा सीखने के लिए एक उपकरण के रूप में उपयोग करना है. यह सिखाई जाने वाली भाषा में अवधारणाओं और विचारों को समझाने के लिए संदर्भ बिंदु के रूप में मातृभाषा का उपयोग करके किया जा सकता है. यह दृष्टिकोण छात्रों को भाषा को बेहतर ढंग से समझने में मदद करता है और मातृभाषा और सिखाई जाने वाली भाषा के बीच के अंतर को पाटने में भी मदद करता है.

शिक्षण में मातृभाषा को शामिल करने से भाषा सीखने और समझने पर गहरा प्रभाव पड़ सकता है. यह छात्रों को अपनी सांस्कृतिक जड़ों से जुड़ने, पहचान की भावना विकसित करने और उनके समग्र भाषा कौशल में सुधार करने में मदद करता है.

निष्कर्षत: हमने देखा कि मातृभाषा भाषा सीखने और समझने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. यह नई भाषाएँ सीखने के लिए एक मजबूत आधार प्रदान करता है और हमारे द्वारा सीखी गई किसी भी भाषा को समझने और उसमें खुद को अभिव्यक्त करने की हमारी क्षमता में सुधार करता है. यह हमें भाषा की बारीकियों को समझने में मदद करता है, जो प्रभावी संचार के लिए आवश्यक है.

हमने यह भी देखा है कि अपनी मातृभाषा को महत्व देना और उसका संरक्षण करना महत्वपूर्ण है. इससे न केवल हमें अपनी सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में मदद मिलती है बल्कि हमें नई भाषाओं को बेहतर ढंग से सीखने में भी मदद मिलती है. बच्चों को कम उम्र से ही उनकी मातृभाषा सिखाना महत्वपूर्ण है ताकि वे इसमें पारंगत हो सकें और इसे अन्य भाषाओं को सीखने के लिए आधार के रूप में उपयोग कर सकें.

इसके अलावा, ऐसा वातावरण बनाना आवश्यक है जो बहुभाषावाद को प्रोत्साहित करे. स्कूलों और शैक्षणिक संस्थानों को कई भाषाओं को सीखने को बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए और नियोक्ताओं को भी अपने कर्मचारियों को अपने संचार कौशल में सुधार करने के लिए नई भाषाएं सीखने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए.

मातृभाषा की शक्ति को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं आंका जा सकता. यह प्रभावी संचार और भाषा सीखने के लिए आवश्यक है. अपनी मातृभाषा को महत्व और संरक्षण देकर और बहुभाषावाद को प्रोत्साहित करके, हम बेहतर शिक्षार्थी और संचारक बन सकते हैं और अधिक विविध और समावेशी समाज को बढ़ावा दे सकते हैं.

गीतांजलि साहू
जेड. एल. सी., भुवनेश्वर

भारतीय भाषाओं की धरोहर का संरक्षण

प्रारंभ से ही भारतीय संस्कृति अत्यंत उदात्त, समन्वयवादी, सशक्त एवं जीवंत रही है, जिसमें जीवन के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण तथा आध्यात्मिक प्रवृत्ति का अद्भुत समन्वय पाया जाता है. इसलिए भारत एवं भारतीय संस्कृति को अन्य समुदायों के समक्ष एक विशेष दर्जा प्राप्त है. विश्व की प्राचीनतम संस्कृति को वर्तमान स्तर पर लाने में भाषा का अहम योगदान रहा है. भारत वर्ष में सांस्कृतिक एवं भौगोलिक विविधता देखने को मिलती है, भारतीय जनगणना आयोग 2001 के अनुसार भारत में 122 मुख्य भाषाएं एवं 1599 क्षेत्रीय भाषाएं बोली एवं समझी जाती है. 22 भाषाओं को संविधान की आठवीं अनुसूची में मान्यता प्राप्त है यथा हिंदी, बंगाली, मराठी, तेलुगू, तमिल, गुजराती, उर्दू, कन्नड़, ओड़िआ, मलयालम, पंजाबी प्रमुख हैं. हिंदी की अनेक बोलियों में अवधी, ब्रज भाषा, कन्नौजी, बुंदेली, बघेली, खड़ी बोली, हरियाणवी, छत्तीसगढ़ी, फीजी हिंदी आदि प्रमुख हैं.

भाषा को संस्कृति के सबसे महत्वपूर्ण अंगों में से एक माना जाता है, क्योंकि वाणी को अपेक्षाकृत अधिक स्वायत्तता प्राप्त होती है किंतु भाषा के बिना शायद संस्कृति का जन्म ही न होता और संस्कृति के बिना भाषा प्राय: सूनी ही रह जाती. भाषा और संस्कृति के संबंध को जानने से पहले दोनों के अर्थ और स्वरूप को जानना आवश्यक है. भाषा विचारों और भावों की सीधी अभिव्यक्ति है या कहें प्रतीक पद्धति से सीधी अभिव्यक्ति है. ब्लूमफील्ड नामक भाषा वैज्ञानिक के अनुसार भाषा यादृच्छिक की संरचना व्यवस्था होती है जिसके माध्यम से किसी भाषा भारती समुदाय के लोग अपने भाव अथवा विचार एक दूसरे तक संप्रेषित करते हैं. संस्कृत शब्द भी अपने आप में संधि धार तक है. कुछ लोग इसे व्यापक सामाजिक अथवा समाज शास्त्री पृष्ठभूमि रीति रिवाज तथा संस्थाएं और कार्य प्रणाली जिसका संबंध भौगोलिक स्थितियों से और अंतत: ऐतिहासिक पृष्ठभूमि से होता है, का पर्याय मानते हैं. "क्लॉक आ" तथा "अकेली द रिलेशन ऑफ़ लैंग्वेज टू कलर" के लेखक ने संस्कृति की आधुनिक संकल्पना की कदाचित सबसे सुंदर अभिव्यक्ति की है. ऐतिहासिक रूप में निर्मित रहन-सहन के सब प्रतिमान, जिनका समय विशेष पर मानव के आचार व्यवहार के संभावित पद प्रदर्शन के रूप में स्थित होता है, फिर चाहे वह प्रतिमान अव्यक्त हो अथवा सुव्यक्त, विवेक पूर्ण हो, या विवेकहीन अथवा निर्विवेकपूर्ण.

भाषा और संस्कृति को न तो अलग किया जा सकता है और न किया जाना चाहिए; ठीक वैसे ही जैसे भाषा और विचार को कभी अलग नहीं किया जा सकता. सो भाषा और संस्कृति का संबंध अपरिहार्य एवं सापेक्ष है. अत: विभिन्न भाषाओं में अद्वितीय संस्कृतियों का समावेश है. वेद, जेंदावेस्ता, बाइबल और कुरान आदि पुराने ग्रंथ ही क्रमश: हिंदू, पारसी, ईसाई और मुसलमान के धर्म के आधार है. कुछ शब्द ऐसे होते हैं जिनके शुद्ध समानार्थक शब्द अन्य भाषाओं में नहीं मिलते. संस्कृत तथा अन्य भारतीय भाषा में विवादित, पूर्ण प्राचीन, संस्कार आदि शब्दों के तद्वत पर्याय अंग्रेजी आदि पाश्चात्य भाषाओं में नहीं मिलते. ऐसे ही 'बपतिस्मा' जैसे अंग्रेजी शब्दों के पर्याय भारतीय भाषाओं में नहीं है. परिवार तथा संबंधियों के लिए भारतीय भाषाओं में अनेक शब्द है देवर, जेठ, भाभी, चाची, ताऊ, फूफा, मौसा, मामा, साला, बहनोई, साली आदि परंतु अंग्रेजी में अंकल, अंट में ही सारे संबंध बंद है. सम्मिलित परिवार का यह शुद्ध मानचित्र आर्य संस्कृति की धरोहर है. प्रत्येक भाषा में भाषा भाषी के आचार व्यवहार को प्रकट करने वाली सूक्तियां होती है, जिनके अध्ययन से जीवन में प्रभावशाली प्रेरणाएं मिलती हैं. ऐसे ही अनेक नीति वचन, लौकिक न्याय, दर्शन, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि विभागों से संबंधित पारिभाषिक शब्द या वाक्यांश होते हैं जिन्हें अनायास ही उस भाषा के लोग समझ लेते हैं और दूसरी संस्कृति के लोग इन्हें नहीं समझ पाते.

अगर हम बात करें भारतीय भाषाओं के महत्व की तो संस्कृत भाषा का इतिहास बहुत पुराना है. वर्तमान समय में प्राप्त सबसे प्राचीन संस्कृत ग्रंथ ऋग्वेद है जो कम से कम ढाई हजार ईसा पूर्व की रचना है. संस्कृत को संस्कारित करने वाले भी कोई साधारण भाषाविद नहीं बल्कि महर्षि पाणिनि, महर्षि कात्यायन और योग शास्त्र के प्रणेता महर्षि पतंजलि हैं. इन तीनों महर्षियों ने बड़ी ही कुशलता से योग की क्रियाओं को भाषा में समाविष्ट किया है. यही इस भाषा का रहस्य है. विश्व की सभी भाषाओं में एक शब्द के एक या कुछ ही रूप होते हैं जबकि संस्कृत में प्रत्येक शब्द के 27 रूप होते हैं. संस्कृत केवल भाषा नहीं है अपितु संस्कृत विचार है, संस्कृत एक संस्कृति है, एक संस्कार है, संस्कृत में विश्व का कल्याण है, शांति है सहयोग है वसुदेव कुटुंबकम की भावना है. परंतु यह अत्यधिक पीड़ा दायक है कि यह भाव यह संस्कृति अपनी आखिरी सांसे गिन रही हैं. 2014 में आई भारत सरकार की एक रिपोर्ट के मुताबिक़ भारत में 42 भाषाएं ऐसी हैं, जो जल्द लुप्त हो जाएंगी. 5 भाषाएं ऐसी हैं जो अब बिल्कुल नहीं बोली जाती यथा अहोम, आंड्रो, रंगकास, सेंगमाई और तोलचा हैं. इसके अलावा 15 प्रतिशत भाषाएं विलुप्त होने की कगार पर हैं.

भारत में एक और भाषा है जिसे माझी कहते हैं, इसे बोलने वाले हमारे देश में सिर्फ़ चार लोग बचे हैं. सोचिए सिर्फ़ चार लोग और ये लोग भी एक ही परिवार के हैं, जो सिक्किम

के गंगटोक में रहते हैं. अगर पूरे एशिया महाद्वीप की बात करें तो यहां दो हज़ार 296 भाषाएं बोली जाती हैं, जिनमें से 38 प्रतिशत भाषाओं पर विलुप्त होने का ख़तरा है और युनेस्को के मुताबिक़, इसके चार कारण हैं- पहला कारण गरीबी, दूसरा कारण है पलायन, तीसरा कारण नौकरी से निकाले जाना और चौथा कारण है भाषा की पूरी जानकारी न होना.

युनेस्को के मुताबिक़, दुनियाभर में 6700 भाषाएं मौजूद हैं, जिनमें से लगभग 2500 भाषाएं ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वाले लोगों की संख्या 10 हज़ार या उससे कम है. 178 भाषाएं ऐसी हैं जिन्हें 10 से 50 लोग बोलते हैं जबकि 146 भाषाएं ऐसी हैं, जिन्हें बोलने वाले लोग 10 से भी कम बचे हैं. यही नहीं वर्ष 1950 से लेकर अब तक 230 भाषाएं पूरी तरह विलुप्त हो चुकी हैं.

ये आंकड़े आज हमें एक संदेश भी देते हैं कि अगर हमने अपनी मातृभाषा को लेकर गंभीरता नहीं दिखाई तो वह दिन दूर नहीं जब हम संवाद तो करेंगे लेकिन उस संवाद में भावनाएं नहीं होंगी. इसके पहले कि हमारी भाषाएँ एवं संस्कृति इतिहास बन कर रह जाएं, हमें उनके संरक्षण के लिए कठोर कदम उठाने की आवश्यकता हैं. भारत सरकार लुप्तप्राय भाषाओं के संरक्षण के लिए 'लुप्तप्राय भाषाओं की सुरक्षा और संरक्षण के लिए योजना' का संचालन कर रही है. ऐसी योजनाओं के साथ क्षेत्रीय भाषाओं को बढ़ावा देने के लिए विविध प्रतिस्पर्धाओं का आयोजन किया जाना चाहिए. भाषा के अस्तित्व को सुरक्षित रखने का सबसे बेहतर तरीका ऐसे विद्यालयों का विकास करना है जो अल्पसंख्यकों की भाषा (जनजातीय भाषाएं) में शिक्षा प्रदान करें. मध्य प्रदेश सरकार द्वारा अभियांत्रिकी की शिक्षा हिन्दी मे प्रदान करना सराहनीय कदम है. भाषाओं के संरक्षण के लिए सभी को मिलकर साथ आना होगा, तभी इस अभियान को सफल बनाया जा सकता है.

कुन्दन पाटीदार
मानव संसाधन विभाग
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई

नराकास बैठकों का आयोजन

दिनांक 21.09.2023 को अंचल कार्यालय, विजयवाड़ा में नराकास, विजयवाड़ा की प्रथम अर्धवार्षिक बैठक का आयोजन श्री नवनीत कुमार की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 09.08.2023 को नराकास, समस्तीपुर की छमाही बैठक श्री समीर साँई, क्षे. प्र., समस्तीपुर की अध्यक्षता में आयोजित की गई.

दिनांक 23.08.2023 को क्षे. का., महबूबनगर में नराकास महबुबनगर की बैठक का आयोजन श्री आर सत्यनारायण की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 24.08.2023 को नराकास, मऊ की अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन श्री मिथिलेश कुमार की अध्यक्षता में किया गया.

दिनांक 19.07.2023 को नराकास गाजीपुर की अर्द्ध-वार्षिक बैठक का आयोजन श्री कुमार दीप्तिमान की अध्यक्षता में किया गया.

भाषा और सांस्कृतिक पहचान

भाषा किसी समाज और संस्कृति की वाहक होती है. यह एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को प्राप्त होती है. भाषा एक सांस्कृतिक व्यवस्था है क्योंकि हम जिस समाज में रहते हैं उसी की भाषा सीख लेते हैं. भाषा सांस्कृतिक पहचान को बहुत हद तक प्रभावित करती है. सांस्कृतिक पहचान एक व्यक्ति के समुदाय के सामाजिक, सांस्कृतिक और ऐतिहासिक पहलुओं को दर्शाती है. भाषा उन पहचानों का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है जो समुदाय की संस्कृति और इतिहास को दर्शाती है. भाषा उनकी विशेषताओं को दर्शाती है जो एक समुदाय की विशिष्टता को निर्धारित करती हैं. भाषा

वह माध्यम है जिससे समुदाय के लोग एक दूसरे से जुड़ते हैं और सांस्कृतिक पहचान तय की जाती है.

भाषा समुदाय के विचारों, मूल्यों, विश्वासों और ऐतिहासिक घटनाओं को व्यक्त करती है और इससे सांस्कृतिक पहचान बनाए रखने में मदद मिलती है. भाषा एक समुदाय की उन्नति में भी बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. एक शक्तिशाली भाषा उन्नति की पथ प्रदर्शक होती है और उस समुदाय को वैश्विक मंच पर पहचान का मौका देती है. भाषा समुदाय के आर्थिक और सांस्कृतिक विकास में भी मदद करती है.

भाषा और सांस्कृतिक विकास व्यक्ति और समाज के बीच साकारात्मक संबंध स्थापित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. एक सजीव भाषा से अच्छे संबंध बनते हैं, जो समृद्धि और सामरिक समर्थन को बढ़ावा देते हैं. सांस्कृतिक विकास में भाषा का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है क्योंकि यह एक समाज की भौगोलिक, ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विषयों को सहेजने और साझा करने का साधन होती है. भाषा सांस्कृतिक विरासत को बनाए रखने में सहायक होती है, जो एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक जानकारी और मूल्यों को संगृहीत करने में मदद करती है. भाषा का सही उपयोग करके समृद्धि और विकास का मार्ग तय होता है, जिससे सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक प्रगति होती है. सही भाषा का अभ्यास करना समृद्धि की ओर एक कदम होता है, जो समृद्धि के साथ ही सांस्कृतिक समृद्धि की दिशा में भी मदद करता है.

समर्पण से भरी भाषा को सही बनाए रखने की आवश्यकता है, क्योंकि यह समृद्धि और सांस्कृतिक एकता की भावना को बढ़ावा देती है. भाषा और सांस्कृतिक विकास का आदान-प्रदान समझकर हम एक समृद्ध समाज की दिशा में कदम से कदम मिलाकर बढ़ सकते हैं.

भाषा संस्कृति की अभिव्यक्ति के लिए आंतरिक माध्यम है. किसी समुदाय के रीति-रिवाज को संप्रेषित करने के साधन के रूप में इसका एक महत्वपूर्ण सामाजिक कार्य है और समूह की पहचान और एकजुटता की भावनाओं को बढ़ावा देते हैं. अगर किसी समाज को उसकी भाषा से काट दिया जाए और उसकी जगह हम उसे कोई दूसरी भाषा दे दें तो इससे हम उसकी अस्मिता को भी प्रभावित करते हैं क्योंकि भाषा ही वह सर्वश्रेष्ठ तत्व है जिसके द्वारा हम मूल्यों का सृजन करते हैं.

भाषा के माध्यम से हम अपनी अनूठी पहचान प्रकट करते हैं और समाज में अपने स्थान की पुष्टि करते हैं. भाषा सामाजिक एकता के एक उपकरण के रूप में कार्य करती है और सांस्कृतिक पहचान को आकार देने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है. जब व्यक्ति अपने नए समुदाय की भाषा सीखते हैं और उसका उपयोग करते हैं तो वे उस समुदाय के लोगों और परंपराओं से अधिक जुड़ते हैं और सांस्कृतिक सम्मेलन में अपना योगदान देते हैं. समाज में एक भाषा एक समुदाय और संस्कृति के जीवन में प्रकृति और दुनिया के परिपेक्ष का हिस्सा होती है यह जीवन की दार्शनिकता हैं. भाषा एक समुदाय के भूतकाल और वर्तमान का प्रतिबिंब होती है. यह उस प्रतिबिंब को अनेक क्षेत्र में अपने ज्ञान के साथ भविष्य में ले जाती है एक भाषा उस संस्कृति की डीएनए होती है.

रूबी पाठक
क्षे.का., पुणे मेट्रो

'से' का नियम और भारत

अगर आपसे कहा जाए कि आज आपकी किसी वस्तु या सेवा को खरीदने कि क्षमता किस पर निर्भर करती है तो आपका उत्तर क्या होगा? आप शायद यही कहेंगे कि आपके पास उपलब्ध धन यह निर्धारित करेगा कि आप कोई वस्तु या सेवा खरीद सकते हैं या नहीं और अगर खरीद सकते हैं तो कितनी? लेकिन फ्रेंच अर्थशास्त्री "जीन बेपटिस्ट से" के अनुसार आपकी किसी वस्तु या सेवा को खरीदने कि क्षमता आपके पास उपलब्ध धन पर नहीं अपितु भूतकाल में आपके द्वारा बनाई गई वस्तु या सेवा को बेचने के ऊपर निर्भर करती है. इसको मैं एक उदाहरण से समझते हैं. माना आप कहीं पर नौकरी करते हैं तो आप वहाँ पर सेवा दे रहे हैं और पिछले महीने आपके द्वारा दी गयी सेवा पर निर्भर करेगा कि आपके पास आज कितना धन उपलब्ध है, उसी तरह अगर आप व्यापारी हैं तो पिछले समय में आपके द्वारा बनायी या बेची गयी वस्तुओं पर ही निर्भर करेगा कि आज आपके पास कितना धन उपलब्ध है.

कुल मिला के 'से' का नियम कहता है कि आज के दिन में आई मांग में कमी, धन की उपलब्धता में कमी के कारण नहीं अपितु बीते समय में अन्य सेवाओं और वस्तुओं के उत्पादन में कमी होने की वजह से होती है. जैसा कि आपने देखा कि कोविड -19 के समय ऑफिस व कारखाने बंद हुए जिसकी वजह से उत्पादन में और रोजगार में कमी आ गयी. तो जब उत्पादन ही नहीं हुआ तो उसकी मांग कहाँ से पैदा होगी फिर चाहे आपके पास कितना भी धन उपलब्ध हो. आपके पास नौकरी ही नहीं बची तो तनख़्वाह ही नहीं होगी जिसकी वजह से आपकी वस्तुओं और सेवाओं को खरीदने की क्षमता में कमी आ जाएगी और जब सेवा पैदा ही नहीं हुई तो उसे खरीदेगा कौन? हम 'से' के नियम को एक वाक्य में इस तरह से कह सकते हैं कि मांग का स्त्रोत धन नहीं अपितु पिछले समय का उत्पादन होता है.

अब अगर हम 'से' के नियम को देश कि आर्थिकी से जोड़ें तो यह कह सकते हैं कि उत्पादन ही आर्थिक विकास कि कुंजी है और सरकार को आर्थिक विकास के लिए उत्पादन को नियंत्रित ना करके उसे बढ़ावा देना चाहिए. जो धन है वो एक लेन देन का माध्यम है; पिछले समय में पैदा हुई सेवाओं और वस्तुओं का, आज पैदा हुई वस्तुओं से. तो एक विकसित और समृद्ध समाज वही होगा जहां ज्यादा से ज्यादा उत्पादनकर्ता होंगे फिर चाहे वो सेवाओं का उत्पादन हो या वस्तुओं का. वहीं जिस व्यवस्था में सिर्फ उपभोग होगा वहाँ कि अर्थव्यवस्था पीछे की ओर जाएगी.

जॉन मेंनार्ड कीन्स ने 'से' के नियम को 1936 में अपनी "जनरल थ्योरी ऑफ इम्प्लॉ इमेंट, इंटरेस्ट एंड मनी" में इस प्रसिद्ध वाक्य "सप्लाइ क्रिएट्स इट्स ओन डिमांड" से संक्षिप्त किया था, जिसका अर्थ है कि आपूर्ति अपनी मांग खुद बनाती है. वस्तुओं का आयात भी अर्थव्यवस्था के लिए फायदेमंद है, हालांकि उससे व्यापार घाटा बढ़ता है लेकिन जब अर्थवयवस्था में ज्यादा वस्तुएँ उपलब्ध होगी तो उसकी मांग पैदा होगी और अर्थव्यवस्था में पैसे का लेन देन बढ़ेगा जो और उत्पादन करने के काम आएगा.

अगर अर्थव्यवस्था में अपना उत्पादन नहीं होगा तो सरकार को अपना धन अर्थव्यवस्था में डालना पड़ेगा और आयात पर भी दबाव पड़ेगा जिसकी वजह से देश का विदेशी मुद्रा भंडार भी कम हो जाएगा. विदेशी मुद्रा कम होने की स्थिति में देश अपने विदेशी कर्ज का मूल धन और ब्याज चुकाने में चूक कर सकता है और अंतरराष्ट्रीय मंच पर कई सारी परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है, इसीलिए जरूरी है कि सरकार ज्यादा से ज्यादा उत्पादन बढ़ाने पर जोर दे.

'से' का नियम और भारत : भारत सरकार की मेक इन इंडिया की मुहिम जो 2014 में शुरू हुई थी देश में उत्पादन बढ़ाने का एक प्रयास है जिसके अच्छे परिणाम नजर भी आने लगे हैं. 25 सितंबर 2022 को मेक इन इंडिया मुहिम को पूरे आठ वर्ष पूरे हो चुके हैं और भारत एक वैश्विक उत्पादनकर्ता और निवेश स्थल के रूप में अपनी पहचान बना रहा है. प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफ डी आई) बढ़ाने को भारत सरकार ने नीतियों में सुधार किया है और प्रत्यक्ष विदेशी निवेश के दायरे में आने वाले क्षेत्रों को बढ़ाया गया है, जो एफ डी आई वित्त वर्ष 2014-15 में 45.15 अरब अमेरिकी डॉलर था वह 2021-22 में बढ़कर 83.6 अरब अमेरिकी डॉलर हो गया है. उत्पादन क्षेत्र को बढ़ावा देने के लिए 14 मुख्य उत्पादन गतिविधियों में "पी एल आई" अर्थात उत्पादन से जुड़ी प्रोत्साहन योजना लाई गयी है. स्थानीय उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए भी भारत सरकार ने सरकारी ख़रीदों में इन्हें प्राथमिकता देने के लिए नियम बनाए हैं ताकि इन उद्योगों की भागीदारी अर्थव्यवस्था में बढ़ाई जा सके.

वर्ष 2018-19 में भारत ने ₹2960 करोड़ मूल्य के खिलौने आयात किए, जिनमें से ज़्यादातर खिलौने उपयोग के लिए सही नहीं थे, भारत सरकार ने स्थानीय उत्पादन बढ़ाने के लिए कई कदम उठाए जिनमें आयात पर लगने वाले शुल्क को 20 प्रतिशत से बढ़ाकर 60 प्रतिशत करना, देशी कंपनियों को बढ़ावा देने के लिए 850 नए "बी आई एस" लाइसेन्स प्रदान किए गए तथा तरह-तरह के मेले आयोजित किए गए जहां देश में बने खिलौनों को बढ़ावा दिया गया. इन सभी प्रयासों के बाद वित्तीय वर्ष 2021-22 में भारत का आयात ₹877.80 करोड़ रह गया जिसमें 70 प्रतिशत तक की कमी देखी गयी.

इस तरह से अन्य क्षेत्रों में भी बढ़त देखी गयी है, "एक जिला एक उत्पाद" मेक इन इंडिया के तहत स्वदेशी उत्पादों को बढ़ावा देने और स्थानीय काश्तकारों को अंतरराष्ट्रीय मंच प्रदान करने हेतु भारत सरकार का एक सराहनीय प्रयास है.

'से' के नियम की समालोचना : 'से' के नियम के अनुसार आज के उत्पादन की वजह से भविष्य की मांग पैदा होती है, परंतु जॉन कीन्स कहते हैं कि आज जो भी आय उत्पन्न हुई है, उसमें से कुछ भाग उपभोग के लिए, कुछ निवेश के लिए और कुछ भाग बचत के लिए उपयोग होता है, अर्थात सारी आय

भविष्य में मांग उत्पन्न करने के लिए उपयोग नहीं होती. अत: 'से' का कथन अर्थव्यवस्था में पूरी तरह से लागू नहीं होता है.

दूसरा 'से' के अनुसार धन एक लेन देन का माध्यम है, जबकि वास्तविकता में धन मूल्य संचय करने का माध्यम भी है जो कि भविष्य में होने वाले उपभोग, बचत और निवेश को प्रभावित करता है.

निष्कर्ष : तमाम आलोचनाओं के बावजूद आज के समय में भी 'से' के नियम का महत्व है, सरकारें आज भी अपनी अर्थव्यवस्था में विकास की गति बढ़ाने के लिए उत्पादन को महत्व देती हैं, जिसमें भारत की मेक इन इंडिया पहल एक बहुत ही अच्छा उदाहरण है. विकसित देश जैसे अमेरिका, जापान, जहां पर विकास गति काफी कम हो गयी है फिर से उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए नयी योजनाएँ लेकर आ रहे है ताकि उनके देश में वस्तुओं और सेवाओं का उत्पादन बढ़ सके. उदाहरण के लिए, जापान स्मार्ट फैक्ट्री प्रमोशन प्रोजेक्ट लेकर आया है जिसके तहत वहाँ स्मार्ट फैक्ट्री के बाजार का आकार वर्ष 2019 के 8.4 अरब अमेरिकी डॉलर से बढ़कर वर्ष 2025 में 13.9 अरब डॉलर तक बढ़ना अपेक्षित है. वहीं हाल ही में अमेरिकी सरकार के ऊर्जा विभाग ने 50 मिलियन डॉलर की योजना की घोषणा की है जिसके अंतर्गत वहाँ के स्थानीय उत्पादकों को आसानी से स्मार्ट मैनुफेक्चरिंग तकनीक उपलब्ध हो सके. साथ ही अमेरिकी सरकार ने चिप्स अँड साइन्स एक्ट 2022 लागू किया है जिसके बाद उत्पादनकर्ताओं ने सेमी कंडक्टर उत्पादन के लिए करीब 50 अरब अमेरिकी डॉलर निवेश करने की घोषणा की है. अत: आज के समय में हुए वस्तुओं और सेवाओं के उत्पादन से भविष्य के विकास की मजबूत नींव रखी जा सकती है.

शैलेन्द्र डबराल
यू.एल.ए., गुरुग्राम

बैंकिंग सेवाएं और बिज़नेस एथिक्स

बैंक विभिन्न वित्तीय सेवाओं, ऋणों, और निवेशों को प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण संस्थान हैं और लोगों के आर्थिक जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. बैंकों को ग्राहकों, समाज के बाकी हिस्सों, और वित्तीय बाजारों के प्रति विशेष जिम्मेदारी होती है. इसलिए, बैंकों को नैतिक गतिविधियों और उच्चतम मानकों का पालन करने की आवश्यकता होती है. बैंकों को आमतौर पर ग्राहकों की विश्वासनीयता और संबंध का पालन करना होता है, और यह उन्हें आर्थिक संसाधनों का प्रबंधन करने का अधिकार देता है. इसलिए, एक बैंक के लिए नैतिक और ईमानदारीपूर्ण व्यवहार करना अत्यंत महत्वपूर्ण है. हालांकि, बैंक सेक्टर में कई मामलों में नैतिकता के लिए विवादास्पद मुद्दे उठ सकते हैं. इसलिए कुछ लोग यह मान सकते हैं कि बैंकिंग सेक्टर में बिजनेस एथिक्स एक मिथक है. इस मान्यता का कारण हो सकता है कि कुछ बैंकों द्वारा किए गए अनैतिक और अनुचित कर्मचारी व्यवहार के कारण संचालन में अविश्वसनीयता की स्थिति बढ़ सकती है. हालांकि, इसका अर्थ यह नहीं है कि 'बैंक एथिक्स' का अस्तित्व स्वत: ही मिथ्या हो जाता है. उच्चतम नैतिक मानकों और अच्छे व्यावसायिक आदर्शों का पालन करने के लिए कठिनाइयों का भी अस्तित्व हो सकता है, लेकिन यह बैंकों के लिए और आपराधिक परिप्रेक्ष्य में इसे मिथक नहीं बनाता है. बिजनेस एथिक्स की अप्राप्यता या मिथकता अनेक कारणों से उत्पन्न हो सकती है. आइए बात करते है बैंकों के परिप्रेक्ष्य में बिजनेस एथिक्स के बारे में मिथकों के बारे में:-

"बैंकों के लिए लाभ और नैतिकता का मेल नहीं हो सकता है."

वास्तविकता: कुछ लोग इस दृष्टिकोण के कारण ऐसा सोच सकते हैं कि व्यापार का प्रमुख उद्देश्य लाभ कमाना होता है और इसके लिए नैतिक मूल्यों का उल्लंघन किया जा सकता है. इसके अलावा, कुछ लोग व्यापार जगत में अनैतिकता और अन्य दुर्भावनापूर्ण परिप्रेक्ष्यों के आधार पर अपना मत रख सकते हैं. इससे व्यापार एथिक्स की जानकारी कम हो सकती है और व्यवसायिक संगठनों और उनके संचालकों को नैतिकता के महत्व को समझने के लिए उत्साह कम हो सकता है. वास्तविकता: यह मान्यता गलत है कि बैंकों का मुख्य उद्देश्य सिर्फ लाभ कमाना है. बैंकों को नैतिकता के मानकों के साथ काम करने की जिम्मेदारी होती है और उन्हें ग्राहकों की अपेक्षाओ, संबंधित नियमों और समाज के आदर्शों का पालन करना चाहिए. नैतिक गतिविधियों का पालन करने वाले बैंकों को उच्चतम स्तर की जिम्मेदारी, सत्यनिष्ठा, गोपनीयता, उच्चतम स्तर की शिक्षा और उपयुक्त नियंत्रण प्रक्रियाओं का पालन करना चाहिए.

"बैंक केवल अपने हित को महत्व देते हैं, ग्राहकों के प्रति उदारता नहीं रखते हैं."

वास्तविकता: यद्यपि लाभ प्राप्ति बैंकों के लिए महत्वपूर्ण होती है, लेकिन इसका यह अर्थ नहीं है कि वे अपने ग्राहकों की प्राथमिकता को महत्व नहीं देते हैं. उच्चतम गतिविधियों का पालन करने वाले बैंकों को ग्राहक सेवा, विश्वास और ग्राहकों के हित के प्रति समर्पण करना चाहिए. ये बैंक उच्चतम स्तर की सेवा, वित्तीय सलाह, सुरक्षा और संबंधित ग्राहकों की सुरक्षा की गारंटी प्रदान करने का प्रयास करते हैं.

"बैंकों को केवल सामाजिक जिम्मेदारी से नहीं जोड़ा जाना चाहिए."

वास्तविकता: बैंकों को सामाजिक जिम्मेदारी से जोड़ा जाना चाहिए क्योंकि वे समाज के

वित्तीय विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं. बैंकों को निवेश, कर्ज और संगठनों की वित्तीय सहायता के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक विकास का समर्थन करना चाहिए. इसके अलावा, वे स्वच्छता, वातावरणीय संरक्षण, गरीबी कमी, शिक्षा, स्वास्थ्य और समानता को प्रोत्साहित करने के लिए भी पहल कर सकते हैं.

"नैतिकता एक व्यक्तिगत मामला है न कि सार्वजनिक या बहस का मामला"

वास्तविकता: यद्यपि यह सच है कि व्यक्तियों को व्यावसायिक मामलों सहित जीवन में नैतिक विकल्प बनाने चाहिए लेकिन यह भी सच है कि व्यक्ति शून्य में काम नहीं करते हैं. व्यक्तिगत नैतिक विकल्प अक्सर चर्चा, वार्तालाप और बहस से प्रभावित होते हैं और समूह संदर्भों में किए जाते हैं.

"अच्छे व्यवसाय का अर्थ है अच्छी नैतिकता"

वास्तविकता: अधिकारी और फर्म जो एक अच्छी कॉर्पोरेट छवि बनाए रखते हैं ग्राहकों और कर्मचारियों के साथ निष्पक्ष और न्यायसंगत व्यवहार करते हैं और वैध कानूनी साधनों से लाभ कमाते हैं वास्तव में नैतिक हैं. इसलिए ऐसी फर्मों को कार्यस्थल में नैतिकता के साथ स्पष्ट रूप से चिंतित नहीं होना पड़ेगा. बस एक कठिन निष्पक्ष दिन का काम करें और इसकी अपनी नैतिक अच्छाई और पुरस्कार हैं.

बैंकिंग सेक्टर में बिजनेस एथिक्स की मिथक को दूर करने के लिए, निम्नलिखित बिंदुओं पर ध्यान देना महत्वपूर्ण है:

संगठनात्मक मूल्यों की प्राथमिकता: बैंकों को संगठनात्मक मूल्यों का पालन करने और नैतिक दृष्टिकोण को अपनाने के लिए प्रमुखता देनी चाहिए. यह संगठन की संस्कृति में समाविष्ट होना चाहिए और संचालन के हर पहलू में दिखना चाहिए. उच्चतम स्तर के नैतिक मानकों का पालन करने वाले व्यवसायी उच्चतम मान-मर्यादा, सत्यनिष्ठा, पारदर्शिता, ईमानदारी, सम्मान और सामाजिक जिम्मेदारी जैसी मानसिकताओं को विकसित करते हैं. उन्हें यह भी मान्यता होती है कि उच्चतम स्तर के नैतिक मानकों का पालन करने वाले व्यवसायी उच्चतम स्तर की सफलता, प्रतिष्ठा निर्माण और सतत विकास में सहायता कर सकते हैं.

ग्राहक केंद्रित होना: बैंकों को ग्राहकों की मर्यादाओं, उत्कृष्टता के मानकों, गोपनीयता के मानकों और उनकी सुरक्षा की जिम्मेदारी के प्रति सतर्क रहना चाहिए. ग्राहक सम्पर्क के समय, ग्राहक संबंधित मामलों के निपटान में और उच्च नैतिक मानकों का पालन करते समय भी नैतिकता बनाए रखनी चाहिए.

ग्राहकों की सुरक्षा और भरोसे का संरक्षण: बैंकों को अपने ग्राहकों की सुरक्षा, गोपनीयता और विश्वास के लिए प्रतिबद्ध रहना चाहिए.

सत्यनिष्ठा और पारदर्शिता: बैंकों को अपने ग्राहकों को सत्य और संपूर्ण जानकारी प्रदान करने, वाणिज्यिक संपत्ति के उपयोग के लिए स्पष्ट नियम और शर्तों का पालन करने के लिए संकल्पित रहना चाहिए.

सामाजिक जिम्मेदारी: बैंकों को सामाजिक और पर्यावरणिक परिप्रेक्ष्य से जिम्मेदारी लेनी चाहिए और सामुदायिक विकास को प्रोत्साहित करने के लिए योजनाएं विकसित करनी चाहिए.

संबंधित कानूनों और नियमों का पालन: बैंकों को सभी संबंधित कानूनों, नियमों और विनियमों का पूर्णतया पालन करना चाहिए. उन्हें वित्तीय परिप्रेक्ष्य, पैमाने और समय में सही और नैतिक तरीके से गतिविधियों को आयोजित करना चाहिए.

उच्चतम स्तर की शिक्षा और प्रशिक्षण: बैंक कर्मचारियों को उच्चतम मानकों के साथ नैतिकता की आवश्यकता को समझने और अपनाने के लिए उच्चतम स्तर की शिक्षा और प्रशिक्षण प्रदान करने की जरूरत होती है. बैंकों को अपने कर्मचारियों को नैतिकता और व्यावसायिक मानकों के बारे में जागरूक करने, उन्हें उच्चतम स्तर की प्रशिक्षण प्रदान करने, और नैतिक दिशा-निर्देशों का पालन करने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए. इसके अलावा, बैंकों को स्वयं भी नैतिक मूल्यों का पालन करने के लिए संकल्प लेना चाहिए, जिससे वे अच्छे उदाहरण स्थापित करके अपने संगठन को प्रेरित कर सकें.

इन सुझावों के माध्यम से बैंकों को नैतिक दृष्टिकोण बढ़ाने और अनैतिकता से बचने की क्षमता में सुधार करना चाहिए. बैंकिंग सेक्टर के लिए नैतिकता के महत्व को समझने और उसे प्रदर्शित करने के माध्यम से, हम एक न्यायसंगत और विश्वसनीय बैंकिंग सिस्टम का निर्माण कर सकते हैं.

सारांश : बैंकों के लिए बिजनेस एथिक्स महत्वपूर्ण हैं क्योंकि यह उन्हें विश्वास और सम्मान का आदान-प्रदान करने की क्षमता प्रदान करता है, जो उनके लिए लंबे समय तक सत्यापित संबंधों को सुनिश्चित करने में मदद करता है. बैंकों को नैतिकता, सामाजिक जिम्मेदारी और ग्राहक सेवा पर ध्यान केंद्रित करने के माध्यम से सामरिक फायदा और सामाजिक सुधार के संकेत मिलते हैं.

इस प्रकार, बैंकों को नैतिक गतिविधियों का पालन करने की जरूरत होती है और उच्चतम मानकों का पालन करते हुए सामाजिक और आर्थिक विकास में सक्रिय भूमिका निभाने का प्रयास करना चाहिए. इसके माध्यम से, बैंक समुदाय के विश्वास को प्राप्त कर सकते हैं और एक सतत और न्यायसंगत वित्तीय प्रणाली का निर्माण कर सकते हैं.

व्यापार और नैतिकता के बीच एक संतुलन स्थापित करना महत्वपूर्ण है. व्यापारिक दुनिया में नैतिक बर्ताव और जवाबदेही के माध्यम से सामाजिक और आर्थिक सुधार के संकेत मिल सकते हैं. बिजनेस एथिक्स विचारशीलता, जिम्मेदारी, सामाजिक न्याय और दृष्टिकोण के सशक्तिकरण को प्रोत्साहित करता है. इसलिए, बिजनेस एथिक्स को मिथक नहीं मानना चाहिए, बल्कि इसे बढ़ावा देना चाहिए ताकि व्यापारिक गतिविधियों में नैतिकता और सामाजिक जिम्मेदारी बढ़े और एक समृद्ध और न्यायसंगत समाज का निर्माण हो सके.

सचिन बंसल
यू.एल.ए., बेंगलूरु

मास्टर कल्याणनाथ

यह सन् 1970 की बात है. एक पाठशाला के अध्यापक "मास्टर कल्याणनाथ" अपने सब विद्यार्थियों में बहुत प्रिय थे और बच्चे प्यार से उनको मास्टर जी बुलाते थे. मास्टर जी सीधे सादे और सरल इंसान थे.

1970 में सरकारी स्कूलों की इमारतें छोटी एवं खस्ता हालत में थीं. जैसे बारिश में छत का टपकते रहना जब कभी तेज़ बारिश होती थी तब मास्टर जी सब बच्चों को अपनी कुर्सी के निकट बिठा लेते थे और शिक्षाप्रद कहानियां सुनाते थे वह बारिश का दिन सबके लिए एक यादगार दिन बन जाता था. सब बच्चे पिछले दिन किए अच्छे कार्यों के बारे में मास्टर जी को जरूर बताते थे और मास्टर जी उनकी बातें ध्यान से सुनते थे. मास्टर जी हमेशा उनका मार्गदर्शन एवं मनोबल बढ़ाते और उनको अच्छे और सच्चे मार्ग पर चलने की शिक्षा देते थे.

जब कोई बच्चा पढ़ते समय खिड़की से बाहर देख रहा होता तो वह उस बच्चे को अक्सर यह कहते कि यह बड़ा होकर लेखक / कवि बनेगा. यह सुनकर सब बच्चे मुस्कराते थे. मास्टर जी ने कभी भी किसी बच्चे पर गुस्सा नही किया. मास्टर जी किराये के घर में रहते थे और अपनी थोड़ी पगार में बहुत संतुष्ट थे.

मास्टर जी जब पाठशाला नहीं आते थे उस दिन सब बच्चों को मास्टर जी की कमी बहुत खलती थी. कुछ अच्छे और यादगार वर्ष बीतने के बाद सब बच्चे प्राइमरी स्कूल से हाई स्कूल और हाई स्कूल की शिक्षा प्राप्त कर एक दूसरे से बिछड़ गए. कोई उच्च शिक्षा के लिए विदेश चला गया तो कोई अपने पिता के कारोबार में अपना योगदान देने लगा. ज़िंदगी की भागादौड़ी में सब बच्चे एक दूसरे को लगभग भूल चुके थे. सब अपने लक्ष्य को पाने की होड़ में लग गए थे और उस समय एक दूसरे से जुड़े रहने के लिए कोई माध्यम भी उपलब्ध नहीं था और समय के साथ सब मास्टर जी को भूल गए थे, समय का पहिया घूमता गया, इस बीच एक विद्यार्थी "सत्यदेव" जो विदेश चला गया था फिर जब वो भारत लौटा तब उसे बचपन के सब किस्से कहानियाँ एवं मास्टर जी की याद आने लगी. तब सत्यदेव को अपनी वह पाठशाला भी याद आई जिसमे वह पढ़ा करता था तब वह पाठशाला को देखने गया जोकि हाई स्कूल की एक पक्की इमारत में बदल चुकी थी. सत्यदेव को पिछले सभी पल याद आने लगे और उसकी आंखें भर आईं. उस समय सत्यदेव बस एक ही बात सोच रहा था कि मास्टर जी अब कहाँ पर होंगे और किस हाल में होंगे.

मास्टर जी की पूछताछ करने पर स्कूल वालों ने सत्यदेव को बताया कि 15 साल पहले मास्टर जी नौकरी से सेवानिवृत्त हो चुके थे और अब वो कहां पर हैं और क्या कर रहे है, इसका उनको कोई ज्ञान नही है. सत्यदेव ने मन ही मन में निश्चय कर लिया था कि वो कैसे भी करके मास्टर जी को ढूंढ निकालेगा.

इधर-उधर से पूछताछ करने पर सत्यदेव को किसी ने बताया कि मास्टर जी सेवानिवृत्त होने के बाद किताबों की किसी लाइब्रेरी में काम कर रहे थे. सत्यदेव का मास्टर जी को खोजने का सफर शुरू हुआ और बहुत ढूंढने पर सत्यदेव को लायब्रेरी भी मिल गई जिसमें मास्टर जी काम करते थे और उस लाइब्रेरी के मालिक ने सत्यदेव को बताया कि मास्टर जी उसके पास 7 साल पहले काम करते थे पर किसी वजह से वो अपने गाँव वापिस लौट गए थे. मास्टर जी की खोज एक बार फिर शुरू हो चुकी थी और उसी खोजबीन में उसको मास्टर जी के पुश्तैनी घर का पता चल गया और वह उसी पल में मास्टर जी की खोज में उनके पुश्तैनी घर की तरफ रवाना हो गया.

पहले रेल और फिर बस का सफर करने के बाद वह गाँव में पहुंचा उस छोटे से गांव को देख कर सत्यदेव के मन में मास्टर जी से मिलने की उम्मीद बंध चुकी थी. इसी खोजबीन में सत्यदेव गांव की छोटी, बड़ी गलियों में मास्टर जी का नाम बता कर उनके बारे में पूछताछ करने लगा और उसी खोजबीन के तहत सत्यदेव गांव की छोटी सी पाठशाला में भी गया और वहाँ उसकी मुलाकात एक वृद्ध व्यक्ति से हुई उन्होंने सत्यदेव से पूछा कि "कहीं तुम केदारी को तो नहीं खोज रहे जो मास्टरी करने शहर चला गया था" उस बूढ़े इंसान से यह बात सुन कर सत्यदेव को उम्मीद की एक किरण दिखाई देने लगी थी. उसने जल्दी से उस बूढ़े आदमी से कहा था "जी हां मैं उन्हीं की बात कर रहा हूं."

वृद्ध ने सत्यदेव को मास्टरजी के घर का पता दिया जो उसी गली के नुकड़ पर था. तब सत्यदेव ने धड़कते दिल से उस घर का दरवाज़ा खटखटाया था और एक अधेड़ सी दिखाई देने वाली महिला ने उस घर का दरवाज़ा खोला, उनसे हुई थोड़ी सी बातचीत के दौरान ही उन्होंने सत्यदेव को अपने घर के भीतर एक सोफे पर बिठाया. महिला ने सत्यदेव को बताया कि मास्टर जी उन्हें यह घर बेच कर वहां से चले गए थे सत्यदेव के यह पूछने पर कि वो कहां गए होंगे के जवाब में महिला ने कहा था कि घर बेच कर शायद मास्टर जी को अपनी दो बेटियों की शादी करनी थी यह सब सुनकर सत्यदेव का दिल भर आया था और वह मन ही मन में सोच रहा था कि पता नही मास्टर जी अब किस हाल में होंगे और कहां पर होंगे. अब उसको मास्टर जी के मिलने की कोई उम्मीद नज़र नहीं आ रही थी.

उसी मायूसी भरे पलों में वह गांव के बस स्टाप पर पहुंच गया तभी उसकी निगाहें पेड़ की छांव में बनी किताबों की एक दुकान पर गई. किताबों की दुकान पर एक छोटा सा बच्चा बैठा हुआ था उस बच्चे ने सत्यदेव

को जब दुकान पर आते देखा तो सत्यदेव से कहा "नमस्ते साहब, आप को क्या चाहिए?" सत्यदेव ने कहा "बेटे एक हिन्दी का अखबार देना." फिर बच्चे ने हिन्दी का अखबार सत्यदेव को दिया.

सत्यदेव ने उस बच्चे को 100 रूपए दिए जब तक बच्चा उसे बाकी पैसे वापिस देता, तब तक सत्यदेव पास ही खड़ी बस में जा बैठा जो शहर की ओर रवाना हो गई, वह बच्चा बाकी बचे पैसे देने के लिए बस के पीछे भागा पर वह बस धूल उड़ाती, बहुत तेज़ी से अपनी मंज़िल पर आगे बढ़ गई थी और उसी पल हाथों में पानी का एक मटका थामें हुए एक वृद्ध सा दिखाई देने वाले व्यक्ति अपनी किताबों की दुकान पर आ पहुंचा. तब उस बच्चे ने उस वृद्ध व्यक्ति से कहा, "मास्टर जी ग्राहक ने एक अखबार लिया था और मुझे 100 रुपये दिए थे पर जब तक मैं पैसे वापिस करता तब तक वो बस में बैठ कर चले गए." उस वृद्ध ने माथे पर आए पसीने को पोंछा और कहा "कोई बात नहीं बेटे, वह जब भी वापिस आकर अपने पैसे मांगेंगे, हम उन्हें उनके पैसे वापिस लौटा देंगे."

यह बुजुर्ग और कोई नहीं वह मास्टर कल्याणनाथ जी ही थे. जो तपती धूप में एक वृक्ष के नीचे अपना डेरा डाले बैठे हुए थे. उन्होंने कपड़ा बाँध कर उस दुकान के साथ अपने रहने की व्यवस्था भी कर रखी थी. वह बच्चा उनका विद्यार्थी था और वो उस बच्चे को अपने खाली समय में बिना पैसे लिए पढ़ा दिया करते थे.

मास्टर जी ने अपने शिक्षक होने का धर्म पूरी ईमानदारी और सच्चाई के साथ निभाया था, पर दूसरी तरफ उनका वह छोटा, नन्हा सा विद्यार्थी भी, अब सत्यदेव बन कर, अपना धर्म खूब निभा रहा था, जैसे ईश्वर ने मास्टर जी के सब विद्यार्थियों की तरफ से, उस छोटे नन्हें से फरिश्ते को मास्टर जी की मदद करने के लिए भेजा था. वह नन्हा सा विद्यार्थी एक सेनापति की भांति मास्टर जी की हर संभव मदद करने के लिए तैयार सा खड़ा था. ईश्वर के आशीष से, छोटे बच्चों के भविष्य निर्माता, मास्टर कल्याणनाथ जैसे सच्चे और ईमानदार शिक्षक को कभी भी किसी की मदद की जरूरत नहीं पड़ सकती. उन जैसे सच्चे शिक्षकों पर, ईश्वर की कृपा सदा बनी रहती है और कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी उनके जैसे उजले चरित्र वाले इंसान का मनोबल कभी नहीं टूटता.

न जाने कितने ही मास्टर कल्याणनाथ जैसे सच्चे और ईमानदार शिक्षक, बच्चों को ईमानदारी और सच्चाई का पाठ पढ़ाते पढ़ाते, खुद पैसों के अभाव में, जीवन की कठिनाईयों को झेलते वक्त की अमिट धुंध में समा जाते है. अपने शिक्षकों का सदा सम्मान करिए, क्योंकि आपके शिक्षक आपको जीवन से जूंझना सिखाते है और आपके जीवन को नई दिशा देते है.

सुमित गर्ग
क्षे.का., बठिंडा

राजभाषा निरीक्षण

दिनांक 20.09.2023 को अंचल कार्यालय विजयवाड़ा का राजभाषा कार्यान्वयन संबंधी निरीक्षण श्री अनिर्बान कुमार विश्वास, उप निदेशक, भारत सरकार, क्षे. का. का., बेंगलुरु (दक्षिण) द्वारा किया गया. इस अवसर पर अंचल प्रमुख श्री नवनीत कुमार, उप अंचल प्रमुख श्रीमती शारदा मूर्ति, श्री राजीव रंजन, सहा महाप्रबन्धक तथा सुश्री ए वी लक्ष्मी, प्रबंधक (राभा) उपस्थित रहे.

दिनांक 23.08.2023 को श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय द्वारा क्षे. का., बठिंडा के अंतर्गत पटियाला शाखा का राजभाषाई निरीक्षण किया गया.

चंद्रयान–3 भारतीय चंद्र अभियान

चंद्रयान-3 चांद पर खोजबीन करने के लिए भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) द्वारा तैयार किया गया. यह भारत का तीसरा चंद्र मिशन और चंद्रमा की सतह पर सॉफ्ट लैंडिंग का दूसरा प्रयास है. चंद्रयान-3 का लॉन्च 14 जुलाई, 2023 को भारतीय समय के अनुसार अपराहुन 2:35 बजे श्रीहरिकोटा के सतीश धवन अंतरिक्ष केंद्र से किया गया. चांद पर यान भेजने का यह भारत का तीसरा मिशन है. 14 जुलाई 2023 को पृथ्वी से भेजा गया चंद्रयान-3 अपनी 41 दिन की यात्रा पूरी करने के बाद चंद्रमा की सतह पर 23 अगस्त 2023 को चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग की. भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान एजेंसी के वैज्ञानिकों के साथ सारे भारतवासी खुशी से झूम उठे. चंद्रयान-3 के साथ भारत चांद के दक्षिणी ध्रुव पर सफल लैंडिंग करने वाला पहला देश बन गया.

चंद्रयान-3 को लॉन्च करने के लिए एलवीएम3 एम4 लॉन्चर का सफलतापूर्वक उपयोग किया गया है. एलवीएम3 के उड़ान भरने के लगभग 16 मिनट बाद अंतरिक्ष यान रॉकेट से अलग हो गया. यह एक अंडाकार पार्किंग कक्षा (ईपीओ) में प्रवेश कर गया.

चंद्रयान-3 के प्रणोदन मॉड्यूल में एक नया प्रयोग किया गया है. चंद्रयान-3 का प्रोपल्शन मॉड्यूल, संचार रिले उपग्रह की तरह व्यवहार करेगा. प्रोपल्शन मॉड्यूल, लैंडर के अलावा, चंद्र कक्षा से पृथ्वी के वर्णक्रमीय (स्पेक्ट्रल) और पोलारिमेट्रिक माप का अध्ययन करने के लिए SHAPE नामक एक पेलोड भी ले जा रहा है. प्रोपल्शन मॉड्यूल, लैंडर और रोवर युक्त ढांचे को तब तक अंतरिक्ष में धकेलता रहेगा जब तक कि अंतरिक्ष यान 100 किमी ऊंचाई वाली चंद्र कक्षा में न पहुँच जाए.

चंद्रयान-3 भारत की ओर से चलाया गया एक महत्वपूर्ण अंतरिक्ष मिशन है. चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव पर सॉफ्ट-लैंडिंग करने वाला पहला मिशन बनकर चंद्रयान-3 ने इतिहास रच दिया है.

दक्षिणी ध्रुव एक ऐसा क्षेत्र है, जिसका अब तक अध्ययन नहीं किया गया है, क्योंकि कोई भी यहाँ पहुंच नहीं पाया है. भारत अब संयुक्त राज्य अमेरिका, रूस और चीन के साथ चंद्रमा पर सफलतापूर्वक लैंडिंग करने वाले देशों की सूची में शामिल हो गया है. इस मिशन के सफल होने के बाद अंतरिक्ष क्षेत्र में भारत को एक नई पहचान मिली. इस मिशन का उद्देश्य सुरक्षित और सहज चंद्र लैंडिंग, रोवर गतिशीलता और अंत:स्थाने वैज्ञानिक प्रयोगों का प्रदर्शन करना है. यह चंद्रमा पर मौजूद प्राकृतिक तत्व एवं खनिजों की एवं वायुमंडल की जांच कर वहां मौजूद प्राकृतिक गैसों की जानकारी साझा करेगा. चंद्रयान-3 से भारत के वैज्ञानिकों को चंद्रमा की सतह, गुरुत्वाकर्षण बल और वायुमंडल की जानकारी प्राप्त होगी.

चंद्रयान-3 का उद्देश्य दक्षिणी ध्रुव के पास "स्थायी रूप से छाया वाले क्षेत्रों" की जाँच करना है. विक्रम लैंडर का नियंत्रित अवरोह (नीचे उतरने की प्रक्रिया) चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव के सबसे निकट पहुँचने के रूप में परिणत हुआ.

23 अगस्त, 2023 को शाम 6:04 बजे चांद के साउथ पोल पर चंद्रयान-3 के लैंडर मॉड्यूल ने सुरक्षित एवं सॉफ्ट लैंडिंग की.

इस प्रकार चंद्रयान-3 की सफलता ने पूरे विश्व में भारत की विश्वसनीयता को और भी बढ़ा दिया और दुनिया को यह संदेश मिला कि भारत के पास यह प्रतिभा है, जो कम बजट और कम संसाधनों में भी वह काम कर सकता है जो विश्व में बड़े-बड़े देश नहीं कर सकते.

इसरो का नाम अब दुनिया की बड़ी-बड़ी स्पेस एजेंसियों में शामिल है. चंद्रयान-3 की सफलता का सीधा असर अर्थव्यवस्था पर पड़ेगा. साथ ही इस क्षेत्र से जुड़े स्टार्टअप की नई संभावनाओं को बल मिलेगा. भारत में वर्तमान में 140 रजिस्टर्ड स्पेस-टेक स्टार्टअप हैं. इनमें स्कायरूट, सैटश्योर, ध्रुव स्पेस शामिल हैं. ये सैटेलाइट सिग्नल से लेकर ब्रॉडबैंड और सोलर फार्म्स तक काम कर रहे है. इसरो ने देश का पहला प्राइवेट रॉकेट लॉन्च किया था. भारत में पहले प्राइवेट रॉकेट को तैयार करने वाली कंपनी स्काईरूट एयरोस्पेस है. इसके को -फाउंडर पवन कुमार चंदाना है. भारत ने देश के प्राइवेट रॉकेट को लॉन्च करके यह साबित कर दिया है कि विदेशी निवेश बढ़ने की संभावना है.

चंद्रयान-3 की सफलता के साथ स्पेस टेक और साइंस के क्षेत्र में काम करने वाले संस्थान और कंपनियों को दुनिया में प्रोत्साहन मिलेगा. देश में इनकी संख्या बढ़ेगी. इसके साथ ही रोजगार के मौके भी बढ़ेंगे. स्पेस टेक्नोलॉजी के विकास से देश की आर्थिक तरक्की भी हो रही है. इस प्रकार सब कुछ योजना के अनुसार हुआ तो साल 2047 तक भारत राजस्व के मामले में 25 फीसदी का भागीदार होगा.

सिद्धार्थ शर्मा
क्षे.का., आणंद

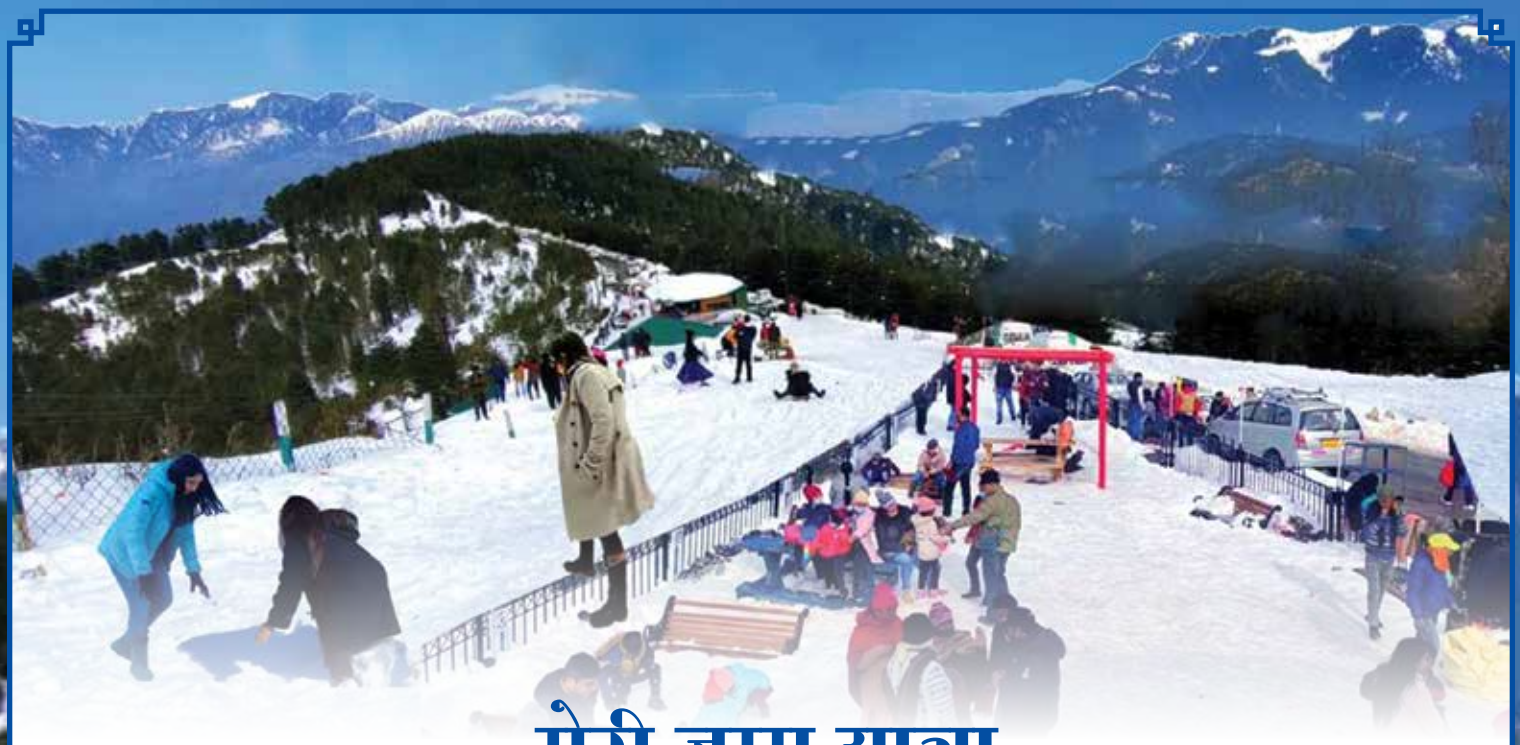

मेरी जम्मू यात्रा

वर्ष 2020 और 2021 कोविड महामारी की वजह से पूरी दुनिया में पर्यटन उद्योग मंदी की भेंट चढ़ गया. पर्यटक भी न चाहते हुए अपने घरों तक सीमित हो गए थे. परिस्थितियों के सामान्य होने पर पति और पारिवारिक मित्र की सलाह पर हमने जम्मू जिले की यात्रा करने का मन बनाया, जिसमें जम्मू के साथ माँ वैष्णोदेवी की यात्रा और पटनीटॉप हिल स्टेशन को भी शामिल किया.

यात्रा की शुरुआत हमारे द्वारा जम्मू शहर से ही की गई सर्वप्रथम हमने प्रसिद्ध बाग-ए-बहु उद्यान, अमर महल संग्रहालय का भ्रमण किया और अंत में जम्मू कश्मीर के पूर्व राजा श्री गुलाब सिंह द्वारा स्थापित श्री रघुनाथ मंदिर के दर्शन किए. रघुनाथ मंदिर की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि एवं निर्माण शैली अत्यंत मनोरम है.

अगले दिन हमने जम्मू से लगभग 70 किलोमीटर दूर सुरीनसर और मानसर झील का भ्रमण किया. दोनों झीलों की खूबसूरती मन को मोहने वाली थी. सूरीनसर झील पर उपलब्ध एडवेंचर एक्टिविटी बच्चों और बड़ों दोनों के लिए आकर्षक थी.

यात्रा के अगले पड़ाव में हम पटनीटॉप पहुंचे. पटनीटॉप जम्मू के प्रमुख हिल स्टेशन में शामिल है जो कि समुद्र तल से 6640 फीट की ऊंचाई पर स्थित है. देवदार और चीड़ के पेड़ों से घिरा यह छोटा सा हिल स्टेशन बरबस ही सबका मन मोह लेता है. सुबह-सुबह यहां पर ट्रेकिंग करने पर एक अलग ही अनुभूति होती है. यहां चिल्ड्रन पार्क, एप्पल गार्डन, केवल कार, नाग मंदिर जैसे लोकप्रिय पर्यटन स्थल हैं. पटनीटॉप में प्रवेश से पहले यहां पर बरसों पुरानी प्रसिद्ध प्रेम स्वीट्स की मिठाई की दुकान है. जहाँ बेसन और देसी घी से बनने वाली अत्यंत ही स्वादिष्ट मिठाई "पतीसा" मिलती है. यहां की प्राकृतिक खूबसूरती इतनी सुंदर है कि इस छोटे से कस्बे से निकलने को दिल ही नहीं करता.

पटनीटॉप से ही लगभग 18 किलोमीटर दूर एक और प्रमुख हिल स्टेशन नाथाटॉप है, जो समुद्रतल से 8894 फीट की ऊंचाई पर स्थित है. यह स्टेशन अधिकांश समय बर्फ से ढका रहता है. सर्दियों में यहां का तापमान शून्य डिग्री से भी नीचे चला जाता है. सर्दी में बर्फबारी देखने कई पर्यटक इस हिल स्टेशन पर आते है.

यात्रा के आखिरी पड़ाव में हम इस यात्रा के सबसे महत्वपूर्ण पड़ाव माँ वैष्णोदेवी के दरबार कटरा शहर पहुंचे. मुझे लगभग 11 वर्ष बाद माँ वैष्णो देवी के दर्शन करने का सौभाग्य मिला. माँ वैष्णो देवी का स्थान त्रिकूट पर्वत पर स्थित है. यात्रा की शुरुआत हमने सुबह 8 बजे से की और रात 10 बजे तक वापस आ गए. यूँ तो यात्रा में घोड़े, खच्चर एवं पालकी वाले यात्रा कराने के लिए उपलब्ध थे, लेकिन दोनों तरफ की लगभग 26 किलोमीटर की यात्रा हमने बच्चों सहित पैदल ही तय की. भैरोघाटी के दर्शन हेतु हमने केबल कार का प्रयोग किया. संपूर्ण यात्रा के दौरान माँ वैष्णोदेवी के जयकारे लगाते हुए और भक्ति के रस में डूबते हुए माँ के दर्शन किए. कटरा शहर से हमने खूब सारी खरीददारी की जिसमें मुख्यत: अखरोट, बादाम आदि लिए. वहीं बच्चों के लिए क्रिकेट बैट खरीदे जो कि उत्तम गुणवत्ता के थे एवं बेहद कम दरों पर उपलब्ध थे.

इस प्रकार तीर्थ और पर्यटन के इस अदभुत यात्रा का समापन हुआ.

वर्षा अग्रवाल
क्षे.का., आणंद

आचार्य रामलोचन शरण

हिंदी भाषा और साहित्य के उन्नयन में अप्रतिम अवदान देने वाले मनीषी विद्वान, प्रकाशक और संपादक आचार्य रामलोचन शरण 'बिहारी', खड़ी बोली के अभिनव गद्य शैली के प्रवर्तक माने जाते हैं. आचार्य शिवपूजन सहाय ने उन्हें 'बिहार का द्विवेदी' कहा है. आधुनिक हिंदी के नव-जागरण के उषा-काल के जिन मनीषी हिंदी-सेवियों को अत्यंत श्रद्धा से स्मरण किया जाता है, शरण जी उनमें अग्र-पांक्तेय हैं.

आचार्य रामलोचन शरण का जन्म 11 फरवरी 1889 को बिहार के सीतामढ़ी जिले में हुआ था. वे हिंदी के पुरोधा लेखक थे. उनकी रचनाओं में बाल मनोविज्ञान की अटूट छाप देखने को मिलती है. उनकी युगख्याती रचना 'मनोहर पोथी' को भला कौन नहीं जानता. उन्होंने बाल मनोभाव में रचित इस पुस्तक को जन-जन तक पहुंचाकर बच्चों में हिंदी के प्रति झुकाव तथा हिंदी सीखने की प्रवृति को मजबूत किया. आज भी 'मनोहर पोथी' के माध्यम से लाखों बच्चे हिंदी सीखने के शुरुआती क्रम में आधार पुस्तक के रूप में प्रयोग करते हैं. उन्होंने हिंदी साहित्य को जन-जन तक पहुंचाने के लिए लोगों के मन में इसके प्रति प्रेम एवं प्रेरणा जागृत करने का काम किया.

वे एक स्थापित हिंदी साहित्यकार, व्याकरणविद् और प्रकाशक थे. उन्होंने सन् 1915 में लहेरियासराय दरभंगा में और साथ ही पटना में पुस्तक भंडार की स्थापना की, जिसने लहेरियासराय जैसे अल्पज्ञात स्थान को भारतीय प्रकाशन में प्रमुख बना दिया. आचार्य शरण ने वर्ष 1929 में अपनी प्रकाशन गतिविधियों को पटना में स्थानांतरित कर दिया. उन्होंने सबसे पहले मैथिली लिपि (मिथिलाक्षर) में मैथिली पुस्तकों की छपाई शुरू की. वे ऐसा करने वाले पहले व्यक्ति थे.

आचार्य रामलोचन शरण ने सच्चिदानंद सिन्हा की कुछ प्रख्यात बिहार समकालीन पुस्तकें, महात्मा गांधी की पुस्तकें और अन्य गांधीवादी साहित्य भी प्रकाशित किए.

गोस्वामी तुलसीदास द्वारा लिखित सभी पुस्तकों का उनका क्लासिक मैथिली प्रतिपादन अद्वितीय है. उन्होंने तुलसीदास द्वारा रामचरितमानस पर चार खंडों में सिद्धांत भाष्य का संपादन और प्रकाशन किया, जो आध्यात्मिक साहित्य में स्थायी योगदान है.

आचार्य रामलोचन शरण ने बालक पत्रिका, हिमालय पत्रिका और होनहार (हिंदी और उर्दू) जैसी कई पत्रिकाओं का भी प्रकाशन किया. अपने प्रकाशन प्रयासों के माध्यम से उन्होंने रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारी सिंह 'दिनकर', आचार्य शिवपूजन सहाय जैसे कई अन्य हिंदी साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया. अपने प्रकाशन प्रयासों के माध्यम से उन्होंने रामवृक्ष बेनीपुरी, रामधारी सिंह 'दिनकर', आचार्य शिवपूजन सहाय जैसे कई अन्य हिंदी और मैथिली साहित्यकारों को प्रोत्साहित किया. आचार्य रामलोचन शरण ने एक दशक से अधिक समय तक अपनी प्रतिभा को विकसित करने के लिए कलाकार उपेंद्र महर्थी को निर्देशित किया. वे बिहार के युवा लेखकों को प्रोत्साहित करने में अग्रणी थे और उन्होंने अपने संपादन के माध्यम से हिंदी भाषा का मानकीकरण किया.

आचार्य रामलोचन शरण जी के कारण लहेरियासराय जैसा छोटा स्थान भी प्रकाशन का केंद्र बन गया. उनकी कंपनी पांच सौ स्थानीय लोगों को रोजगार दे रही थी. उन्हें 'बालक' पत्रिका और असंख्य मूल्यवान रचनात्मक परियोजनाओं सहित दक्षिण एशिया में सर्वोत्तम नियोजित प्रयास के लिए संपादन, उत्पादन और विपणन संचालन में प्रशिक्षित किया गया था. वे देश में स्वतंत्रता के लिए राष्ट्रवादी रचनात्मक प्रतिभाओं द्वारा जारी ऊर्जा को साहित्य में परिवर्तन के माध्यम से प्रसारित करने के लिए एक उत्प्रेरक थे. जनता के लिए जानकारीपूर्ण प्रेरक पुस्तकें; ग्रामीण पुस्तकालयों के लिए 100 आवश्यक पुस्तकें; पंचांग, भारतीय सभ्यता पर प्रेरक पुस्तकें आदि का बड़े पैमाने पर प्रकाशन किया गया. रामलोचन नियमित रूप से क्षेत्र के संतों, कलाकारों, कवियों, दार्शनिकों, सामाजिक कार्यकर्ताओं, शिक्षाविदों, नीति नियोजकों और नौकरशाहों की मेजबानी करते थे.

हिंदी साहित्य के प्रति समर्पित पुरोधा को अंततः काल ने अपने गाल में समा ही लिया. आचार्य रामलोचन शरण की मृत्यु 14 मई 1971 को दरभंगा में हुई. उनकी मृत्यु से पूरा देश शोक में डूब गया था. उनकी मृत्यु पर भारत के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री वी. वी. गिरि ने कहा कि बच्चों के साहित्य के लिए आचार्यजी की सेवा को हमेशा याद किया जाएगा क्योंकि यह आने वाली पीढ़ियों को हमेशा प्रेरित करेगी. प्रसिद्ध अंग्रेजी अखबार दैनिक इंडियन नेशन ने अपने संपादकीय में लिखा, 'अगर रामलोचन शरण का जन्म बिहार में नहीं हुआ होता तो हिंदी साहित्य की प्रगति में एक या दो दशक की देरी हो जाती.'

आचार्य रामलोचन शरण हिंदी साहित्य के एक आधार स्तंभ हैं. उनकी रचनाओं तथा प्रयासों ने हिंदी जगत को नया आयाम प्रदान किया है. आम लोगों के बीच में हिंदी साहित्य के प्रति झुकाव तथा स्नेह को प्रखरता प्रदान करने के लिए उन्होंने निरंतर प्रयास किया. उनके प्रयासों का ही प्रतिफल है कि उन्हें 'बिहार का द्विवेदी' कहा जाता है. आज भी उनके प्रयासों की चर्चा हिंदी साहित्य में सकारात्मकता के साथ की जाती है. ऐसे महान साहित्यकार पर हमें गर्व है.

डॉ. विजय कुमार पाण्डेय
क्षे.का., पटना

कोट्टारात्तिल शंकुन्नी की ऐथिह्यमाला

"ऐथिह्यमाला" मलयालम लेखक "कोट्टारात्तिल शंकुन्नी" (1855-1937) द्वारा तैयार की गई किंवदंतियों की कहानियों का एक संग्रह है. किंवदंतियों पर रचनाएँ शंकुन्नी द्वारा उन्नीसवीं सदी की प्रसिद्ध मलयालम साहित्यिक पत्रिका 'भाषापोशिनी' में एकत्र और प्रकाशित की गईं.

पुस्तक में केरल के महान राजाओं, ब्राह्मणों और नायकों के जीवन और कारनामों पर 126 कहानियाँ हैं, जैसे कदमत्तथु कथानार, कायमकुलम कोचुन्नी, परयी पेट्टा पंथिरुकुलम और अन्य. यह पुस्तक आठ खंडों में विभाजित है और पहली बार 1909 में प्रकाशित हुई थी. शंकुन्नी को यह काम पूरा करने में एक चौथाई सदी से अधिक का समय लगा.

यह पुस्तक केरल की सांस्कृतिक और ऐतिहासिक विरासत का खजाना है. यह देश की समृद्ध लोककथाओं, पौराणिक कथाओं और परंपराओं को प्रदर्शित करता है. कहानियाँ तथ्यों और कल्पना, हास्य और ज्ञान, यथार्थवाद और कल्पना का मिश्रण करते हुए सरल और मनोरम शैली में लिखी गई हैं. यह पुस्तक न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि विद्वानों और शोधकर्ताओं के लिए एक मूल्यवान संदर्भ भी है.

ऐथिह्यमाला मलयालम साहित्य में सबसे लोकप्रिय और व्यापक रूप से पढ़ी जाने वाली पुस्तकों में से एक है. इसका अंग्रेजी, हिंदी, तमिल और कन्नड़ सहित कई भाषाओं में अनुवाद किया गया है. इसे फिल्मों, टेलीविजन धारावाहिकों, कॉमिक्स और नाटकों में भी रूपांतरित किया गया है. यह पुस्तक शंकुन्नी की साहित्यिक प्रतिभा और मलयालम साहित्य में उनके योगदान का एक उत्कृष्ट उदाहरण है.

ऐथिह्यमाला केरल की किंवदंतियों को संरक्षित और प्रचारित करता है, जो लोगों की सामूहिक स्मृति और पहचान का हिस्सा है. यह केरल के इतिहास और संस्कृति के सामाजिक, धार्मिक और राजनीतिक पहलुओं को भी दर्शाता है. यह कला का एक नमूना है जो सभी

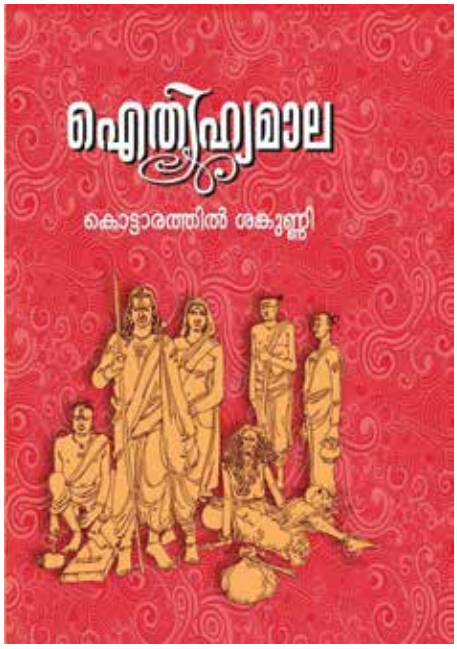

उम्र और पृष्ठभूमि के पाठकों को पसंद आता है. यह कोट्टाराथिल शंकुन्नी की रचनात्मकता और कौशल का प्रमाण है, जिन्होंने इन कहानियों को इकट्ठा करने और लिखने के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया.

केरल का हर बच्चा कडमट्टत्तु कत्तनार (कडमट्टम के पुजारी) और देसी रॉबिन हुड कायमकुलम कोच्चुन्नी (कायमकुलम के कोचुन्नी) के बारे में जानता है. बाद में इन कहानियों को टेलीविजन धारावाहिकों और व्यावसायिक फिल्मों में रूपांतरित किया गया.

हालांकि सबसे उल्लेखनीय है परायी पेट्टा पंथिरकुलम

परयी पेट्टा पंथिरुकुलम, केरल की एक लोकप्रिय लोककथा है. इस लोककथा के अनुसार, सम्राट विक्रमादित्य (57 ईसा पूर्व - 78 ईस्वी) के दरबार के नौ बुद्धिमान व्यक्तियों में से एक वररुचि ने निचली जाति पराया की लड़की पंचमी से विवाह किया था. दंपत्ति ने लंबी तीर्थयात्रा की. इस तीर्थ के दौरान उनके 12 बच्चे हुए. प्रत्येक प्रसव पर, वररुचि ने पूछा कि क्या बच्चे का मुँह है. यदि पत्नी 'हाँ' कहती, तो वह कहता, 'भगवान मुँह वाले को प्रसन्न करेगा' और पत्नी से बच्चे को वहीं छोड़कर आगे बढ़ने के लिए कहता. ग्यारह बच्चों को छोड़ दिया गया, क्योंकि उनके पास एक मुंह था. कहानी यह है कि 12वें जन्म के बाद, जब वररुचि ने पूछा कि क्या बच्चे के पास मुंह है, तो पत्नी ने कहा कि उसके पास मुंह नहीं है, इस उम्मीद में कि उसे कम से कम उस बच्चे को पालने का मौका मिलेगा. लेकिन इतना कहने के बाद जब उसने बच्चे की ओर देखा तो सचमुच बच्चा बिना मुंह के पैदा हुआ नजर आया. वररुचि ने 12वें बच्चे को एक पहाड़ी की चोटी पर देवता के रूप में प्रतिष्ठित किया और वे तीर्थयात्रा पर आगे बढ़े.

11 परित्यक्त बच्चों को समाज के विभिन्न वर्गों के 11 अलग-अलग परिवारों ने गोद लिया और उनका पालन-पोषण किया.

लोककथाओं में वर्णित पारिवारिक नाम और जाति संबद्धता वाले लोग, जिन्हें वररुचि के वंशज माना जाता है, केरल राज्य के पलक्कड़ जिले के शोरनूर, पट्टांबी और थ्रीथला में रहते हैं. उनकी जाति और सामाजिक ओहदे में भारी अंतर के बावजूद, ये परिवार पारंपरिक रूप से अनुष्ठानों और धार्मिक रीति-रिवाजों से बंधे हुए हैं

12 बच्चों में से उल्लेखनीय थे- पेरुन्तच्चन (बढ़ई / इंजीनियर), वायिल्लकुन्निलप्पन (बिना मुंह वाला पहाड़ी स्वामी), नारानत्तु भ्रांतन (असाधारण ज्ञान वाला एक पागल) आदि.

8 खंडों में लिखे इस पुस्तक के माध्यम से कोट्टारत्तिल शंकुन्नी, न केवल पाठकों के दिमाग पर कब्जा कर लेते हैं, बल्कि हमें और अधिक के लिए उत्सुक भी करता है.

19वीं सदी की शुरुआत में केरल के परिदृश्य और संस्कृति को समझने के लिए इसे अवश्य पढ़ें.

एम रोहित
क्षे.का., तिरुवनंतपुरम

दिनांक 21.09.2023 को नराकास (बैंक), विजयवाड़ा की अर्धवार्षिक बैठक के दौरान अंचल कार्यालय, विजयवाड़ा को वित्तीय वर्ष 2022-23 हेतु उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन का 'प्रथम पुरस्कार' श्री अनिर्बान कुमार बिश्वास, उप निदेशक, भारत सरकार, क्षे. का. का., बेंगलूरु (दक्षिण) से पुरस्कार प्राप्त करते हुए अंचल प्रमुख श्री नवनीत कुमार, उप अंचल प्रमुख श्रीमती शारदा मूर्ति एवं उप महाप्रबन्धक श्री एम श्रीधर.

नराकास, अमरावती द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए क्षे. का., अमरावती को 'प्रथम पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 25.08.2023 को श्री श्याम सुंदर नेमा, अध्यक्ष नराकास (संयुक्त आयकर आयुक्त) तथा श्री नितिन सावरिक सचिव, नराकास से पुरस्कार प्राप्त करते हुए क्षे. प्र., श्री अनूप तराले तथा प्रबंधक, (रा.भा.) श्री मुकेश पाटिल.

नराकास भोपाल, द्वारा वर्ष 2022-23 हेतु उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए अंचल कार्यालय भोपाल को 'द्वितीय पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 25.08.2023 को श्री हरीश चौहान, सहायक निदेशक कार्यान्वयन, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय भारत सरकार से अंचल प्रमुख श्री बिरजा प्रसाद दास पुरस्कार प्राप्त करते हुए. साथ है श्रीमती अमिता कुलकर्णी, मुख्य प्रबंधक एवं श्री अनुराग तिवारी, मुख्य प्रबंधक, श्री ऋषि प्रकाश, मुख्य प्रबंधक तथा व.प्र., (रा.भा.) सुश्री निधि सोनी.

नरकास (बैंक एवं बीमा), पटना की बैठक में वर्ष 2022-23 के लिए उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन हेतु क्षेत्रीय कार्यालय, पटना को 'प्रथम पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 31.08.2023 को नराकास अध्यक्ष, श्री संजीव दयाल से क्षे. प्र., श्री राजेश कुमार एवं प्रबंधक, राजभाषा, डॉ. विजय कुमार पाण्डेय पुरस्कार प्राप्त करते हुए. साथ हैं श्री सुमन कुमार, निदेशक, राजभाषा विभाग, बिहार सरकार, डॉ. सुनील कुमार, मुख्य महाप्रबंधक, नाबार्ड, पटना.

नराकास, नेल्लूर द्वारा वित्तीय वर्ष 2022-23 के लिए क्षे. का., नेल्लूर को 'प्रथम पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 25.08.2023 को अध्यक्ष श्री जोगाराव किल्लि से उप क्षे. प्र., श्री बी शिवा शंकर, श्री बी वेणुगोपाल तथा प्रबंधक, (रा.भा.) श्री जितेंद्र गुप्ता पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

नराकास, तिरुवनंतपुरम द्वारा क्षे. का., तिरुवनंतपुरम को श्रेष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन के लिए 'द्वितीय पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 25.07.2023 को आरबीआई क्षेत्रीय निदेशक, श्री थॉमस मेथ्यू तथा महाप्रबंधक, श्री एस प्रेमकुमार, केनरा बैंक से क्षे. प्र. श्री सुजित एस तारीवाल एवं व. प्र., (रा.भा.) सुश्री कला सी एस, पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

नराकास चंडीगढ़ द्वारा वर्ष 2022 -23 हेतु राजभाषा कार्यान्वयन के लिए क्षे. का. चंडीगढ़ को 'द्वितीय पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 27.08.2023 को नराकास अध्यक्ष, श्री कुमार पाल शर्मा से प्रबन्धक (रा.भा.), सुश्री नीतिका पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

नराकास तिरुपति द्वारा वर्ष 2022-23 हेतु उत्कृष्ट राजभाषा कार्यान्वयन के लिए क्षे. का., तिरुपति को 'द्वितीय पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 26.07.2023 को अध्यक्ष, नराकास एवं प्रधान आयकर आयुक्त, श्री दुर्गेश सम्राट से उप क्षे. प्र., श्री अभिमन्यु कुमार पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

दिनांक 04.08.2023 को नराकास फाजिल्का की बैठक में वर्ष 2022-23 हेतु नराकास अध्यक्ष श्री कुमार शैलेंद्र द्वारा फाजिल्का शाखा को राजभाषा शील्ड 'प्रोत्साहन पुरस्कार' तथा सहायक प्रबंधक, (रा.भा.) सुश्री रेणु बाला को विशेष सहयोग हेतु पुरस्कार प्रदान किया गया.

दिनांक 21.08.2023 को नराकास अनंतपुर की बैठक में नराकास अध्यक्ष श्री एम. लॉरेंस, उप निदेशक क्षे. का. का. (दक्षिण), श्री अर्निबान कुमार विश्वास द्वारा राजभाषा अधिकारी सुश्री किरण साव को वर्ष 2022-23 के दौरान उत्कृष्ठ राजभाषा कार्यान्वयन हेतु प्रशस्ति पत्र प्रदान किया गया.

नराकास, फ़रीदकोट द्वारा वर्ष 2022-23 हेतु राजभाषा कार्यान्वयन के लिए फ़रीदकोट शाखा को 'द्वितीय पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 02.08.2023 को नराकास अध्यक्ष श्री कुलबीर सिंह से सहायक प्रबन्धक, राजभाषा सुश्री रेणु बाला एवं लिपिक श्री गगनदीप ने प्राप्त करते हुए.

नराकास पटियाला द्वारा पटियाला शाखा को वर्ष 2021-22 हेतु राजभाषा शील्ड एवं वर्ष 2022-23 हेतु 'तृतीय पुरस्कार' प्रदान किया गया. दिनांक 22.08.2023 को श्री नरेंद्र सिंह मेहरा, सहायक निदेशक (कार्यान्वयन), गृह मंत्रालय से सहायक प्रबंधक (रा.भा.) सुश्री रेणु बाला पुरस्कार प्राप्त करते हुए.

दिनांक 29.08.2023 को नराकास, मुजफ्फरपुर द्वारा आयोजित बैठक में श्री निर्मल कुमार दूबे, उप निदेशक (रा.भा.), राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार, श्रीमती मऊ मैत्रा, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.), बैंक ऑफ इंडिया, प्रधान कार्यालय, मुंबई तथा श्री अजय कुमार अध्यक्ष, नराकास से मुजफ्फरपुर मुख्य शाखा के शाखा प्रमुख श्री अमन कुमार एवं श्रीमती प्रीति प्रिया, राजभाषा प्रभारी, क्षे. का., समस्तीपुर प्रमाण-पत्र प्राप्त करते हुए.

यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र, बेंगलूरु

अंचल कार्यालय, बेंगलूरु

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (दक्षिण)

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (पूर्व)

क्षेत्रीय कार्यालय, बेंगलूरु (उत्तर)

पुरस्कार प्राप्त राजभाषा अधिकारी

दिनांक 21.07.2023 को आयोजित नराकास बेंगलूरु की बैठक में वर्ष 2022-23 के लिए राजभाषा के श्रेष्ठ कार्यान्वयन हेतु यूनियन बैंक ज्ञान केंद्र, बेंगलूरु को 'प्रथम पुरस्कार', अंचल कार्यालय, बेंगलूरु को 'द्वितीय पुरस्कार', क्षे. का., बेंगलूरु (दक्षिण) को 'द्वितीय पुरस्कार', क्षे. का., बेंगलूरु (पूर्व) को 'तृतीय पुस्कार', क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर) को 'प्रोत्साहन पुरस्कार' प्रदान किया गया. श्री सत्यबान बेहेरा, उप अंचल प्रमुख, बेंगलूरु अंचल; श्री गुरुप्रसाद, उप क्षे. प्र., बेंगलूरु (दक्षिण); श्री गुलशन कुमार, उप क्षे. प्र., बेंगलूरु (पूर्व); श्री राजेंद्र कुमार, क्षे. प्र., बेंगलूरु (उत्तर). ने केनरा बैंक के एमडी एवं सीईओ एवं नराकास अध्यक्ष श्री के सत्यनारायण राजू एवं केनरा बैंक के कार्यपालक निदेशक श्री देवाशीष मुखर्जी तथा क्षे. का. का. (दक्षिण) के उप निदेशक श्री अर्निबान बिश्वास से अपने कार्यालय का पुरस्कार प्राप्त किया. साथ है मु. प्र., (रा.भा.) श्री कृष्ण कुमार यादव, श्री एंटोनी बारा, व. प्र., (रा.भा.), श्री राजेश के, व. प्र., (रा.भा.) श्री मनोरंजन सिंह, व. प्र., (रा.भा.) सुश्री रेणुका एस. सहा. प्र., (रा.भा.)

दिनांक 06.07.2023 को क्षे. का., अमरावती में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन उप क्षेत्र प्रमुख श्री प्रमोद ठाकुर द्वारा किया गया. साथ में श्री नितिन सावरीक (सचिव) नराकास, अमरावती तथा 22 स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 22.08.2023 को क्षे. का., बेंगलूरु (उत्तर) में क्षेत्र प्रमुख श्री राजेंद्र कुमार द्वारा हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन किया गया.

दिनांक 24.08.2023 एवं 25.08.2023 को स्टाफ महाविद्यालय, बेंगलूरु में आयोजित दो दिवसीय कंप्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ श्री दीपक नागर, प्रभारी, यूएलए, श्री कृष्ण कुमार यादव, मु. प्र. (राभा), श्री एंटोनी बारा, व. प्र. (राभा), श्री राजेश के, व. प्र. (राभा), सुश्री रेणुका एस, सहा. प्र. (राभा), श्री अमित साव, सहा. प्र. (राभा) तथा अन्य स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 24.08.2023 एवं 25.08.2023 को अंचल कार्यालय भोपाल में दो दिवसीय भौतिक कंप्यूटर आधारित हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ उप अंचल प्रमुख श्री नीरज सिंह द्वारा किया गया. साथ में श्री हरीश कुमार जैन, एस टी सी प्रमुख, सुश्री निधि सोनी वरिष्ठ प्रबंधक राभा, श्री अर्पित जैन प्रबंधक (राभा) एवं श्री शाहिद मंसूरी सहा. प्रबंधक (राभा) तथा अन्य प्रतिभागियों उपस्थित रहे.

दिनांक 01.09.2023 एवं 02.09.2023 को अं. ज्ञा. कें., हैदराबाद में कंप्यूटर आधारित दो दिवसीय हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ श्री देवकांत पवार, व. प्र., (रा.भा.), सुश्री स्नेहा साव, सहा. प्र. (रा.भा.), सुश्री श्रुति पाण्डेय, सहा. प्र. (रा.भा.), श्री साहेब राव कांबले, सहा. प्र. (रा.भा.), तथा संकाय सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 24.08. 2023 एवं 25.08.2023 को ज़ेडएलसी पवई में दो दिवसीय कम्प्युटर आधारित हिंदी कार्यशाला के प्रतिभागियों के साथ ज़ेडएलसी प्रभारी श्री नीलोत्पल बनर्जी और श्री सुधाकर खापेकर, मु.प्र. (रा.भा.).

दिनांक 07.08.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, तिरुवनंतपुरम में क्षे. प्र. श्री सुजित एस तारीवाळ द्वारा हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन किया गया. मंच पर हैं मुख्य अतिथि डॉ.सुधा ए एस, प्रोफसर, यूनिवर्सिटी कॉलेज, श्री एन सनल कुमार, उप क्षे. प्र. एवं श्री दासरि वेंकट रमण, उप क्षे. प्र. तथा व. प्र., (रा.भा.), सुश्री कला सी एस.

दिनांक 23.08.2023 को मुंबई अंचल के क्षेत्रीय कार्यालयों की संयुक्त हिंदी कार्यशाला का सहायक महाप्रबंधक (राभा), श्री रामजीत सिंह, ने मुख्य अतिथि के रूप में प्रतिभागियों का मार्गदर्शन किया, साथ में श्री नीलोत्पल बनर्जी, केंद्र प्रभारी, ज़ेड. एल. पी. पवई एवं श्री सुधाकर खापेकर मु. प्र. (राभा), श्री मो. जावेद अर्शद प्रबंधक (राभा) तथा अन्य सदस्य उपस्थित रहे.

दिनांक 05.09.2023 को क्षे. का., नई दिल्ली द्वारा आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन श्री देवनील पांडे, केंद्र प्रभारी (कॉर्पोरेट एवं ट्रेजरी), यूनियन लर्निंग अकदमी एवं श्री सतीश पाठक, मुख्य प्रबंधक द्वारा किया गया.

दिनांक 07.07.2023 को क्षे. का., आणंद में उप शाखा प्रमुखों हेतु आयोजित एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला में श्री भानु प्रताप सिंह एवं श्री रमेश बजरोलिया उप क्षे. प्र. प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए.

दिनांक 24.08.2023 को गाजीपुर क्षे. का. के अधीन आने वाली शाखाओं के स्टाफ सदस्यों हेतु हिंदी कार्यशाला का आयोजन किया गया.

दिनांक 22.08.2023 को क्षे. का., बेंगलुरु (दक्षिण) में आयोजित हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन करते हुए श्री असीम कुमार पाल, क्षे. प्र. साथ में उपस्थित हैं श्री गुरूप्रसाद, उप क्षे. प्र., मुख्य अतिथि सुश्री बेलोना मैथ्यू, वरिष्ठ प्रबंधक, यूको बैंक, अंचल कार्यलय एवं श्री राजेश के, व. प्र. (रा.भा.).

दिनांक 23.08.2023 को क्षे. का., पटना में आयोजित एकदिवसीय हिंदी कार्यशाला के उद्घाटन के अवसर पर उपस्थित प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए क्षे. प्र., श्री राजेश कुमार.

दिनांक 06.09.2023 को क्षेत्रीय कार्यालय, बड़ौदा में एक दिवसीय हिंदी कार्यशाला का उद्घाटन क्षेत्र प्रमुख श्री प्रशांत एम देसाई द्वारा किया गया.

दिनांक 31.07.2023 को मुंबई अंचल कार्यालय की अर्ध वार्षिक राजभाषा समीक्षा बैठक अंचल प्रमुख श्री योगेंद्र सिंह की अध्यक्षता में आयोजित की गई. साथ हैं उप अंचल प्रमुख सुश्री सौम्या श्रीधर, श्री सुधाकर खापेकर मुख्य प्रबंधक (रा.भा.) तथा अंचलाधीन क्षेत्रीय कार्यालयों के राजभाषा प्रभारी.

दिनांक 24.07.2023 को अंचल कार्यालय, हैदराबाद में आयोजित राजभाषा समीक्षा बैठक का उद्घाटन अंचल प्रमुख, श्री पी. कृष्णन द्वारा किया गया.

दिनांक 09.08.2023 को अंचल कार्यालय, लखनऊ में आयोजित अंचलीय राजभाषा समीक्षा बैठक का उद्घाटन उप अंचल प्रमुख, श्री संतोष कुमार शुक्ला द्वारा किया गया.

दिनांक 04.08.2023 को नराकास, पुणे की बैठक में श्रीमती सुस्मिता भट्टाचार्य उप निदेशक राजभाषा, राजभाषा कार्यान्वयन कार्यालय, गृह मंत्रालय, सुश्री अपर्णा जोगलेकर, अध्यक्ष नराकास एवं महा प्रबंधक बैंक ऑफ महाराष्ट्र, श्री मयंक भारद्वाज, उप अंचल प्रमुख, अंचल कार्यालय पुणे द्वारा अंचल कार्यालय पुणे की छमाही गृह पत्रिका 'यूनियन सहयाद्री' का विमोचन किया गया.

दिनांक 25.08.2023 को नराकास, नेल्लूर की बैठक में अध्यक्ष श्री जोगाराव किल्लि एवं सदस्य कार्यालयों के कार्यालय प्रमुखों के कर कमलों द्वारा क्षे. का., नेल्लूर की छमाही हिन्दी गृह पत्रिका 'यूनियन सप्तगिरी' का विमोचन किया गया.

दिनांक 11.07.2023 को अंचल कार्यालय, विजयवाड़ा की छमाही गृह पत्रिका 'यूनियन विजय' का विमोचन अंचल प्रमुख, श्री नवनीत कुमार, के कर कमलों द्वारा किया गया. इस अवसर पर श्री मुरली पार्थसारथी, उप अंचल प्रमुख, श्रीमती आर अनीता, सहा महाप्रबन्धक एवं श्री राजीव रंजन, सहा महाप्रबन्धक एवं सुश्री ए वी लक्ष्मी, प्रबंधक (राभा) उपस्थित रहे.

दिनांक 18.09.2023 को क्षे. का., एर्णाकुलम में हिंदी पखवाड़ा समारोह-2023 के शुभारंभ के अवसर पर "यूनियन रॉयल" पर संदर्भ साहित्य का विमोचन किया गया.

'यूनियन सृजन' जनवरी-मार्च 2023 अंक की प्रति प्राप्त हुई, तदर्थ धन्यवाद. पत्रिका में सभी रचनाएं प्रशंसनीय है विशेष तौर पर 'भारतीय समाज के विकास में राष्ट्रीयकृत बैंको का योगदान', 'प्रबंधन एक कला है', 'यात्रा सूजन: केरल - भगवान का अपना देश', 'बैंको में मानव संसाधन प्रबंधन', 'ऊर्जा संरक्षण (संशोधन) अधिनियम 2022: मुख्य विशेषताएं, अतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 2023 डिजिटल इनोवेशन एंड टेक्नोलॉजी फॉर जेंडर इक्वेलिटी आदि रचनाएं सारगर्भित एवं सराहनीय हैं.

पत्रिका की साज-सज्जा उत्तम है. कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है. पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मण्डल को हार्दिक बधाई. पत्रिका के निरंतर भविष्य हेतु शुभकामनाएं.

सादात हुसैन रिज़वी
कनिष्ठ हिंदी अनुवादक, कार्यालय महालेखाकार (लेखापरीक्षा-2), भोपाल

'यूनियन सृजन' पत्रिका का जनवरी-मार्च 2023 अंक अत्यंत ही ज्ञानवर्धक एवं सारगर्भित विषयों के साथ प्रस्तुत किया गया है. इसमें राजभाषा, बैंकिंग, महिला सशक्तिकरण, खेल आदि विभिन्न विषयों पर लिखे गए आलेख इसकी रोचकता को और बढ़ाने वाले हैं. यात्रा सृजन के द्वारा अत्यंत ही रोचक एवं जानकारी युक्त यात्रा वृतांत प्रस्तुत किया गया है, जो केरल के अनुपम सौंदर्य को आंखों के सामने प्रस्तुत करते हैं. समाज की आधी आबादी और शक्ति महिला शक्ति से संबंधित लेख और उनके समाज में उनके उत्तम कार्यों को प्रदर्शित करने वाली यह सृजन पत्रिका पाठक वर्ग को और भी पढ़ने के लिए प्रेरित करती है. इस शानदार अंक के लिए संपादक मंडल और आपकी सभी टीम को हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई. धन्यवाद!

राजीव रमन
राजभाषा अधिकारी, केनरा बैंक, क्षे. का., बेलगावी

'यूनियन सृजन' जनवरी-मार्च 2023 अंक निर्विवाद रूप से वर्तमान साहित्यिक परिकल्पनाओं का सर्वश्रेष्ठ संकलन है जोकि अति सराहनीय है. 'साहित्य' भाषागत विचारों की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम है. बैंकिंग क्षेत्र में भी भाषा का बहुत महत्व है चाहे वो क्षेत्रीय भाषा हो या फिर राजभाषा हिंदी. भाषा के द्वारा ही आम जन-मानस को बैंकिंग के आधारभूत ढांचे से जोड़ा जा सकता है. यह पत्रिका समाज के लगभग हर पहलू को संगृहीत किए हुए है जिसके लिए संपादन मंडल के समस्त सदस्य बधाई के पात्र हैं. आशा है कि इस पत्रिका रूपी धारा का निर्बाध प्रवाह इसी प्रकार बहता रहे.

सुशील कुमार
प्रबंधक (रा.भा.), पंजाब एण्ड सिंध बैंक,
आंचलिक कार्यालय, राजभाषा कक्ष, बठिंडा

'यूनियन सृजन' अप्रैल-जून 2023 अंक हमें प्राप्त हुआ. पत्रिका का मुखपृष्ठ बहुत ही आकर्षक है. विविध विषयों पर लेख ने इस पत्रिका में चार चाँद लगाया है. राजभाषा कार्यान्वयन में आयोजना एवं समीक्षा का महत्व लेख के माध्यम से यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की वार्षिक कार्ययोजना का सम्पूर्ण दर्शन हमें देखने को मिलता है. अर्थव्यवस्था में बैंक का योगदान लेख भारत की प्रगति में बैंको के अहम योगदान का सम्पूर्ण वर्णन दर्शाता है. गांव के जीवन शैली और रहन-सहन का जीवित वर्णन हमें "चौपाल" लेख में देखने मिला इसे पढ़कर ऐसा लगा जैसे क्यों न सेवानिवृत्ति के उपरांत गांव में ही बसा जाए !! रोगप्रतिरोधक क्षमता, योग इस लेख में स्वयं को इस आधुनिक जीवन में कैसे सुरक्षित रखें साथ ही दीर्घयु जीवन जीने की कला का मार्ग हमें दर्शाती है. विविध कविताओं को पढ़कर नई उमंग, उत्साह, जीवन का वास्तविक सत्य हमें देखने को मिलता है. हिमाचल के मनाली के चित्र को देखकर ही एक नए स्वर्ग की अनुभूति हुई. पत्रिका बहुत ही उत्कृष्ट है. सम्पूर्ण संपादक मण्डल को बहुत-बहुत बधाई एवं शुभकामनाएँ.

नितिन सावरीक
सचिव, नराकास, एवं उप-मंडल अभियंता (ओ. एल), बीएसएनएल अमरावती

यूनियन बैंक की हिन्दी गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का अप्रैल-जून 2023 अंक प्राप्त हुआ. बड़ा ही रोचक अंक है - साहित्य, कला, संस्कृति, पर्यटन, स्वास्थ्य, ज्ञान-विज्ञान - सभी का अनूठा और ज्ञानवर्धक संकलन. इस संकलन और प्रकाशन के लिए सम्पादक मंडल और अंक के लिए आलेख लिखने वाले सभी रचनाकारों को बहुत-बहुत बधाई. ऐसा अंक जिसमें लगभग सभी पाठकों को उनकी रुचि की सामग्री पढ़ने को मिल जाएगी. ऐसे उत्कृष्ट अंक के लिए सम्पादक मंडल को पुन: बधाई और आगामी अंकों के लिए शुभकामनाएं.

श्री के. पी. तिवारी
सेवानिवृत्त उप महाप्रबंधक, भारतीय रिज़र्व बैंक, मुम्बई

'यूनियन सृजन' का अप्रैल-जून 2023 का अंक आद्योपांत पढ़ा. इस पत्रिका में आपने सभी पठनीय विषय शामिल किए हैं. जहाँ काव्य-सृजन के माध्यम से कविताओं को प्रस्तुत किया है वहीं 'अंतिम स्मृति' कहानी के माध्यम से अपने पिता के व्यक्तित्व को याद किया गया. जहाँ यात्राओं के दौरान हुए विभिन्न अनुभवों को सबके साथ साझा किया गया वहीं 'कच्छ का रण उत्सव' के द्वारा गुजरात के सांस्कृतिक परिवेश को प्रस्तुत किया गया. बैंकिंग संबंधित महत्त्वपूर्ण जानकारियों को उपभोक्ता के दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया गया. यह एक नई विधा है जिसके माध्यम से बैंकिंग प्रणाली को सरलता से सीखा और समझा जा सकता है और इसका लाभ लिया जा सकता है. कई महत्त्वपूर्ण विषयों पर प्रकाश डाला गया जिसमें 'साइबर सुरक्षा ज़ोखिम प्रबंधन' के माध्यम से ऑनलाइन होनेवाली धोखाधड़ी से कैसे बचा जा सकता है? तथा 'ई-रूपी' के माध्यम से हुई डिजिटल क्रांति को प्रदर्शित किया गया, जिसका लोहा विदेश की कई वित्तीय संस्थाओं तथा वित्तीय नियामकों ने भी माना है.

साहित्यिक विषयों में जहाँ पुस्तक समीक्षा 'अश्वत्थामा की अमर मणि' के बारे में लेख प्रस्तुत किया गया वहीं कालजयी कवि रघुवीर सहाय पर साहित्यिक चिंतन प्रस्तुत किया गया. विशेष साक्षात्कार के माध्यम से श्री पवन कुमार वर्मा का मर्मस्पर्शी साक्षात्कार किया गया जहाँ उन्होंने बच्चों में पुस्तकें पढ़ने का संस्कार देने हेतु बच्चों तक अच्छी पुस्तकें पहुँचाने पर बल दिया.

यूनियन बैंक द्वारा आयोजित कार्यक्रमों की झलकियाँ देखकर अत्यंत हर्ष हुआ कि हिन्दी के प्रचार-प्रसार में कितना सक्रिय योगदान दिया जा रहा है. संपादक मंडल को एक सुंदर पत्रिका उपलब्ध कराने के लिए साधुवाद और बधाई तथा आगामी अंकों के लिए हार्दिक शुभकामनाएँ.

कपिल कुमार सरोज
वरिष्ठ परिवहन अधिकारी एवं नामित राजभाषा अधिकारी
संभार तंत्र विभाग, कैम्बे, गुजरात

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उप समिति द्वारा क्षेत्रीय कार्यालय, पटना का निरीक्षण- 15.07.2023

संसदीय राजभाषा समिति की तीसरी उपसमिती के संयोजक डॉ मनोज राजोरिया के कर कमलों से सफल निरीक्षण का प्रमाण पत्र प्राप्त करते हुए श्री निधु सक्सेना, कार्यपालक निदेशक, यूनियन बैंक ऑफ इंडिया. साथ हैं श्री लाल सिंह, मुख्य महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री राजेश कुमार, क्षेत्र प्रमुख, पटना, श्री बैजनाथ सिंह, अंचल प्रमुख, रांची, श्री अम्बरीष कुमार सिंह, उप महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री रामजीत सिंह, सहायक महाप्रबंधक (रा.भा.), श्री राजेश कुमार, प्रबंधक (रा.भा.) अं. का. रांची, श्री सुधीर श्याम, आर्थिक सलाहकार, वित्तीय सेवाएं विभाग, श्री सर्वेश कुमार मिश्र, सहायक निदेशक (राजभाषा) वित्त मंत्रालय तथा डॉ. विजय कुमार पांडेय, प्रबंधक (रा.भा.), क्षे. का. पटना.

संसदीय समिति के माननीय सदस्यों द्वारा यूनियन बैंक की गृह पत्रिका 'यूनियन सृजन' का विमोचन किया गया.

सुश्री कांता कर्दम, सदस्य, संसदीय राजभाषा समिति ने यूनियन बैंक ऑफ इंडिया की प्रदर्शनी स्टाल का वीक्षण किया.

RNI No. MAH HIN/2016/68433

नि:शुल्क वितरण हेतु

कार्तिकेयन के
केंद्रीय कार्यालय, मुंबई